Chapter-3

तृतीय अध्याय

हिन्दी के मंचीय काव्य और प्रदेश के विभिन्न अंचलों में संयोजित कवि सम्मेलनों के स्वरूप एवं प्रस्तुति का समीक्षात्मक अध्ययन

* प्रादेशिक प्रस्तुतियों की भिन्नता
* महाराष्ट्र में हिन्दी काव्य गोष्ठियाँ
* गीत चाँदनी
* टेपा सम्मेलन
* बैगलुरु में कवि सम्मेलन

तृतीय अध्याय

हिन्दी के मंचीय काव्य और प्रदेश के विभिन्न अंचलों में संयोजित कवि सम्मेलनों के स्वरूप एवं प्रस्तुति का समीक्षात्मक अध्ययन

हिन्दी में कवि संमेलनों से पहले अधिकतर काव्य गोष्ठियों का प्रचलन रहा है। इन काव्य गोष्ठियों का स्वरूप पूर्ववर्ती दरबारी काव्य गोष्ठियों के अनुरूप ही अग्रसर हुआ है। छोटी–बड़ी रियासतों के राजा का जमींदार या राज्याधिकारी लोग अपने–अपने अंचलों में इस प्रकार की काव्य गोष्ठियाँ संयोजित करते रहते थे। कुछ रजवाड़ों में विशिष्ट रजवाड़ी कवि राज्य के आश्रय में नियुक्त रहते थे जो उस राज्य की पहचान बन जाते थे। कच्छ नरेश, दतीया नरेश, बनारस नरेश, भरतपुर के महाराजा, गुजरात के गायकवाड, महाराष्ट्र के अनेक रजवाड़े, सौराष्ट्र के कच्छ भुज के महाराज दलपत सींग, उदयपुर के महाराणा, मराठा सरदार शिवाजी और इसी प्रकार हैदराबाद, केरला, नेकगाना तथा दक्षिण के अनेक प्रांतों में इस प्रकार के कवि दरबार आयोजित होते रहते थे।

हिन्दी में कवि दरबारों की यह परंपरा मुक्त रूप से संस्कृत साहित्य से अनुप्रेरित थी। संस्कृत में भी राजा–महाराजाओं के आश्रय में कवि दरबार आयोजित होते रहते थे। जिनमें समस्यापूर्ति काव्य, पठंत गोष्ठी, गायकी समारोह, पावस अथवा फाग–गोष्ठियाँ तथा

राजा महाराजाओं के जन्मदिवसों पर विशेष बधाई काव्य गोष्ठियाँ सम्पन्न होती थीं। महाकवि कालिदास, भास, भवभूति जैसे अनेक कवियों की काव्य संपदा इन दरबारों में ही मुखर हुई है।

मध्यकाल में ब्रजभाषा के सर्वाधिक कवियों का विवरण प्राप्त होता है। जिनकी ख्याति इन प्रांतीय कवि–गोष्ठियों के द्वारा ही मुखर हुई थी। आलम, बोधा देव, मतीराम, पद्माकर, तोष, गंग, रसखान, रहीम आदि वरिष्ठ कवियों की एक लंबी श्रृंखला इस संदर्भ में प्रस्तुत की जा सकती है।

विशेषकर ब्रजभाषा हिन्दी कविता की मुख्य भाषा बन चुकी थी अथवा काव्य की भाषा के रूप में ब्रजभाषा अपनी राष्ट्रीय पहचान बना चुकी थी। हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, कुरुक्षेत्र, पंजाब, उत्तरांचल, राजस्थान, मध्यप्रदेश और बिहार के विस्तृत भू–भाग में यह हिन्दी भाषी क्षेत्र ब्रजभाषा कविता के लिए अपने गलियारे खोल चुका था। इस हिन्दी कटिबंध प्रदेश से बढ़कर ब्रजभाषा कविता गुजरात, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, तेलंग प्रदेश, केरल, कन्नड़ आदि सुदूर प्रान्तों तक अपना वर्चस्व स्थापित कर चुकी थी।

प्रादेशिक प्रस्तुतियों की भिन्नता

वैसे तो ब्रजभाषा कविता की एकरूपता समग्र भारतवर्ष में स्थापित हो चुकी थी। किन्तु प्रांतीय भाषाओं के प्रभाव से ब्रजभाषा काव्य प्रस्तुति पर वहाँ की आंचलिक बोलियों का प्रभाव प्रकारोन्तर से पड़ता रहा है। जैसे गुजरात में कच्छ, भुज में संचालित ब्रजभाषा काव्य पाठशाला वहाँ के महाराजा लखपत सींग के द्वारा संचालित थी। जहाँ ब्रजभाषा काव्य सृजन का प्रशिक्षण छात्रों को दिया जाता था। वहाँ पींगल शास्त्र के अध्ययन के साथ अलंकार, रस छंद, भाषा गुण दोष आदि का भी विस्तृत ज्ञान कराया जाता था। यहाँ के प्रशिक्षित अनेक वरिष्ठ कवियों ने गुजरात में ब्रजभाषा काव्य की पताका फहराई और लगभग 200 वर्ष तक सौराष्ट्र की यह ब्रजभाषा काव्य पाठशाला सतत रूप से अग्रसरित होती रही है। यहाँ के कुलपति कुँवर, कुशल तथा कुलाधिपति आ कनक कुशल जैन आचार्य थे, जिन्होंने इस काव्य प्रशिक्षण पाठशाला का प्रारम्भ किया था।

ब्रजभाषा काव्य पाठशाला से शिक्षा प्राप्त कर सत्ताधीक कवियों ने संपूर्ण गुजरात प्रांत के गाँवों में ब्रजभाषा कविता का शंखनाद किया। जिसके परिणामस्वरूप गुजरात के गाँव गाँव में हिन्दी की काव्य गोष्ठियाँ आयोजित होती रहीं और उसका प्रभाव गुजरात के लोकप्रिय गरबा गीतों में भी समाविष्ट हो गया।

गुजरात के प्रसिद्ध गरबा गीत 'गोकुल आवो गिरधारी' में ब्रजभाषा के शुद्ध धनाक्षरी छंदों का प्रयोग हुआ है। जिसे यहाँ के चारण और भाट वर्ग के लोग आज भी शुद्ध

रूप से प्रस्तुत करते हैं। वैसे तो गुजरत में आयोजित गोष्ठियों में अधिकतर ब्रजभाषा काव्य की ही प्रस्तुति होती थी, किन्तु इन ब्रजभाषा काव्यों में उच्चारण के रूप में कहीं-कहीं गुजराती लहजा भी दिखाई देता था। तथा वर्तनी के रूप में ह्रस्व एवम् दीर्घ मात्राओं का संतुलन नहीं बन पाता था। हिन्दी भाषी श्रोताओं को यह उच्चारण अशुद्धी खलती थी। किन्तु गुजरात अंचल में आयोजित काव्य गोष्ठियों में मुख्य आकर्षण का केन्द्र कोई एक विशिष्ट कवि रहता था। जिसकी रचनाएं विस्तार से प्रस्तुत होती थीं, अन्य कवि एक या दो रचनाएं ही सुनाकर उस मुख्य कवि को पुष्ट करते थे। गुजरात के इस प्रकार के मुख्य कवियों में अखा, नरसिंह महेता, दयाराम, गोविन्द गिल्ला भाई, सुंदरम्, आदि विशेष उल्लेखनीय हैं जिन्होंने काव्य गोष्ठियों में अपना एकाधिकार वर्चस्व स्थापित किया था।

इस प्रकार गुजरात में मध्य काल से ही हिन्दी काव्य गोष्ठियों का प्रचलन अग्रसरित होता रहा है जो आज भी यत्र-तत्र देखा जा सकता है। आज गुजरात की अनेक साहित्यिक संस्थाएँ इस प्रकार की गोष्ठियों का संचालन कर रहे हैं।

साहित्य परिषद्, हिन्दी प्रचारिणी सभा, गुजरात युगी, साहित्य परिषद्, भावनगर राष्ट्र भाषा परिषद्।

महाराष्ट्र में हिन्दी काव्य गोष्ठियाँ

महाराष्ट्र का मुख्य सांस्कृतिक एवं साहित्यिक केन्द्र मुम्बई ही रहा है। यहीं आसपास के अंचलों के एवं गाँवों के साहित्य रसिक लोग मुम्बई में ही आकर इस प्रकार के संमेलनों एवं गोष्ठियों का आनंद लेते रहे हैं। नाथ पंथियों एवं सिद्धों संतों के द्वारा समग्र महाराष्ट्र में हिन्दी काव्य के माध्यम से भक्ति-धारा को प्रवाहित किया गया। मुम्बई से लेकर पूना तक अधिकांश हिन्दी की काव्य गोष्ठियाँ जगह-जगह आयोजित होती रही थीं। यहाँ काव्य गोष्ठियों के अतिरिक्त कवि-संमेलनों का प्रचलन अधिक रहा है। यहाँ बड़े-बड़े कक्षों में महाराष्ट्र के स्थापित कवि वृहद् श्रोता समुदाय के आगे काव्य पठन करते रहे हैं।

गीत चाँदनी 2009

तरुण समाज (जयपुर) ने अपनी स्थापना के साथ ही हर साल दो कवि सम्मेलन आयोजित करने का संकल्प किया। शरदोत्सव पर प्रतिवर्ष 'गीत चांदनी' तथा मदनोत्सव पर 'महामूर्ख सम्मेलन' का। विगत 39 वर्ष से यह परम्परा निर्बाध रूप से चल रही है। जिस निष्ठा से तरुण समाज इसे आयोजित करता है कवि और श्रोता भी हमेशा उसे मान देते रहे हैं।

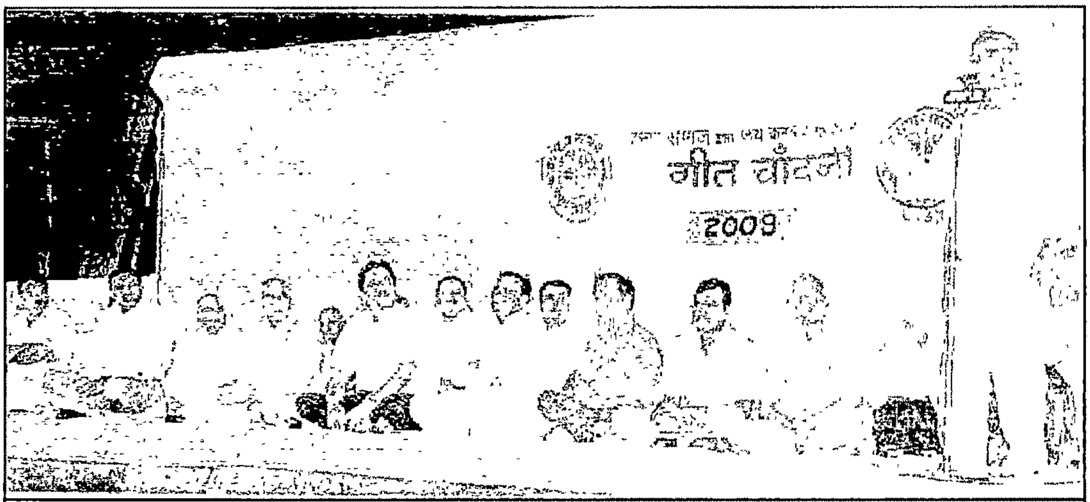

गीत चांदनी 2009 में गीतकारों का परिचय देते संयोजक विश्वंभर मोदी

गीत चांदनी का आयोजन प्रतिवर्ष शरद पूर्णिमा के समीपस्थ शनिवार को गुलाबी नगर जयपुर में होता है। हिन्दी कवि सम्मेलनों के सभी नामी गिरामी गीतकार इसमें अपने गीतों का पाठ कर चुके हैं। यह आयोजन हमारी साहित्यिक एवं सांस्कृतिक धरोहर को जीवित रखने के निमित्त होता है अतः खास स्तर के श्रोताओं के लिए बहुत ही खास है। यही वजह है कि यह आयोजन पिछले 39 वर्ष से जन-जन को सुख और उल्लास से तृप्त करता आ रहा है। गुलाबी नगर के इस पारम्परिक आयोजन की सुरुचि श्रोता व्याकुलता से प्रतीक्षा करते है।

'गीत चांदनी' का पहला आयोजन किशनपोल बाजार के महावीर पार्क में 1971 में हुआ। फिर रामलीला मैदान में 18 वर्ष की पूर्ण यौवन की अपनी उपस्थिति अंकित कर अब 1990 से यह जय क्लब लॉन पर आयोजित किया जा रहा है। इसमें न केवल जयपुर अपितु राजस्थान के प्रत्येक भाग से आए रसिक श्रोताओं का जमावडा रहता है। इस कार्यक्रम में हिन्दी, उर्दू, राजस्थानी भाषा के भव्य प्रतिष्ठित कवि शायर अपने गीतों की मंचीय प्रस्तुति के रस माधुर्य से चांदनी रात में मिठास घोलते रहे है। 'गीत चांदनी' में गीतों का पाठ करने वाले कुछ उल्लेखनीय नामों से स्व. कपूरचन्द 'कुलिस', स्व. वीरेन्द्र मिश्र, स्व. रमानाथ अवस्थी, स्व. शिशुपाल सिंह 'निर्धन', बालकवि बैरागी, सोम ठाकुर, गोपाल दास 'नीरज', आत्म प्रकाश शुक्ल, मायागोविन्द, रविन्द्र 'भ्रमर', ईंदिरा गौड़, निर्मला जोशी, स्नेहलता 'स्नेह', डॉ. सुचरानी शर्मा, स्व. इंदिरा 'इंदु', प्रभा ठाकुर, पुष्पा 'राही', बालस्वरूप 'राही', बशीर अहमद 'भयूख', किशन सरोज शतदल, स्व. उर्मिलेश, रवीन्द्र जैन, चन्द्रसेन विराट, महेश, अनघ, शिवकुमार 'अर्चन', कुंअर 'बैचैन', विश्वेश्वर शर्मा, धर्मजीत सरल, जगदीश सोलंकी, बेकल

'उत्साही', सागर आजमी, डॉ. ताराप्रकाश जोशी, हरी राम आचार्य, राजेश रेड्डी, डॉ. पदमाकर, डॉ. कीर्तिकाले, बरखारानी, अंजुम 'रहबर', कुँअर जावेद, मेजर भूपति अख़्तर कादम्बरी, डॉ. इशाक अश्क, रघुराज सिंह हाड़ा, दुर्गादान सिंह गौड़, अज़ीज़ आज़ाद सिधकी, डॉ. कैलाश मण्डेला, भागीरथ सिंह 'भाग्य' आदि ने अपनी उपस्थिति अंकित कराकर इसके नाम की सार्थकता सिद्ध की है।

SMT. HANSA MEHTA LIBRARY M.S. University of Baroda

'गीत चांदनी' में प्राथमिकता यह रखी गई कि कविगण सस्वर पाठ करें ताकि गीत के मर्म के साथ-साथ साहित्य एवं छंदशास्त्र की विरासत को भी शाश्वत बनाये रखा जा सके। अनेकों बार ऐसे अवसर आये कि आमंत्रण के पश्चात्, नाम मुदित होने के बाद सस्वर पाठ न करने की सूचना प्राप्त होने पर ससम्मान उन्हें न आने का निवेदन कर दिया गया। उन कवि बन्धुओं ने भी उदारतापूर्वक गीत चांदनी के अनरूप ही तथ्य स्वीकारते हुए इसमें अपनी उपस्थिति अंकित नहीं कराई।

इस गीत चांदनी का संचालन गोपाल दास 'नीरज', स्व. उर्मिलेश, डॉ.पद्माकर, स्व. रमेश गुप्ता 'चातक', दिनेश सिदल ने किया है। अब चातकजी के देहावसान के बाद सुरेन्द्र दुबे इसका संचालन सफलतापूर्वक कर रहे हैं। संचालक के उत्तरादियत्व में श्रोताओं और कवियों के भावों का तारतम्य बिठाये रखना गीत चांदनी की विशेषता रही है। नीरज जी ने इसका संचालन दो बार अपनी इच्छा व्यक्तकर स्वंय ने किया।

इस गीत चांदनी के हजारों श्रोता ऐसे हैं जो 39 वर्ष से निरन्तर इसको सुनने का लोभसंवरण नहीं कर पाये है। यहाँ यह भी उल्ललेखनीय होगा कि श्रोता कवियों को टोकते हुए उनके द्वारा पूर्व में पढ़ी गई उनकी मूल पंक्ति का स्मरण करा देते हैं। इस समय टीवी संस्कृति के कारण 30-35 हजार श्रोता की संख्या वाले इस कार्यक्रम की उपस्थिति अब 3-4 हजार मात्र पर सिमट कर रह गई है। 'गीत चांदनी' का मूल उद्देश्य यह रहा है कि जनसाधारण घर से निकलकर सारी रात एक साथ बैठकर जाति, धर्म, लिंग, भेद को भुलाकर साहित्यिक गीतों का रसास्वादन करे।

अनेक गीतकारों ने स्वयं इस कार्यक्रम में आकर काव्यपाठ करने की अपनी इच्छा व्यक्त की और सम्मानजनक मानदेय पर उन्हें सादर आमंत्रित भी किया गया। तरुण समाज इस गीत यात्रा को अनवरत चलाते रहने का सफल प्रयास करता रहा है और करता रहेगा तथा जन साधारण को उल्लास के सागर में डुबकी लगाने का अवसर देता रहेगा।

''पिछले तीन दशकों से हास्य कवि सम्मेलनों की लोकप्रियता आकाश छू रही है। कवि सम्मेलन के नाम पर हास्य कवि सम्मेलन का होना आम बात है। दुनिया भर में इसका बोलबाला है। यो तो आए दिन कहीं न कहीं हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन

होता रहता है लेकिन राजस्थान की राजधानी जयपुर में होली के अवसर पर तरुण समाज द्वारा 'महामूर्ख सम्मेलन' के नाम से आयोजित दुनिया के सबसे बड़े हास्य महोत्सव की बात ही कुछ और है।

इस हास्य महोत्सव की अनेक विशेषताएँ है। श्रोताओं की संख्या के आधार बनाएँ तो यह दुनिया का सबसे बड़ा हास्य कवि सम्मेलन हैं। इसे सुनने के लिए दूर-दूर से आयोजक एवं श्रोता आते हैं। कई प्रवासी राजस्थानी तो होली के अवसर पर भारत आने का कार्यक्रम ही 'महामूर्ख सम्मेलन' की तिथि को ध्यान में रखकर बनाते है। इस कवि सम्मेलन में हास्य कवियों की नई और पुरानी पीढ़ी का संगम होता है। पुरानी पीढ़ी के कवियों को यहाँ काव्य पाठ करके प्रतिष्ठा मिलती है तो नई पीढ़ी के कवियों को पहचान। यही वह इकलौता कवि सम्मेलन हैं जिसमें पाठ की जाने वाली अधिकांशतः कविताएँ नई होती हैं। घिसी-पिटी हास्य कविताओं से ऊब चुके श्रोताओं के लिए यह कार्यक्रम ताजी हवा के झौंके जैसा है। महामूर्ख सम्मेलन में अब तक काव्य-पाठ कर चुके कवियों की पुनरावृत्ति पर नजर डालें तो यह बात साबित भी हो जाती है कि इस, कवि सम्मेलन में वे ही कवि अपना रंग जमा सके हैं जिनमें हास्य की नई रचनाएँ सुनाने में सक्षम हैं।

'महामूर्ख सम्मेलन' मुख्यतः एक हास्य कवि सम्मेलन है जो कवि सम्मेलन के पारम्परिक स्वरूप में ही श्रोताओं के समक्ष आयोजित एवं प्रस्तुत होता है। कई बार इसमें मिमिक्री व चुटकुलों के जरिये हास्य का सृजन करने वाले बड़े कलाकारों को भी आमंत्रित किया गया। वे आए भी उन्होंने अपनी बेहतरीन प्रस्तुतियाँ भी दी। लेकिन हास्य कवियों की मौलिक हास्य रचनाओं के सामने वे श्रोताओं के हृदय अपनी स्थाई पहचान नहीं बना सके। ऐसे में चुटकुलों और मिमिक्री की तुलना में हास्य कवियों की अस्मिता को स्थापित करने वाला यह अकेला हास्य कवि सम्मेलन है। हास्य कवियों की मौलिकता के महत्व की स्थापना शायद ही किसी दूसरे हास्य कवि सम्मेलन ने की हो।

जयपुर प्रोफाईल में इस कार्यक्रम का जिक्र है। इससे पता चलता है कि जयपुर शहर जिन विलक्षणताओं की वजह से दुनिया में अपनी विशिष्ट पहचान रखता हैं, उनमें प्रतिवर्ष होली के उपलक्ष्य में तरुण समाज द्वारा आयोजित 'महामुर्ख सम्मेलन' भी एक है। एक शहर के जीवन में किसी कवि सम्मेलन का इतना महत्वपूर्ण हो जाना कवि सम्मेलन विधा के लिए सचमुच गर्व का विषय है।

इस कार्यक्रम की सबसे बड़ी विशेषता है कार्यक्रम के संयोजक विश्वम्भर मोदी की संयोजकीय निष्ठा। वे साल भर नए प्रतिभाशाली हास्य कवियों के बारे में अपने सूत्रों से

जानकारी लेते रहते हैं। वे समय के पाबन्द है तथा ठीक समय पर कार्यक्रम शुरु कर देते हैं। उनके लिए उस एक श्रोता के समय का महत्व अधिक है जो समय पर कार्यक्रम को सुनने के लिए पहुँचा है। कवियों और आयोजकों द्वारा विलम्ब करने पर उन्हें आग बबूला होते देखा जा सकता है। उनकी यही भावना रहती है कि कार्यक्रम सही समय पर शुरू हो। जहाँ तक सम्भव हो कवि नई हास्य रचनाओं का पाठ करें। कार्यक्रम व्यवस्थित रूप से चले तथा कवि सम्मेलन में उपस्थित श्रोता एवं कवि खुद अपनी उपस्थिति की गरिमा को समझें तथा आयोजन के दौरान किसी भी प्रकार की कोई प्रिय घटना न हो। स्थानीय प्रशासन के साथ उनका तालमेल भी गजब का है।

वे, कवियों के महत्व को स्वीकार करते है। स्वयं उन्हें बहुत मान देते हैं तथा शहर स्थापना भी करते हैं। लेकिन वे ऐसा भी नहीं होने देते कि किसी बड़े कवि की वक्र दृष्टि इस कवि सम्मेलन की अस्मिता के साथ छेड़छाड़ कर सके। तरुण समाज तथा मोदी जी ककी इस हास्य महोत्सव को लेकर अलग तरह की आस्थाएँ है जो उनके निर्णयों में व्यक्त होती रहती है।

इस कवि सम्मेलन के लिए प्रायोजक की भी कमी नहीं है। बड़ी–बड़ी कम्पनियाँ अपने प्रचार के लिए इस कवि सम्मेलन को प्रयोजित करने के लिए लालायित रहती हैं लेकिन वे किसी भी प्रायोजन को स्वीकार नहीं करते, यह सोचकर कि जयपुर की जनता को लगना चाहिए कि यह उनका अपना आयोजन है। किसी कम्पनी का केबल टीवी या अन्य टीवी चेनल्स पर भी वे इस कार्यक्रम के प्रसारण की अनुमति नहीं देते। इसके बारे में उनका यह तर्क भी काबिल–ए–गौर है वैसे ही लोगों का घरों से निकलना कम हो गया है, ऐसे में अगर उन्हें घर बैठे यह कार्यक्रम सुनने को मिल जाएगा तो वे घर से निकलना बन्द ही कर देंगे। इससे आम आदमी के सामाजिक सरोकारों में कभी आएगी। इस कवि सम्मेलन का एक उद्देश्य लोगों के सामाजिक सरोकारों को बढ़ाते हुए सामूहिकता के आनन्द की अस्मिता को बचाना भी है। यही वह वजह है कि बड़े–बड़े राजनेता तथा फिल्म स्टार भी इस कवि सम्मेलन का हिस्सा बनने की इच्छा व्यक्त करते रहते हैं। इस प्रकार यह हास्य–महोत्सव तरह–तरह से कवि सम्मेलन विधा के लिए आत्मगौरव के कारणों का सृजन करता है। ऐसे कार्यक्रम दुनिया के सभी भागों में होने चाहिए ताकि हिन्दी भाषा के नाम पर आयोजित होने वाले महोत्सवों की संख्या बढ़ सके।[1]

टेपा सम्मेलन :-

खंडवा में माँ नवचंडी धाम पर शिवरात्री के उपलक्ष में कवि सम्मेलन का आयोजन

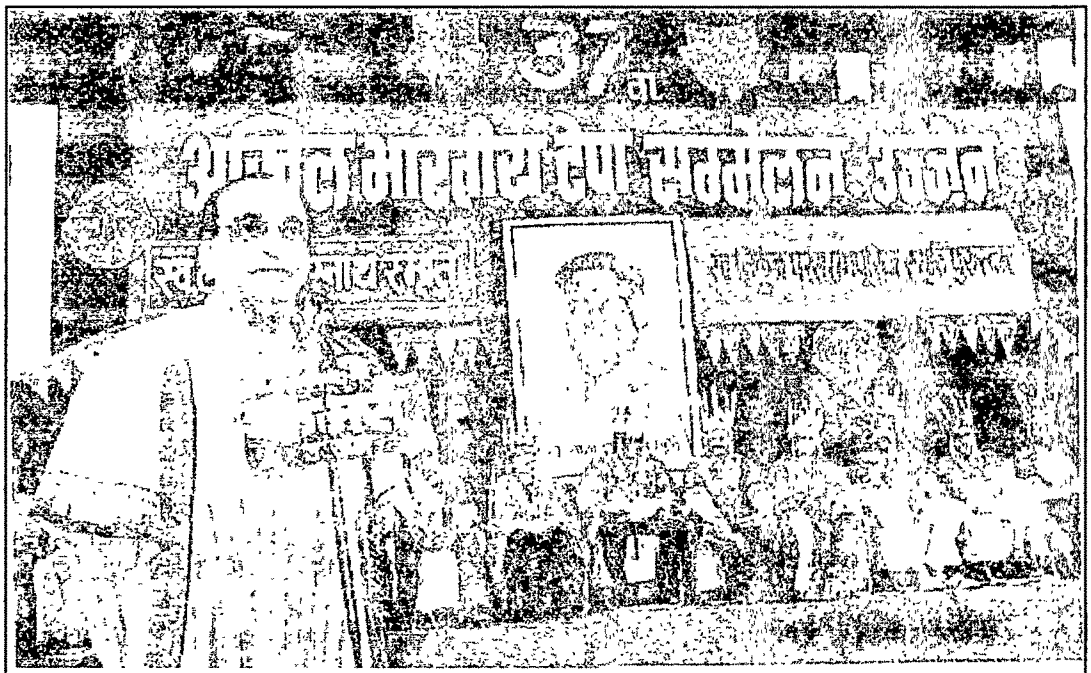
टेपा सम्मेलन के संचालक प्रसिद्ध शिक्षाविद् एवं व्यंग्यकार डॉ शिव शर्मा वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए

किया गया। जिसमें मंचासीन कवियों ने अपने काव्य पाठ से न केवल श्रोताओं को आनंदित किया बल्कि सोचने पर भी मजबूर कर दिया। प्रसिद्ध कवियित्री डॉ. कीर्ति काले दिल्ली द्वारा प्रस्तुत सरस्वती वंदन के पश्चात् युवा गीतकार कुमार सम्भव (खरगौन) ने कवि सम्मेलन को सार्थक शुरुआत देते हुए कहा–

हाथ–हथियार देके
तीर–तलवार देके
राजधानी कहती है
वार मत करना
नीतियों को बेचते हैं
मठाधीश देश के ये
कहते हैं सरहदों को
पार मत करना
इस तरह दोगले हैं
उस तरह खोखले हैं
इनकी किसी बात पर
विचार मत करना

सीमाओं से लौटकर न
आ जाऊँ जब तक
सजनी तुम अपना
श्रृंगार मत करना

श्रोताओं ने कुमार सम्भव की पंक्तियों को कई बार तालियों की गड़गड़ाहट से नवाजा। उन्हें खूब पसन्द किया गया। अख्तर हिन्दुस्तानी (मुम्बई) ने अपने काव्य पाठ से श्रोताओं का मनोरंजन किया।

युवा कवि वैभव गुप्त 'विश्वास' (पूना) ने हास्य-व्यंग्य और श्रृंगार की फूल फूलझड़ियाँ छोडी। एक रचना में उन्होंने कहा –

पीर को जीवन के छंदों में
सजाना चाहता हूँ
इन छलकते आंसुओं पर
मुस्कराना चाहता हूँ
सुन रखा इस जहाँ में
आँधियाँ है हर तरफ
मैं दिया हूँ अपनी लौ को
आजमाना चाहता हूँ

श्रृंगार के प्रसिद्ध गीतकार देवल 'आशीष' (लखनऊ) ने अपनी प्रतिष्ठा के अनुरूप नेक छंदों और गीतों का पाठ किया। उनके गीतों को खूब पसन्द किया गया। उन्होंने कहा–

प्रिये! तुम्हारी छवी को मैंने
अक्सर ऐसे चूम लिया
तुम पर गीत लिखा फिर उसका
अक्षर-अक्षर चुम लिया

राधा और कृष्ण पर हिन्दी के उत्कृष्ठ छंदों का पाठ करते हुए उन्होंने श्रोताओं की खूब दाद पाई तथा कवि सम्मेलन को ऊंचाई प्रदान की। एक छंद में उन्होंने कहा–

राधा ने त्याग का पन्थ बुहारा तो
पन्थ पे फूल बिछा गया कान्हा

राधा ने प्रेम की आन निभाई तो
आज का भान बढ़ा गया कान्हा
कान्हा के तेज को भा गई राधा तो
राधा के रूप को भा गया कान्हा
कान्हा को कान्हा, बना गई राधा तो
राधा को राधा बना गया कान्हा।

प्रसिद्ध कवियित्री डॉ. कीर्ति काले (दिल्ली) ने बेहतरीन छंदो, मुक्तकों और गीतों का पाठ किया उनकी स्तरीय रचनाओं पर श्रोताओं ने जमकर दाद दी। उन्होंने कहा–

तुम्हारी आँख में शायद
सभी सपने सुहाने हैं
हमारी याद में भी तो
अभी गुजरे जमाने हैं
पता है मेरे गीतों की
किताबें क्यों महकती हैं
हमारे दिल के तहखाने में
खुशबु के खजाने हैं

उनके हर मुक्तक को श्रोताओं में जमकर दाद दी। जब उन्होंने अपना प्रसिद्ध गीत शायद ऐसा ही होता है पहले–पहले प्यार में का पाठ किया तो श्रोता झूम–झूमकर तालियाँ बजाने लगे। इस गीत में उन्होंने कहा–

भंग–चढ़ाकर बौराया बादल डोले
नदिया में दो पाँव हिले हौले–हौले
हिचकोले खाती है नैया मस्ती से मसधार में
शायद ऐसा ही होता है पहले–पहले प्यार में

प्रसिद्ध गीतकार दर्द शुजालपुरी (खरगोन) ने अपने प्रसिद्ध गीत का पाठ करके श्रोताओं का मन जीत लीया। उन्होंने कहा–

जलाकर द्वार पर दीपक
कोई बैठा है जना है

मुझे मत रोकिए
मुझको मेरा वादा निभाना है
हर इक आहट पर
वो सोचती होगी की
मैं आया
वो अपने आप से
ये बोलती होगी की
मैं आया
प्रिय के द्वार पर जाकर
मुझे साँकल बजाना है

विश्वविख्यात हास्य कवि सुरेन्द्र दूबे (जयपुर) ज्यों ही, माइक पर आए, पंडाल में हर ओर से ठहाके गूंजने लगे। अपने सवा घंटे के काव्य पाठ में उन्होंने श्रोताओं को हँसा-हँसा कर लोटपोट कर दिया। उनकी मौलिक, चुटीली और नुकीली शैली की हास्य-व्यंग्य कविताओं का जादू इस कदर चला कि श्रोता उन्हें लम्बे समय तक याद रखेंगे। उन्होंने गठबंधन सरकारों की निरर्थकता को व्यक्त करते हुए कहा -

गठबंधन की आड़ में
ठगबंधन का राज
सबने मिलकर लूट ली
लोकतंत्र की लाज
रखा खाज पर ताज
अशुद्धि रही मंत्र में
घुसा वायरस घोर
महारे लोकतंत्र में

उन्होंने नए-नए विषयों पर नई-नई हास्य कविताएँ सुनाई। उनके द्वारा प्रस्तुत एक रचना 'डॉक्टर्स की हैंड राइटिग' में व्यंग्य की बानगी देखिए-

डॉक्टर की हैंड राइटिंग
पढ़ने के चक्कर में मुझे चक्कर आ गए
मैं वहीं बैठ गया

तंद्रा जब निद्रा में बदली
तो सपना आया, सपने में मैंने
शेक्सपीयर को अपने पास खड़ा पाया
मैंने कहा–शेक्सयीपयरजी !
आप इतने बड़े विद्वान
पढ़कर बताओ डॉक्टर साहब ने
इस पर्ची में क्या लिखा है?
शेक्सपीयर ने
डॉकटर की लिखी
पर्ची को ध्यान से देखा
फिर मुझसे पूछा–
यह किस भाषा में है?
मैंने कहा– अंग्रेजी में है
मेरे उत्तर ने शेक्सपीयर का
आत्मविश्वास इतना क्षीण किया
उसने मरणोपरान्त सुसाईट कर लिया

कवि सम्मेलन का सफल और सार्थक संचालन सुरेन्द्र दुबे (जयपुर) ने किया। इससे पूर्व महंत बाबा गंगाराम ने कयियों का माल्यार्पण कर स्वागत किया। उन्हें कवि अनुराग बंसल 'हरसूदी' ने अपनी कृति गोचालीसा स्त्रोत भैंट की। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में विधायक देवेन्द्र वर्मा उपस्थित थे तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में निगमाध्यक्ष अमर यादव नेता प्रतिपक्ष रमेश सुनगत प्रमोद पार्षय दीना पवार, मीना वर्मा, सांभाग सांउ सहित अनेक गणमान्य लोग मौजूद थे। कार्यक्रम कवियों के स्तरीय काव्य पाठ एवं गरिमापूर्ण संचालन के कारण उल्लेखनीय बन गया।[2]

हरदोई में खूब जमा कवि सम्मेलन

हरदोई (उ.प्र.) में रामलीला मेला एवं प्रदर्शन कमेटी द्वारा कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें अपने काव्य पाठ से कनियों ने खूब रस बरसाया। रश्मि शाक्य की सरस्वती वंदना से आरम्भ हुए इस कवि सम्मेलन में हास्य कवि बलवंत 'बल्लू' (ऋषभदेव) ने अच्छी शुरुआत दी। उन्होंने श्रोताओं के खूब हंसाया। बाद में

गम्भीर तेवर में कन्या भ्रूण हत्या के मुद्दे को उन्होंने कुछ इस प्रकार उठाया–

21 वीं सदी में जाओगे तो प्यार
किसी रोबोट से कर पाओगे
राखी किसी मशीन से बँधवाओगे
माँ की ममता क्या बाजार से खरीद लाओगे?

ओजस्वी गीतकार अशोक चारण (केकड़ी) का तेवर कुछ इस प्रकार था–

गाँधी को भी करो मरो का
वाक्य बोलना ही होगा
वीर शिवा को मुगलों वाला
अहम् तोलना ही होगा
महादेव तुम कहो रुद्र से
पापयज्ञ का नाश करे
समर भवानी सिंह चढ़े और
दैत्य दलों का हास करे

नवोदित शायरा रूपसार (बलरामपुर) ने कहा –

तहजीबे वतन तुझको
बिखरने नहीं दूँगी
मैं सूर से दुपट्टे को
उतरने नहीं दूँगी
जब तक के वो घर
लौटके आ जाता नहीं है
मैं नहा के भी खुद को
सँवरने न दूँगी

ओजस्वी कवि सौरभ 'सुमन' (मेरठ) का कहना था–

वन्दे मातरम् नहीं विषय
है विवाद का
मजहबी द्वेष का ना

ओछे उन्माद का

कवियित्रि गरिमा पाण्डेय ने जीवन की परिभाषा देते हुए कहा –

किसी के दर्द को मिलकर
बँटा लेना ही जीवन है
किसी पर प्रेम के मोती
लुटा देना ही जीवन है

नवोदित कवयित्री रश्मि शाक्य (गाजीपुर) को श्रोताओं ने खूब दाद दी। उन्होंने फागुन में होली की मस्ती का शब्द चित्र कुछ इस प्रकार खींचा–

किसने फेंका जाल सुनहरा
यौवन पर हे लाज का पहरा
नैन गोरी के हो गए नशीले
रंगीले फागुन में

गीतकार चंदन राय (लखनऊ) के गीतों को खूब पसन्द किया गया। अपने एक मुक्तक में उन्होंने कहा–

इस तरीके से दिया हमने
पूरी दुनिया डुबो दिया हमने
तेज इतना उसे पुकारा कि–
अपनी आजवा खो दिया हमने

हास्य कवि डॉ. अनिल 'चौबे' (बनारस) ने अपने छंदों से खूब ठहाके लगवाए। उनके छन्द की बानगी देखिए–

एक छोटे मच्छर ने
मच्छर दादा से कहा–
अपने समय का
अनुभव बाँटते रहो
मच्छरों का दादा बोला–
तब और अब बीच
फैशन की खाई है

उसी को पाटते रहो
नारियाँ तो साड़ियाँ
पहनती थी उस वक्त
दिखता था मुंह
भन्न-भन्न चाटते रहो
तेरे युग में तो पुरी
देह दिखती है प्यारे
जहाँ-जहाँ मन करें
वही काटते रहो

कवि सम्मेलन का सफल और रोचक संचालन कर रहे प्रसिद्ध हास्य कवि एवं व्यंग्यकार सुरेन्द्र दुबे (जयपुर) ने अपने काव्य पाठ के दौरान हास्य रस कुछ इस प्रकार बरसा कि श्रोता हंसते-हंसते लोटपोट हो गए। अपने काव्य पाठ के बीच-बीच में गम्भीर पंक्तियों का पाठ करके उन्होंने कवि सम्मेलन को एसी गरिमा प्रदान की कि श्रोता उसे लम्बे समय तक याद रखेंगे। 'मेरा भारत महान' शीर्षक से प्रस्तुत की गई अपनी रचना में उन्होंने खूब ठहाके लगवाए। उन्होंने कहा-

अरे विदेशी !
संसार को तो
सर्जरी का कान्सेप्ट ही
इन्डिया ने दिया था
तू ही बता
गणेश जी का आपरेशन
क्या तेरे बाप ने किया था

प्रसिद्ध ओजस्वी गीतकार वेदव्रत वाजपेयी द्वारा संयोजित एवं हास्य-व्यंग्यकार सुरेन्द्र दुबे (जयपुर) द्वारा संचालित यह कवि सम्मेलन एक यादगार कवि सम्मेलन साबित हुआ।[3]

बैंगलुरु में कवि सम्मेलन

बैंगलुरु में महिलाओं की संस्था संचेतना ने स्थानीय उन्नति ऑडिटोरियम वसवन गुड़ी में कैंसर पीड़ित बच्चों की सहायतार्थ कवि सम्मेलन का आयोजन किया जो

ऐतिहासिक रुरू से सफल रहा। कवि सम्मेलन में सभी रसों की रचनओं को श्रोताओं की भरपुर सराहना प्राप्त हुई।

डॉ. कीर्ति काले द्वारा प्रस्तुत सरस्वती वंदना के उपरान्त हास्य–व्यंग्यकार दिनेश 'बावरा' (मुंबई) ने कार्यक्रम को ठहाकों भरी शुरुआत दी श्रोताओ को खूब हंसाने के पश्चात उन्होंने मुम्बई में हुई आंतकवादी हमले के संदर्भ में एक मार्मिक रचना का पाठ करते हुए कहा–

ये जो सन्नाटा, मातम, आह है
इसका कोई और नहीं 26/11 का
ताज ही गवाह है
मेरे मालिक मेरे ईश्वर
जब दुनिया
तुम्हारे बगैर नहीं चल सकती
तो सृजन की कोख में
हैवानियत भी पल नहीं सकती।

कवि सम्मेलन जगत की सर्वाधिक लोकप्रिय क्वयित्री डॉ. कीर्ति काले (दिल्ली) ने श्रृंगारिक गीतों के साथ–साथ हास्य गीतों का भी पाठ किया। उनके दोनों ही तेवरों पर श्रोताओं ने जमकर दाद दी।

फागुन में दाद करारी आई, फागुन में
ऐसी याद तुम्हारी आई
पानी पीया न रोटी खाई
जम करके खूब जलेबी खाई फागु में

उन्होंने महिलाओं की विवशता पर एक मार्मिक गीत का पाठ करते हुए कहा–

जब भी मन की माला फेरी
मर्यादा ने आँख तरेरी
परम्परा के लश्कर जागे
गूँजी अम्बर तक रणभेरी

हास्य कवि प्रदीप चौबे (ग्वालियर) ने अपने काव्य पाठ से खूब ठहाके लगवाए। एक रचना में उन्होंने कहा–

धक्का दिया था हमने डुबोने के वास्ते
अंजाम ये हुआ कि वो तैराक हो गए
बैगम को रिक्शेवाला कही ले के उड़ गया
हम सौ रुपये का नोट तुड़ाने में रह गए

ओजस्वी कवि वेदव्रत वाजपेई (लखनऊ) ने अपने काव्य पाठ से कार्यक्रम खूब दाद पाई। जब तक वे काव्य पाठ करते रहे ऑडिटोरियम में मौजूद श्रोता तालियाँ बजाते रहे। एक रचना में उन्होंने कहा –

जिनकी नजर में भारत
केवल जमीन का टुकड़ा है
अमर तिरंगा बस खादी के
धागों वाला कपड़ा है
संविधान के हर विधान को
जो प्रतिफल समझते हैं
इस धरती को मातृभूमि
कहने में अभी झिझकते हैं
बलिदानों की प्रथा जुड़ी
झंडे के तीनों रंगो से
हिन्दुस्तान नहीं डरता है
इन दो चार लफ्ज़ों से

हिन्दी गीतकार आदित्य शुक्ला (बंगलुरु) ने साहित्यिक गीत का पाठ करके समा बाँध दिया उनके मुक्तक और गीत को समान रूप से श्रोताओं की दाद मिली। उन्होंने कहा –

है परिवार विश्वास जी भर के सींचे
बिक जायें खुद उनकी खुशियाँ खरीदे,
मगर एक दिन वो ही पूछे जो तुमसे
दिया क्या है उनको बताना कठिन है
बहुत है सहज जग में रिश्ते बनाना

मगर उसको हँस के निभाना कठिन है

अन्तिम कवि के रूप में समापन काव्य पाठ के लिए प्रसिद्ध हास्य कवि सुरेन्द्र दुबे (जयपुर) का जैसे ही नाम पुकारा गया, श्रोता प्रसन्न होकर करतल ध्वनि करने लगे।

दुबेजी ने भी अपनी ख्याति के अनुरूप जमकर काव्य पाठ किया। जब तक के काव्य पाठ करते रहे ओडिटोरियम में हर ओर से ठहाके गूँजते रहे। उनके एक घण्टे के काव्य–पाठ के दौरान श्रोता हँसते–हँसते लोट–पोट हो गए। एक रचना में उन्होंने कहा–

पुलिस अधिकारी बोला–
दुबे जी!
यह मत समझ लेना कि
कानून–कायदे खोटे हैं
दरअसल कानून के हाथ तो लम्बे हैं
लेकिन पैर छोटे हैं।
इसलिए बेचारा
चल नहीं पाता है
जहाँ–जहाँ हम ले जाते हैं
बस वहीं–वहीं जाता है

कार्यक्रम की अध्यक्षता सरोज व्यास ने की तथा मुख्य अतिथि के रूप में दैनिक दक्षिण भारत के सम्पादक श्रीकान्त पाराशर पूरे कार्यक्रम के दौरान मौजूद रहे।

कवि सम्मेलन का संचालन गीतकार आदित्य शुक्ला (बैंगलुरु) ने किया। इससे पूर्व संस्था की अध्यक्ष सरला बिहारी एवं सचिव पुष्पा जी ने सभी अतिथियों को पुष्प गुच्छ भेंट किया। स्वागत के कार्यक्रम को श्रीमती रंजनी ने संचालित किया।[4]

अखिल भारतीय विराट कवि सम्मेलन

एटा में जिला औद्योगिक एवं कृषि प्रदर्शनी के अंतर्गत कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें कवियों ने काव्य पाठ कर कवि सम्मेलन को सार्थकता प्रदान की। कवि सम्मेलन में उत्तर प्रदेश सरकार के पशुपालन एवं दुग्ध विकास राज्य मंत्री अवधपाल सिंह यादव ने पद्मविभूषण गोपालदास 'नीरज' को एक लाख रुपये की थैली भेंट करके बहुजन समाज पार्टी के कार्यकताओं की ओर से उनका सम्मान किया।

पद्म विभूषण गोपालदास 'नीरज' (अलीगढ़) का नाम काव्य पाठ के लिए पुकारा गया तो समुचा पण्डाल तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा।

उन्होंने तीसरे विश्व युद्ध की विभीषिका पर एक सार्थक रचना का पाठ किया। श्रोताओं की माँग पर उन्होंने अपना प्रसिद्ध गीत कारवां गुजर गया गुबार देखते रहे का सस्वर पाठ किया जिसे श्रोताओं ने खूब सराहा। उन्होंने कहा–

आँखे भी खुली न थी कि
हाय धूप ढल गई
पाव जब तलक उठे
ये जिन्दगी फिसल गई
पात–पात झर गया
शाख–शाख चल गई
वक्त तो निकल सका न
पर उमर निगल गई
और हम अजान से
दूर के मकान से
उम्र के चढ़ाव का
उतार देखते रहे
कारवां गुजर गया
गुबार देखते रहे

विश्वविख्यात हास्य कवि एवं व्यंग्यकार सुरेन्द्र दुबे (जयपुर) ने अपने जाने–पहचाने अंदाज में अपनी ख्याति के अनुरूप जमकर काव्य पाठ किया। अपने साठ मिनिट के काव्यपाठ में उन्होंने हास्य और व्यंग्य की अनेक क्लात्मक कविताएँ सुनाकर श्रोताओं का मन जीत लिया। जब तक वे काव्य पाठ करते रहे श्रोताओं के ठहाके गूंजते रहे। एक रचना में उन्होंने कहा –

पुलिस वाले ने जवाब दिया–
अपराधियों की जिन्दगी
बदल नहीं पाया
आजादी के बाद देश में

कानुन चल नहीं पाया
तो यह मत समझ लेना कि
कानून–कायदे खोटे है
दरअसल कानून के हाथ तो लम्बे है
लेकिन पैर छोटे हैं
इसलिए बैचरा चल नहीं पाता है
जहाँ–जहाँ हम ले जाते है बस
वहाँ– वहाँ जाता है

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कवयित्री डॉ. कीर्ति काले (दिल्ली) ने शृंगार के साथ–साथ हास्य गीतों का पाठ करके कवि सम्मेलन के चार चाँद लगा दिए। तीन गीतों का पाठ कर जब वे बैठने लगीं तो श्रोताओं ने और–और की आवाजें लगाकर पुनः काव्यपाठ करने का आग्रह किया।

अपने एक हास्य गीत में उन्होंने बढ़ती हुई महँगाई के कुछ इस प्रकार रेखांकित किया–

बढ़ा किराया देख
दिसम्बर भी लगता है जून
नया कपल हनीमून मनाने
निकला देहरादून
लेकिन पहुँच गया हरिद्वार
सबका भला करे करतार

प्रसिद्ध गीतकार डॉ. राजकुमार रंजन ने साहित्य गीत की शालीन प्रस्तुति से श्रोताओं को भावविभोर कर दिया। अपने गीत में उन्होंने कहा–

मैं जला किसी चिंगारी से
चितवन के छल से छला गया
मीठा–मीठा सा दर्द उठा
मैं हँसता–हँसता चला गया

ओजस्वी कवि शशांक 'प्रभाकर' ने अपने काव्य पाठ में कहा –

पानी जो पी ले वो शराब हो जाए

हर शब्द मोहब्बत की किताब हो जाये

कवयित्री रचना तिवारी ने सरस गीत का सस्वर पाठ किया। हास्य कवि बलवीर सिंह 'खिचड़ी' ने अपने लम्बे काव्य पाठ से श्रोताओं को खूब हंसाया तो प्रसिद्ध कवयित्री डॉ. सरिता शर्मा ने अनेक मुक्तकों का पाठ करके दाद पाई। उन्होंने कहा–

जागरण के सपने–सा सजा लूँ तुम्हें
ढालकर गीत में गुन–गुना लूँ तुम्हें
मैं निमिष मात्र में प्राण दे दूँ अभी
प्राण देकर अगर आज पा लूँ तुम्हें

ओजस्वी कवि बदन सिंह 'मस्ताना' की रचनाओं को भी श्रोताओं ने बहुत पसन्द किया। अपनी एक रचना में उन्होंने कहा–

हम निराशा के गगन से
प्यार क्यों कर लें?
दर्प के सम्मुख प्रकट
आभार क्यों कर ले?
बाद में परिणाम जो
होगा वो भोगेंगे
युद्ध से पहले मरण
स्वीकार क्यों कर ले?

ओजस्वी कवि शशिकान्त यादव ने समसायमकि विषयों पर अनेक छन्दों का पाठ करके खूब तालियाँ बटोरी। एक छन्द में उन्होंने कहा –

शहीदों का खत प्रश्न
पूछ रहा पीढ़ियों से
खोया कहाँ देश का
गुमान बतालाइये
हरा–भरा सौंपा था चमन
हाथ में तुम्हारे
झुलसा कैसे यारों
कोई कारण बतलईये!

कवियत्रि शैलजा सिंह ने प्रभावी काव्य पाठ श्रोताओं की खूब दाद पाई। अपने एक गीत में उन्होंने कहा–

जादूगरनी हूँ मैं
जादू टोना कर दूंगी
आसमान के सूरज को भी
बौना कर दूँगी

व्यंग्यकार प्रशान्त उपाध्याय ने सार्थक और धारदार व्यंग्यों का पाठ करके श्रोताओं के सोचने के लिए मजूबर कर दिया। उन्होंने कहा–

एक सियार ने
भूखे मेमनों की ओर
कुछ रोटियाँ उछालीं
मेमने ने सियार की
जय बोली और रोटियाँ दबा ली
भय और नफरत के वातावरण में
अचानक भाईचारा छा गया
मुझे लगा कि जैसे चुनाव आ गया

ओजस्वी कवि कमलेश 'राजहंस' ने अपने विद्रोही तेवर से श्रोताओं की खूब तालियाँ बटोरीं। अपनी एक रचना में उन्होंने कहा–

सदियों से ऊँचे महलों ने
झोपड़ियों का उपहास किया
हमने तुमने सबने मिलकर
शैतानों का अरदास किया
सत्ताधारा सामन्तों ने
भारत का सत्यानाश किया
भारत की भोली जनता ने
गद्दारों का विश्वास किया

प्रसिद्ध कवयित्री व्यंजना शुक्ला ने अनेक मुक्तकों से कवि सम्मेलन को यादगार बना दिया। उन्होंने कहा–

पावन प्यार अगर महकेगा तो
चन्दन हो जाएगा
नारी राधा बन जाये
नर मन मोहन हो जाएगा
तन को चाहे जितना रंग लो
कोई फर्क नहीं होगा
मनको जिस दिन रंग लोगे
ये वृन्दावन हो जाएगा

आज के दौर की विसंगतियों और विडम्बनाओं का सजीव चित्रण करते हुए ज्ञान चन्द्र मर्मज्ञ ने अपने काव्य पाठ में कहा–

करते–करते प्रतीक्षा पिया की
जंगलों में सिया गड़ गई है
राम के बाण कम पड़ गए हैं
रावणों की उमर बढ़ गई है

प्रसिद्ध गीतकार राधेश्याम मिश्र के मुक्तकों को भी श्रोताओं ने खूब पसन्द किया। आह–वाह और तालियों की गड़गड़ाहट के साथ उन्होंने एक सार्थक गीत का पाठ किया। उन्होंने कहा –

तुम इतनी दूर बसे तन से
परतीति नहीं होती मन से
जो समय–समय मिलते रहते
उनसे ताजा यादें रहती
जो आकर चले गए असमय
उनकी केवल बातें रहती

प्रसिद्ध गीतकार आत्म प्रकाश शुक्ल आज अपने पूरे रंग में थे। उन्होंने लगातार छ गीतों का काव्य–पाठ करके कवि सम्मेलन को उस ऊँचाई तक पहुँचा दिया जो आज के दौर के कवि सम्मेलनों के लिए असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है। श्रोताओं ने उन्हें बैठने ही नहीं दिया। वे गीत का पाठ करते रहे और श्रोता लगातार दाद देते रहे। एक मुक्तक में उन्होंने कहा–

सारा आलम मुरीद होता है

वक्त खुद चश्मदीद होता

मौत पैशानी चूम लेती है

जब सिपाही शहीद होता है

कार्यक्रम की शुरुआत डॉ. किर्ती काले द्वारा प्रस्तुत सरस्वती वंदना से हुई। कार्यक्रम की अध्यक्षता पद्मविभूषण गोपालदास 'नीरज' ने की। कार्यक्रम का उद्घाटन उत्तर प्रदेश सरकार के पशुधन एवं दुग्ध विकास राज्यमंत्री अवधपाल सिंह यादव ने किया तथा मुख्य अतिथि थे। दीप प्रजवल्लन गौरव दयाल आई.ए.एस. ने किया तथा आशीष प्रदाता के रूप में आर. के. चतुर्वेदी, आर. पी. चतुर्वेदी पूरे कार्यक्रम के दौरान मौजूद रहे। विश्व विख्यात हास्य कवि सुरेन्द्र दुबे के संचालन में आयोजित यह कवि सम्मेलन बहुत सफल रहा। प्रारम्भ में कार्यक्रम के संयोजक रणजीत सिंह यादव ने सभी का स्वागत किया तथा अन्त में सह संयोजक रणजीत ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।[5]

गीत चांदनी

जयपुर में विगत 11 अक्टूबर को जय क्लब के खूबसूरत लॉन में 38 वीं 'गीत चांदनी' का आयोजन किया गया जिसमें गीतों के सप्तऋषि मण्ड्ल ने काव्य के आकाश को अपनी काव्य प्रतिभा से आलोकित करते हुए देर रात्रि तक रस वर्षा की। काव्य की गरिमा कुशल संचालन साहित्यिक संचालन तथा समृद्ध अभिरुचियों के श्रोताओं द्वारा प्रत्येक गीतकार का उत्साहवर्धन तथा सराहना ऐसे पक्ष समूचे आयोजन के ऐसे पक्ष थे जिनकी वजह से इस गीत महोत्सव की कवि सम्मेलन जगत से सर्वोच्च प्रतिष्ठा है संचालक सुरेन्द्र दुबे ने माइक सम्हालते ही कहा–

दीप सरीखे गीत सब

तम से भड़े तमाम

गीतों की दीपावली, गीत चांदनी नाम।

श्रीमती इन्दिरा गौड़ ने सरस्वती वन्दना करते हुए कहा–

हे मात शारदे लो वन्दन

वरदा वर दो मन हो पावन।

प्रथम गीतकार के रुप में प्रस्तुत किए गए बलराम श्रीवास्तव ने सार्थक शुरुआत देते हुए कहा–

मन विनय पत्रिका, तन हे दोहावली

लो समर्पित तुम्हें भावन्जली
ज्ञान के दीप को जिसने मानस किया
प्रेरणा हो गई एक रतनावली

कुछ मुक्त कों को सुनाने के पश्चात् उन्होंने गीत का पाठ यों आरम्भ किया–

जब – जब टूटे मन के धागे, घायल तब तब सम्बन्धी हुए
घायल आसूँ की भाषा में, विरहन मीरां के छन्द हुए।

एक गीत के बाद अपनी पूरी रंगत में आते हुए जब दूसरे गीत का पाठ किया तो श्रोता भी अपनी रंगत में आ गए और गीत चांदनी भी। उनके इस गीत के अनेक अंशों को श्रोताओं ने दोबारा सुना तथा सराहना की।

देह के दीपक में जब तक सांस की बाती रहे
गीत की यह चांदनी आती रहे

गीत–चांदनी के श्रोताओं के चेहरे गीतकार रमेश शर्मा ने हमेशा की तरह अपने सीधे–सादे अन्दाज में एक नए गीत का पाठ करके श्रोताओं से भरपूर दाद पाई। उन्होंने कहा–

बौछारें बीते बरसों की मन का सूनापन सींचे है।
बरसात में भीगी वो लड़की कानों में अब तक
छींके है / हंसने–गाने की ऋतु हे ये रोना
वर्जित तो हे लेकिन / कौन सिखाए इन आँखों
को मौसम का अनुसासन।

रमेश शर्मा के एक अन्य गीत क्या लिखते रहते हो यों ही तथा कभी मेरा सावन देखना को भी श्रोताओं का भरपूर प्यार मिला। राजस्थानी भाषा के स्थापित गीतकार कैलाश मण्डेला ने बंधनों में बंधी हुई स्त्री का चित्र प्रस्तुत करते हुए कहा –

पगल्या में मंहदी मन भावे घाल्यो
बिछली अगुलल्यां जकड़ी रे
कान फिरे बाल्यो बलखानी
कमर कणकती अकड़ी रे
बोर चढ्यों माथै इतरावे
कमर कणकती पकड़ी रे

काया एहड़ी फसली जाये

जाले के बीच मकड़ी रे

राजस्थानी भाषा के उत्कृष्ट शब्द विन्यास में अपनी मिट्टी की महक को महसूस करते हुए श्रोताओं ने उन्हें जमकर दाद दी। धारों सूख गयो शीर्षक से प्रस्तुत किया उनका गीत भी खूब पसंद किया गया।

इन्दिरा गौड़ ने तो अपने साहित्यिक गीतों से ऐसा समां बांधा कि इस वर्ष की गीत चांदनी जैसे उन्हीं के नाम हो गई। एक के बाद एक कई साहित्यिक और मर्मस्पर्शी गीतों का पाठ करके उन्होंने ने केवल श्रोताओं की संवेदना और चेतना को झंकृत किया अपितु उनसे भरपूर सराहना भी पाई। उन्होंने कहा–

मैं बदली थी बरसी भी थी
पर्वत पर चट्टानों पर
खुद को व्यर्थ कर लिया रीता
बरस–बरस पाषणों पर
सम्भव था सरिता हो जाती,
अगर बरसती घाटी–घाटी।
तुमने बीज दर्द के बोए,
मैंने फसल गीत की काटी

एक अन्य गीत में उन्होंने कहा–

मैं सतह पर जी न पाई
और तुम उतरे न गहरे

उनके गीतों की श्रोताओं ने इतना पसन्द व सम्मानित किया कि हर किसी ने यह कहा कि वे इस गीत चांदनी की उपलब्धि के रूप में दाद की जाएगी।

ख्यातनाम गीतकार राजेन्द्र राजन ने अपने चिरपरिचित अन्दाज में मुक्तक गजल और गीत का पाठ कर श्रोताओं के मन पर गहरी छाप छोड़ी। उन्होंने कहा–

ये कैसा आवारपन है
मुक्त रहूँ तेरी बाहों में
दूर रहूँ लगता बंधन है
यह जीवन एक प्रश्न बना है

जिसका हल खुद ही उलझन है

डॉ. आत्म प्रकाश ने अपने परिपक्व गीतों से गीत चांदनी को ऊँचाई पर पहुँचा दिया। उनका अनुपम शब्द विन्यास तथा अनुभूतिका बाँकपन बता रहा था कि किसलिए उनके नाम की हिन्दी के श्रेष्ठ गीतकारों के नामों में शुमार किया जाता है। एक के बाद उन्होंने अनेक मुक्तकों, छन्दों व गीतों का पाठ किया।

सुख को हाथों हाथ बाँटना
दुःख खुद सहना मेरे मन
अपना दर्द किसी के आगे
कभी न कहना मेरा मन

संचालक सुरेन्द्र दुबे ने अपने क्रम में गीत का पाठ करते हुए कहा–

फिर थके हाथों ने देखो थाम ली पतवार
जाएंगे उस पार
भँवर धारी नदी में है बाढ़े के आसार
जाएँगे उस पार

श्रोताओं के आग्रह पर उन्होंने एक और गीत का पाठ किया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में संयोजक विश्वम्भर मोदी ने कवियों का परिचय करवाते हुए स्वागत–सम्मान की रस्म पूरी करवाई। हाल ही में दिबंगत हुए तरुण समाज के दो सदस्यों डॉ. गोप रामचन्दानी तथा अविनाश मोदी को दो मिनट का मौन रखकर श्रध्धांजली अर्पित की गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता संदीप जैन ने की तथा गिरधारी सिंह शेखावत मुख्य अतिथि के रुप में पूरे कार्यक्रम के दौरान उपस्थित रहे। तेरुण समाज जयपुर का यह कार्यक्रम लम्बे समय तक याद किया जाएगा।[6]

डीडवाना में हुआ यादगार कवि सम्मेलन प्रदीप सेवदा

विगत दिनों डीडवाना के न्यू मादेसरी पब्लिक स्कलू के प्रांगण में अखिल भारतीय हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें देर रात तक श्रोता काव्य–रस का आनन्द उठाते रहे।

प्रथम कवि के रुप में आए श्याम 'सनकी' ने तलाक लेने की इच्छुक पत्नी को अपनी एक कविता में एक संदेश दिया –

जब तुमने इतने दिन जुल्म सहा तो कुछ दिन और सहो
नई व्यवस्था होने तक अपने पद पर बनी रहो

हास्य कवि अशोक सेवदा ने आते ही जैसे ठहाकों की बरसात कर दी। उन्होंने अपनी प्रसिद्ध रचना देवताओं की संसद की कार्यवाही की सजीव कल्पना की इस रचना में राह का आरोप देखिऐ–

''क्यों आँकड़ों में उलझा रहे हो
अपनी नीति को शक के दायरे में ला रहे हो
सीधा–सीधा कहो नर्क जैसी सरकारी सम्पति को
निजी क्षेत्र में देने जा रहे हो।''

इसके बाद जयपुर के कवि अशोक चारण ने किसानों के दर्द को रेखांकित करते हुए व किसान आन्दोलन विरोधी सरकार से मुखातिब होते हुए कहा –

''तुमने नोंच लिया हे
उनके बच्चों की मुस्कान को
बिन मंदिर का कर डाला क्यों
भारत के भगवान को''

आलोट के हास्य कवि नंदकिशोर 'अकेला' का तो अंदाज ही अलग था उन्होंने अफनी दुबली–पतली काया पर विनोद करते हुए कहा –

मानता हूँ मेरे इंजन कम सीसी का है।
मगर कम सीसी का इंजन एवरेज बहुत देता है।

शेखावाटी बोली के कवि हरिओम पारीक 'निर्दोष' ने बस कन्डक्टर द्वारा किराया मांगने पर मास्टर का जवाब बताया कि–

मास्टर व्यकित नहीं होता
विचारधारा होता है
और विचारधारा मुक्त में आती–जाती है
उसका कोई किराया नहीं लगता।

हास्य के माहोल को रसमय करते हुए राजस्थानी गीतकार कल्याण सिंह राजावत ने अपने मधुर गीतों से कवि सम्मेलन को ऊँचाइयाँ प्रदान कीं। उन्होंने कहा–

भीरा–भीरा है जिन्दगी
भीरा भीरा हे जमारो
इण ने सिंया तो करो

थोड़ी-थोड़ी प्रीत री मद

पिया तो करो

हास्य कवि डॉ. केसरदेव प्रजापत ने माइक पर आते ही राजनीति का फोटो पहचान पत्र में हुई विसंगतियों के बारे में अपनी कविता में पत्नी से कहा-

चुनाव पहचान पत्रों में
कई लोगों का
आँख-कान नाक बदलगाया
बावली आपा तो सस्ता में ही सलटाया
लोगों का बाप बदलग्या।

नवलगढ़ के कवि हरीश हिन्दुस्तानी ने कन्याभ्रूण हत्या पढ़ी तो वहाँ बैठे लोगों की आँखों में आसूँ छलक पड़े। उनकी कविता में कोख में पल रही बेटी कहती है -

ये कोख है ना कि सब्जीमंडी है।
हत्या करने वाले
माँ-बाप नहीं होते
या तो पिता शिखाड़ो है
या फिर माँ पाखंडी है

संचालक बुद्धिप्रकाश दाश्चीय ने अपने मस्ती के गीतों से कार्यक्रम का समापन किया। इस कार्यक्रम के मख्य अतिथि समाजसेवी गोविन्द लालजी रुवटिया व अध्यक्ष एस डी. एम. अनवर अली खां थे। उन्होंने कार्यक्रम को अभूतपूर्व बताया। संस्था के संचालक रामनिवास इकिया व कार्यक्रम के संयोजक प्रदीप सेवदा ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।[7]

गौरव टावर के रुफ गार्डन में हुआ विमोचन के उपलक्ष्य में कवि सम्मेलन

12 सिंतम्बर को जयपुर स्थित अणुविभा केन्द्र में कवि सम्मेलन जगत की पहली पत्रिका 'कवि सम्मेलन समाचार' का विमोचन समारोह हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। इस पत्रिका का लोकार्पण करते हुए महान दार्शनिक एवं तेरापंथ के आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने पत्रिका की सराहना करते हुए सम्पादक मण्डल के धर्म के मार्ग पर चलते रहने का सन्देश दिया। उन्होंने अपने आशीर्वचन में कहा कि यह पत्रिका अपने पाठकों को मानव कल्याण के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करे।

जैसे ही युग पुरुष आचार्य श्री महाप्रज्ञा ने पत्रिका का लोकापर्ण किया वहां उपस्थित धर्मानुरागियों ने हर्षध्वनि की। इस अवसर पर मौजूद अनेक ख्यातनाम कवियों ने साधु-संतो का आशीर्वाद प्राप्त किया। इस अवसर पर कवि सम्मेलन समाचार के सम्पादक एवं अतंरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हास्यकवि सुरेन्द्र दुबे ने पत्रिका के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह पत्रिका उमंग उर्जा, उत्साह और उल्लास से ओत-प्रोत रहेगी तथा कवि सम्मेलन विधा के विकास औरपरिष्कार के निमित्त सकारात्मक दृष्टिकोण रखेगी। समारोह के अन्त में आचार्य भी महाप्रज्ञ ने मंगलपाठ के जरिये सभी को आशीर्वाद प्रदान किया।

विमोचन समारोह के पश्चात गौरव टावर की छत पर सिथत रुफ गार्डन की लोन में एक हास्यकवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। सुरेन्द्र दुबे के संचालन में हुए इस कवि सम्मेलन में अशोक सेवदा डॉ. केसर देव कैलाश मण्डेला बुद्धि प्रकाश दाधींच, कमल मोहश्वरी, धर्मेन्द्र सोनी एवं नन्द किशोर 'अकेला' आदि कवियों ने अपनी कविताओं से श्रोताओं को हंसाते-हँसाते लोटपोट कर दिया। हास्यकवि सम्मेलन का आयोजन गौरव टाँवर के प्रोपराइटर राजेन्द्र बड़िया की ओड़ से किया गया जिसमें जयपुर के गणमान्य लोग मौजूद थे। समारोह के समापन पर भी बड़िया की ओड़ से सभी पे प्रति आभार ज्ञापित किया गया।[8]

मुरादाबाद में हुए दो कवि सम्मेलन

मुलचंद राज

साहितियक संस्था 'सवेरा' द्वारा चित्रगुप्त इंटर कॉलेज में आयोजित कवि सम्मेलन में प्रतिष्ठित गीतकार गोपालदास 'नीरज' ने देर तक अपनी कविताओं के जादू से लोगों को बाँधे रखा। उन्होंने दोहे सुनाये-

आत्मा के सौंदर्य का शब्द रूप है काव्य
मानव होना भाग्य है, कवि होना सौभाग्य
तथा
रुका नहीं कोई यहाँ, नामी हो कि अनाम
कोई जाये सुबह को, कोई जाये शाम

लखनऊ से आये नवगीतकार डॉ. सुरेश ने यह गीत सुनाया-

चलती है तेज़ हवाएँ
ले-लेकर तेजाबीपन

रह–रहकर घटता–बढ़ता

साँसों पर दर्द का वजन

प्रसिद्ध नवगीतकार माहेश्वर तिवारी ने गीत की सस्वर प्रस्तुति की–

चिट्ठियाँ भिजवा रहा है गाँव,

अब घर लौट आओ

इसके बाद उन्होंने लोगों के अनुरोध पर एक औड़ गीत सुनाया–

एक तुम्हारा होना
क्या से क्या कर देत ाहै
बेजुबान छत–दीवारों को घर कर देता है

लखनऊ से पधारे हास्य–व्यंग्य कवि सर्वेश अस्थाना ने राजनीतिज्ञों पर व्यंग्य करते हुए कहा–

किसी गिरगिट की नेता से
तुलना करना महापाप है
क्योंकि रंग बदलने के मामले में
नेता गिरगिट का भी बाप है

गीतकार डॉ. ईश्वरचंद त्रिपाठी ने गजल प्रस्तुत की–

ढूंढ़ने चाँद निकला तो तारा मिला
वक्त का हमसफर बेसहारा मिला
दिल के दरिया में उतरा था पहली दफा
न तो कश्ती मिली न किनारा मिला

प्रतिष्ठित व्यंग्यकार डॉ. मक्खन मुरादाबादी ने वर्तमान में ईमानदारी के बेईमान के हाथों अपमानित होने पर अफसोस जाहिर करते हुए कहा–

लेकिन यहाँ
जिसने झूठ बोला
धोखा दिया
समाज की आंखो में धूल झोंको
वह जिंदगी की दौड़ में बहुत आगे निकल गया

मैं ईमानदारी का झंड़ा लिये खड़ा था
भीड़ में बेईमानों के पाँव से कुचल गया

कृष्णकुमार 'नाज' के शेर श्रोताओं द्वारा बहुत पसंद किए गए। उन्होंने पढ़ा-

क्या हुआ तुमको अगर चेहरा बदलना आ गया
हमको भी हालात के सांचे में ढ़लना आ गया
रोशनी के वास्ते धागे को जलते देखकर
ली नसीहत मोम ने उसको पिघलना आ गया

देर रात तक चले कार्यक्रम में बलवीरसिंह खिचड़ी डॉ. रमासिंह सुमन दुबे शरीफ भारती, आनंद गौरव, डॉ. पूनम बंसल और शचीन्द्र भटनागर ने भी काव्यपाठ किया। संचालन डॉ. मक्खन मुरादावादी ने किया।

जिला कृषि विकास एवं औद्योगिक प्रदर्शनी मुरादाबाद के ग्रांउड में स्थित जिगर मंच पर काव्यपाठ करते गीतकार गोपालदास 'नीरज' ने कहा-

अब तो मजहब कोई ऐसा भी चलाया जाए
जिसमें ईंसान को इंसान बनाया जाए

उन्होंने अपने चिर-परिचित अंदाज में सुनाया-

अब न वो दर्द न वो दिल न वो दीवाने रहे
अब न वो साज न वो सोज, न वो माने हे
साकी तू अभ भी यहां किसके लिए बैठा है
अब न वो जाम, न वो मय, न वो पैमाने रहे

संचालक डॉ. मक्खन मुरादाबादी ने जब संवेदनाओं के चितेरे गीत ऋषि किशन 'सरोज' का नाम कान्यपाठ हेतु पुकारा तो लोगों ने तालियों की गड़गड़ाहट के साथ उनका स्वागत किया। सरोज जी ने वही अपने पुराने अंदाज में बायां हाथ हालों पर रखकर और दाहिने हाथ से माइक पकड़कर अपनी गीतिफा प्रस्तुत की-

बिखरे रंग तूलिकाओं से
बना न चित्र हवाओं का
इंद्रधनुष तक जाकर
मुह का सौंधा इत्र हवाओं का
कभी प्यार से माथा चूमा

कभी रूठकर दूर हटी
भोला बादल समज न पाया
त्रियाचरित्र हवाओं का

पांडाल से जोरदार आवाज उठती है– एक और उन्होंने मधुर स्वर में गजल की प्रस्तुति की–

है बहुत भीड़, यहाँ एक किनारे रहिए
दिल लरजता है जरा पास हमारे रहिए
मैं सिपाही के समंदर से गुजर जाउँगा,
आप बस यूं ही मुझे करते इशारे रहिये

अलबेले गीतकार डॉ. कुंवर बेचैन ने गीत सुनाया–

जितनी दूर नयन से सपना
जितनी दूर अधर से हंसना
बिछुए जितनी दूर कुंवर पाँव से
उतनी दूर पिया तुम मेरे गांव से

अब बारी आई, प्रसिद्ध नवगीतकार माहेश्वर तिवारी की। उन्होंने माइक पर आते ही अपनी बहुत चर्चित गजल प्रस्तुत की–

सिर्फ तिनके सा न होठों में दबाकर देखिए
इस सदी का गीत हूँ मैं गुनगुनाकर देखिए
एक हरकत पर अंधेरा काँप जाएगा जरुर
आप माचिस की कोई तीली जमालकर देखिए

लोगों के अनुरोध पर उन्होंने दो नवगीत भी सुनाये। नवगीतकार डॉ. सुरेश ने अपना वही परिचित और प्रसिद्ध गीत सुनाया जिसे लोगों ने खुब सराहा–

इस नगर से उस नगर है
पाँव में बाँधे सफर है
हैं थके–हारे। नंद के मारे
हम तो ठहरे यार बनजारे

सरिता शर्मा ने गीत का सस्वर पा किया।

जब उनसे दूर होते है

बहुत मजबूर होते है

उदासी की मुंडेरो पर सवेरा यूँ उतरता है

बिना उनके हमारे दिन बड़े बेनुर होते है

कार्यक्रम संचालक डॉ. मक्खन मुरादाबादी ने सामाजिक अव्यवस्थाओं का अपनी कविता में कुछ इसी तरह चित्रण किया–

हम सोचने लगे–

क्या हो गया है महारे समाज की व्यवस्था का रुप

लड़की पैदा हो तो दहेज की चिंता

लड़का पैदा हो तो दहेज का भूत

कृष्णकुमार 'नाज' ने गजल प्रस्तुत करते हुए कहा–

जो पेड़ सबको कड़ी धूप से बचाता है

वो सद्रियों में अलावों के काम आता है

यहाँ फरेब के कारों की फसल उगती है

तू ऐतबार की चादर कहाँ बिछाता है?

देर रात तक चले कार्यक्रम में हास्य व्यंग्य कवि सर्वेश अस्थाना, सुरेन्द्र सुकुमार अब्दुल अयूब गौरी शरीफ भारती डॉ. विष्णु सक्सेना हुक्का बिजनौरी और गीतकार डॉ. ईश्वरचंद त्रिपाठी ने भी काव्यपाठ किया। इससे पूर्व सरस्वती वंदना सरिता शर्मा ने प्रस्तुत की। कार्यक्रम में जिला गन्ना अधिकारी मुरादाबाद संजय गुप्ता भी उपस्थित थे।[9]

मुरादनगर में कवि सम्मेलन

श्याम मोहन तिवारी

मुरादनगर आयुध निर्माणी कवि मंच के तत्वावधान में स्पोर्टस काम्पलैक्स आयुध निर्माणी परिक्षेत्र में अखिल भारतीय कवि सम्लेन का आयोजन किया गया जो देर रात तक श्रोताओं को आनन्दित करता रहा।

डॉ. कीर्ति काले की सरस्वती वन्दना से कार्यक्रम शुरू हुआ। सुश्री नेहा वंद ने सभी का मन मोहा उनका अंदाज ए बयां कुछ इश प्रकार था।

आँसू कंपे कपोल पर, ज्यों पत्ते पर ओस।

तेरे बिन मन हो गया, सहमा सा खरगोश।

श्रवण शुक्ला ने अफनी हास्य व्यंग्य रचनाओं से सभी को लोटपोट किया। ओवरटाइम पर उनकी रचना कुछ यूं रही–

ओ. टी. हमका दिये रहो, प्राण हमारे लिये रही।

जनता ने बार–बार तालियाँ बजाकर कवियों की मुक्त कंठ से सराहना की।

दयाशंकर अश्क की रचनाओं ने कार्यक्रम को आगे बढ़ाया। इसके बाद डॉ. कुंवर बेचैन के गीतों एवं गजलों ने मंच बुलन्दियां प्रदान की। उनके सम्मान में बार–बार करतल ध्वनि से प्रांगण गुंजायमान रहा। उनकी रचना –

आदमी भी हो गया है बम,

कहां जाकर रहे,

हर तरुण बारुद का मौसम कहां जाकर रहें।।

अभायुक्त डॉ. ओंकार शर्मा परिमल की रचनाओं ने भी खुब वाहवाही लूटी। उन्होंने कहा–

दिन व दिन, भुखमरी में इजाफा हुआ,
आश्वासनों के चावल उबाले गये
फूँक दैगी जहां को बद्दुआ पेट की,
भूख के प्रश्न और यदि टाले गये।

अपनी अद्भूत अदाओं के साथ मंच संचालन कर रहे हास्यकवि इन्द्र प्रसाद 'अकेला' की रचनाओं ने वर्तमान व्यवस्था कुछ पर यूं तेज कसे–

फिर इलैक्शन में सियासत के मदारी आंएगे,
मांगने को भीख वोटों के भिखारी आएंगे।

सत्यपाल 'सत्यम'की रचनाओं ने सभी श्रोताओं में नया जोश भर दिया। उन्होंने कहा–

चांद से उतरती ये चांदनी तो दिखती हे चांद
पे लगे हुआ कलंक नहीं दिखता,
सांप के डसे का विष फैलता तो दिखता है,
आदमी के उसने का डंक नहीं दिखता.

आयुध निर्माणी के अपर महाप्रबन्धक एवं गीतकार वी.पी. यजुर्वेदी की रचनाओं ने खूब समा बांधा उन्होंने कहा–

राजमार्ग का पथिक लक्ष्य पर पहुच गया देखो

निर्धन की पगदण्डी बैठी अब भी सोती है।

पॉपुलर मेरठी की हास्य व्यंग्य रचनाओं ने कवि सम्मेलन को शिखर पर पहुँचाया उन्होंने कहा–

बहुत कंजूसी पर आमादा है ससुराल मेरी
राज की बात बताते हुए डर लगता है।
ऐसे कमरे मेंसुला देते हैं साले मुझको, पैर फैलाऊँ
तो दीवार में सर लगता है।

डॉ. कीर्ति काले के गीतों ने कवि सम्मेलन को सफलता के उच्च शिखर पर पहुँचाया–

'तुम्हारी आँख में शायद सभी सपने सुहाने हैं,
हमारी याद में भी तो अभी गुजरे जमाने है।
पता है मेरे गीतों की किताबे क्यों महकती है,
महारे दिल के तहखाने में खुशबु के खजाने हैं'

बार–बार तालियों से कवयित्री का स्वागत हुआ।

मोहन कुशवाहा के गीतों ने भी खूब तालियाँ बटोरी। आयुध निर्माणी के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने कवि सम्मेलन का भरपुर आनन्द लिया। इससे पूर्व सभी कवियों का शाल ओढ़ाकर एवं स्मृति चिन्ह भेंटकर सम्मान किया गया। हिन्दी अधिकारी श्याम मोहन ने सभी का आभार व्यक्त किया। मंच संचालन कवि इन्द्रप्रसाद अकेला ने किया।[10]

किशनगढ़ में कवि सम्मेलन लाल चन्द

दशहरा मेला कमेटी द्वारा आयोजित किशनगढ़ के कवि सम्मेलन में इस बार भी श्रोता सुबह तक जमे रहे। कवियों ने रात भर काव्य से रस वर्षा की। उन्होंने मच्छर मारो अभियान का कारण पूछा तो नेता ने जवाब दिया–

जनता का खून पीना हमारा अधिकार है।
लेकिन ये मच्छर हमारे अधिकार क्षेत्र में घुसपैठ करते हैं।

हास्य कवि दिनेश दिग्गज ने आते ही श्रोताओं से तड़ातड़ ठहाके लगवाएँ। लेकिन पठानातिरेक के कारण अपना सीमित प्रभाव ही छोड़ पाए।

ओजस्वी कवि कुलदीप ललकार ने कारविल में शहीद सैनिको के बलिदान के

सम्मान में काव्य पाठ करते हुए कहा–

बर्फीली कारविल घाटी में उस दिन संयम खोए थे।
देवदार के और चिनार के पौधे मिलकर रोये थे।

वीर रस के वातावरण को शवकरगढ़ के राजस्थानी गीतकार राजकुमार 'बादल' ने अपने रस भरे गीतों से श्रृंगारिक बना दिया। एक गीत में उन्होंने कहा–

बारणे चबूतरी पे लोटग्यो धणी।
माया की दावण रहगी तणी की तणी।

राजस्थानी भाषा के मशहूर हास्य कवि हरिओम पारीक 'निर्दोष' ने 'कालू–भंवरी और मोबाईल' शीर्षक से एख लम्बी किन्तु हास्य रस से ओतप्रोत रचना का पाठ कर श्रोताओं को हंसाते हंसाते लोट पोट कर दिया। बाद में उन्होंने 'भैसा–भैंसा और वेलेन्टाइन डे' शीर्षक से एक ओर हास्य कविता सुनाई। वीर रस के कवि अब्दुल गफ्कार ने अपने चिर परिचित अन्दाज में राम सेतु पर एक म्लबी रचना का पाठ किया जिसे श्रोताओं ने बार–बार तालियों की गड़गड़ाहट से नवाजा। उन्होंने कहा –

तो फिर सारे राजक्षों के शीर उतारे जाएंगे।
कलयुग के ये रावण अपने हाथों मारे जाएंगे।

हास्य व्यंग्य के ख्याति नाम कवि महेन्द्र अजनबी ने वीर रस के कवि सम्मेलन का वर्णन करते हुए हंसाने की कोशिस की। इन्दौर से आई कवियित्री अर्चना अंजुम ने 'नेता–इक्कीसा' सुनाकर पहले तो श्रोताओं को खूब हंसाया बाद में संजीदा तेवर में गजल का पाठ किया जिसे श्रोताओं ने खूब सराहा। उन्होंने कहा–

जल जाएंगे सब रिश्ते इन आग के शोलो से
दुनिया में न तुम खेलो बारुद के गोले से
'अजुंम' ये हकीकत है चलने के लिए अवसर
बन जाते है खुद रस्ते दो प्यार के बोलो से।।

हास्य–व्यंग्य के प्रसिद्ध कवि वेद प्रकाश ने विविध विषयों पर श्रेष्ट व्यंग्य रचनाओं का पाठ करके कवि सम्मेलन को ऊँचाई प्रदान की उन्होंने एक काले आदमी के कालेपन पर वर्णन करते हुए कहा –

शादी होते ही
माँ बाप को धक्के देकर बाहर निकाल देनेवाली

औलाद जैसा कपूत कुल मिलाकर इतना काला
जितनी किसी भ्रष्ट नेता की करतूत।

डॉ. किर्ति काले ने सधे हुए अन्दाज में काव्य पाठ करते हुए कहा –

एक पल में न जाने ये क्या होग गया
रंग भरने लगे दिल की तस्वीर में
आपके नाम की कुछ लकरे बनी
जुड़ गए कुछ नए भ्रष्ट तकदीर में
एक जादू सा होने लगा हर तरफ
सोए अरमो अचानक चहकने लगे।

वन्स मोर, और–और की आवाजों के बीच उन्होंने श्रोताओं की फरमाइश पर अपना प्रसिद्ध गीत 'तोड़कर चट्टान फूटे सैंकड़ों झरने' का पाठ किया जिसे श्रोताओं ने खूब सराहा। धनबाद से आए ओजस्वी गीतकार लाजपत राय विकट ने वन्दे मातरम् के सम्मान में राष्ट्रभक्ति से ओत–प्रोत गीत का पाठ करते हुए कहा–

जिसे गाकर वीरों ने पाया स्वराज हे।
देश ऋणी कल जिसका था ऋणी आ हे,
वन्दे मातरम् देश की आवाज है।

फिल्मी गीतकार पं. विश्वेश्वर शर्मा ने कई पैरोडियाँ सुनाई जिन्हें सुनकर श्रोताओं ने ठहाकों की झड़ी लगा दी। अन्त में कवि सम्मेलन का संचालन कर रहे हास्य कवि एवं व्यंग्यकार सुरेन्द्र दुबे ने 'मंत्री की आत्मा' शीर्षक से एक उत्कृष्ट व्यंग्य रचना का पाठ करते हुए कहा–

न लाज हे न लिहाज है
धर्म हे ना शर्म है
न भय हे न प्रीति है
दर असल ये
आज के हिन्दुस्तान की राजनीति है।

सुबह तक चले इस कवि सम्मेलन को श्रोता लम्बे समय तक याद रखेंगे।[11]

बिजनौर में कवि सम्मेलन

अतुल कुमार गुप्ता

जिला कृषि एवं औद्योगिक प्रदर्शनी बिजनौर में हुए कवि सम्मेलन में कवियों ने अपनी कविताओं से ठहाके लगवाए तो तभी संजीदगी से सोचने के लिए मजबूर कर दिया। कभी बना तो कभी श्रोताओं को तालियें की गड़गड़ाहट करते रहने के लिए मजबूर कर दिया।

डॉ. किर्ती काले द्वारा प्रस्तुत की गई सरस्वती वंदना के उपरान्त हास्य कवि डढा बनारसी ने शुरुआती ठहाके लगवाए। देश भक्ति से ओत–प्रोत कविताओं का पाठ करते हुए श्रीकान्त श्री (मेरठ) ने कहा –

जिन वीरों को मैंने गाया सबने प्राण गंवाये है
तब जाकर इस आजादी को हम वापस ला पाये है
लैकिन कैसी आजादी हे हम सब कुछ ही भूल गये
उनको कैसे भूल गये जो पल में फाँसी झूल गये

हास्य रस की धारा को प्रवाहित करते हुए सुनील जोगी ने कहा –

आपका दर्द मिटाने का, हुनर रखते है
जेब खाली है, खजाने में नज़र रखते है
अपनी आंखो में भले, आंसुओं का सागर है
मगर जाहँ को हंसाने का जिगर रखते है

पद्मभूषण गोपालदास 'नीरज' ने हास्य के इस वातावरण को संजीदगी देते हुए कहा–

नेताओं ने गाँधी कसम तक बेची
कवियों ने निराला की कलम तक बेची
मत पूछ इस दौरा में कक्या कक्या नहुआ
इंसानो ने आंखों की शरम तक बेची

ओजस्वी कवि अर्जुन सीसोदिया ने अपनी पहचान के मुताबिक माहौल को गमीते हुए कहा–

शेखर, सुभाष अशफाक की धरा है
यहाँ क्रान्ति का प्रवाह कभी रुकने न पायेगा
सौ करड़ो जनका के दिल में लहरता ये
लाडला तिरंगा कभी झुकने न पायेगा

देश की शीर्षस्त कवयित्री डॉ. कीर्ति काले आज अलग ही रंगत में थी। उन्होंने श्रृंगारिक गीतों से हटकर देश और समाज में हो रहे मूल्यों के विघटन को कुछ इस प्रकार रेखांकित किया–

बंधे हुए थे जो सदियों से एहसासों के तारो में
वो ही रिश्ते बदल गए है अब नंगी तलवारों में
अपनी मोटी चमड़ी पर अब कोई फर्क नहीं पड़ता
हमने एहंसासों की गुड़िया चुन डाली दीवारों में
जोड़ तोड़ करने में देखो कैसी तोड़ मरोड़ हुई
लोकतंत्र नीलाम हो गया संसद के गलियारों में

अपने प्रेम गीतों के लिए मशहूर डॉ. विष्णु सक्सेना ने अफने श्रृंगारिक गीतों से समुचे वातारवण के प्रेममय बनाने के बाद कहा–

बनेगी बात नई, सोच बदल के देखो
झोपड़ों में रहो पर ख्वाब महल के देखो
खुलेगी खिड़किया और आसमां अपना होगा
जरा हिम्म्त कोर और घर से निकल के देखो

मंच का संचालन कर रहे प्रवीण सुक्ल ने नेताओं के भ्रष्ट चरित्र को कुछ इस प्रकार उजागर किया–

सचमुच बड़े हमान हमारे नेताजी
लोकतंत्र की शान हमारे नेताजी
कोठी हे अब चार मगर कुछ दिन पहले
बेच रहे थे पान हमारे नेताजी

हास्य–रस के सर्वश्रेष्ट कवि ओमप्रकाश आदित्य ने अपनी ख्याति के अनुरूप स्तरीय हास्य कविताओ का पाठ करते हुए खूब हंसाया उन्होंने कहा–

मंत्री बोली बोल रहे थे नोट लादकर ठेले में,
एम .पी. बिकते थे दिल्ली में ज्यों पशु बिकते मेले में

कारगिल युद्ध में शहीद हे सैनिकों के शौर्य को नमन करते हुए ओजस्वी काव्य के तेजस्वी, गीतकार हरि ओम पंवरा ने कवि सम्मेलन के उत्कर्ष के क्षण प्रदान किए। उन्हेंने कहा–

जिन बेटों ने पर्वत काटे हैं अपने नाखूनों से
उनकी कोई चाह नहीं है दिल्ली के कानूनो से
वो औरत सारी दुनिया का बोझ सर ले सकती है
जो अपने पति की अर्थी को भी कन्धा दे सकती है।

इस बेहद सफल कवि सम्मेलन में मुरादाबदा मंडलायुक्त उमाधर द्विवेदी मुख्य अतिथि थे तथा जिलाधिकारी पी. गुरु प्रसाद तता पुलिस अधीक्षक ओ. पी. सागर विशिष्ट अतिथि थे। तीनों अधिकारीगण ने सागर कार्यक्रम को समापन तक सुना और सराहा।[12]

गुवाहटी में कवि सम्मेलन

सुरेश चन्द पिंगवा

गुवाहटी में पूर्वात्तर रेल्वे के राजभाषा विभाग ने मालीगाँव सिथत रंगभवन ओडिटोरियम में हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें मंचस्थ कवियों ने अपनी हास्य–व्यंग्य की रचनाओं से श्रोताओं को न केवल हंसा–हंसा कर लोट पोट कर दिया अपितु उन्हें सोचने पर भी मजबूर किया।

डॉ. किर्ती काले द्वारा प्रस्तुत सरस्वती वंदना के उपरान्त हास्य–व्यंग्य कवि गौरव शर्मा ने कार्यक्रम को प्रभावी शुरुआत दी। उन्होंने छोटी–छोटी बातो से श्रोताओं को इतना हंसाया कि कार्यक्रम शुरुात में ही जम गया। एक रचना में उन्होंने कहा–

दुनिया में हर आदमी
मरने से डरता है
लेकिन जीने की हसरत में
रोज कोई बार मरता है
अधूरी उम्मीदों की व्यथा हे
मानव जीवन
कस्तूरी मृग की कथा है
इसी मृगतृष्णा में जी रहे हैं
हम अपने ही आँसू पी रही है

हास्य–व्यंग्य नन्द किशोर 'अकेला ने अपनी दुबली–पतली काया पर रोचक टिप्पणीयाँ करके इस हास्य यात्रा को आगे बढ़ाया।पहलवान से भिरडे शीर्षक से प्रस्तुत की गई उनकी रचना से श्रोताओं को खूब हंसाने के बाद रचना के अन्त में उन्होंनमे

कहा–

मेरी अवल ने
तेरी ताकत को
धुल चटाई है
अरे अक्ल के अन्धे
अवल ने तो ताकत पर
हर युग में विजय पाई है।

लोकप्रिय हास्य कवि अशोक सेवदा ने अपने निराले अन्दाज में नेता द्वारा तम्बाखू बनाते हुए भाषण देने के प्रसंग पर श्रोताओं को इतना हंसाया कि श्रोता पेट पकड़कर हंसते रहे। देवताओं की संसद शीर्षक से प्रस्तुत रचना में उन्होंने नौजवानो से कहा–

नशाखोरी एक औदित्य ढूंढ़ने के लिए
भगवान शिव की ओट में मत जाओ
भगवान शिव की तरह सम्मान पाना हे तो
एक बार समूचा जहर पीकर दीखाओ

कवि सम्मेलनों की सर्वाधक लोकप्रिय कवयित्री डॉ. किर्ती काले ने प्रेम गीतों का पाठ करके कवि सम्मेलन को ऊँचाई गरिमा प्रदान की अपने साहित्यिक गीतों के बीच–बीच में उन्होंने अनेक चुटीले प्रसंग सुनाकर श्रोताओं से खूब ठहाके लगवाए। 'स्वेटर' शीर्षक से प्रस्तुत एक गीत में उन्होंने कहा–

उड़ चला हे दिन
लगाए धूप वाले पर
याद फिर बुनने लगी है
मखमली स्वेटर

कवि सम्मेलन का सफल सार्थक ओर रोचक संचालन कर रहे विश्व विख्यात हास्य कवि सुरेन्द्र दुबे जब काव्य पाठ के लिए खड़े हुए तो पूरा होल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। उनके प्रत्येक वाक्य पर श्रातओं ने खूब ठहाके लगवाए।उनका एख घण्टे का काव्य पाठ हास्य –व्यंग्य विधा की सफलता और सार्थकता का मानक बन गया। मंच के चुटकलेबाज कवियों पर प्रहार कतरे हे उन्होंने कहा–

किसी को अनुमान न था कि कविता

इतने कम समय में

इतना लम्बा सफर तय कर पाएगी

इलियट के चलकर

इंडियट तक आ जाएगी

कार्यक्रम के आरम्भ में पूर्वात्तर रेल्वे के जी.एस. आशुतोष स्वामी ने दीप प्रज्ज्वलन किया। वे मुख्य अतिथि के रुप में पूरे कार्यक्रम के दौरान सपत्नीक उपस्थित रहे। स्थानीय कवि राधेश्याम उपाध्याय ने भी काव्य पाठ किया।[13]

गांधीधाम में स्थापना दिवस के उपलब्ध में कवि सम्मेलन

गांधीधाम में गांधीधाम स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें कवियों ने अफने काव्य पारठ से रस वर्षा की।

प्रसिद्ध कवयित्री डॉ. किर्ती काले द्वारा प्रस्तुत सरस्वती वदंना के बाद गौरव शर्मा ने अफने कावट पाठ से कार्यक्रम को अच्छी शुरुआत दी। उन्होंने दैनिक जीवन से जुड़े अनेक हास्य प्रसंगों के जरिये श्रोताओं को खूब हंसाया। एक रचना में उन्होंने कहा–

बस स्टाप पर खड़े लोग
भिखारी को दान देकर
बस का इन्तजार करने लगे
लेकिन भिखारी टेक्सी करके
भीख मांगने के लिए
अगले स्टाप पर चला गया
अबतो आप समझ ही चुके होंगे कि
लोकतंत्र में मतदाता
भिखारियों को हाथों
किस तरह छला गया

ओजस्वी गीतकार डॉ. कैलाश मण्डेला ने अपने खास अन्दाज में सामयिक विषयों पर दमदार रचनाओं का पाठ करके श्रोताओं की खूब तालियाँ बटोरी अपनी रचनाओ में उन्होंने कश्मीर की वेदना तथा राजनीति का अपराधीकरण जैसे विषयों को बखूबी उठाया। एक रचना में उन्होंने कहा–

किसने घर में दिया निमंत्रण

क्रन्दन और कलेश को

जाने किसकी नजर लगी है

मेरे प्यारे देश को

एक अन्य रचना में उन्होंने राष्ट्रगीत वन्देमातरम् के सम्मान में कहा–

वन्दे मातरम् क्या हे पूछो अधिकार से

फांसी चढे शहीद के रोते परिवार से

जलियावाले बपाग की हर एक दीवार से

काल कोठरियों के गहन अंधकार से

उन वीरों को नमन

सिर बांध के कफन

प्राण किए हवन

यश उनका नहीं भुलाइये

सब वन्दे मातरम् गाइये

प्रसिद्ध कवयित्री डॉ. किर्ती काले ने मधुर कंठ से हास्य–व्यंग्य और श्रृंगार रस से ओतप्रोत गीतों की भागीरथी को प्रवाहित किया। उन्होंने साफ–सुधरे साहितियक गीतों का पाठ करके श्रोताओं के मन पर गहरी छाप छोड़ी।

उन्होंने पहले – पहले प्यार के अहसास को कुछ इस प्रकार व्यक्त किया–

जिन पैरों में

उछला करता था बचपन

कैसी बात हुई कि

बदल गया दर्पण

होता हे उन्मुक्त

अनोखा ये बन्धन

रोम रोम पूजा

सांसे चन्दन–चन्दन

बन मांगे सब कुछ मिल जाता

आँखो के व्यापार में

शायद ऐसा ही होता है

पहले–पहले प्यार में

उनके काव्य पाठ का जादू श्रोताओं के सिर चढ़कर बीला। जब तक उन्होंने काव्य पाठ किया वे उनके गीतों की लय के साथ झूम–झूम कर तालियाँ बजाते रहे।

जाने–माने हास्य कवि एवं व्यंग्यकार सुरेन्द्र दूबे ने अपने लम्बे काव्य पाठ से श्रोताओं को हँसा–हँसाकर लोट–पोट कर दिया। उनके द्वारा बोली गई हर बात पर खूब ठहाके लगे। जब तक वे काव्य पाठ करते रहे श्रोतागण ठहाके लगाते रहे। अपने यादगार काव्य पाठ में उन्होंने नए नए विषयों पर मौलिक अन्दाज में हास्य उत्पन्न किया। मार्कटिंग के युग में नियति को उन्होंने कुछ इस प्रकार व्यक्त किया–

रावण कवि
काव्य पाठ करने आएगा
वह किसी से भी नहीं डरेगा
अपने अक मुंह से कविताएँ सुनाएगा
बाकी नौ मुंहो से
खुद ही वाह–वाह करेगा
बीस हाथों से तालियां बजाएगा
मार्केटिंग का युग समाज को
उस खतरनाक मोड़ पर पहुँचाएगा
जहाँ वह तरक्की के सारे रिकार्ड तोड़ेगा
बदले में मनुष्य को रावण बनाकर छोड़ेगा।
क्योकि रावण
कन्झमशन जेनरेट करता है
प्रोडक्शन के टारगेट सेट करता है

इसी विषय पर अन्य रचना में उन्होंने कहा–

सब्जी वाले ने ज्योंही
चार किलो बैगन के साथ
हवाई यात्रा का टिकट मुफ्त वाली
स्कीम समझाई

मैंने बैगनों पर नजर घुमाई

और कहा–

बैगन तो काने है

यह ग्राहक के साथ छल है

वह बोला

टिकट कोन सा ओरीजनल है?

कार्यक्रम का संचालन प्रसिध्ध हास्य–व्यग्यकार सुरेन्द्र दुबे ने किया। हजारों श्रोताओं की उपस्थिति में रात बारह बजे एक बड़ा केक काटकर गांधीधाम का स्थापना दिवस धूम–धाम से मनाया गया।

इस अवसर पर गुजरात सरकार के मंत्री श्रेत्रीय विधायक एवं नगरपालिका के चैरमैन तथा चेम्बर ओफ कोसर्म के पदाधिकारी मौजूद थे। कार्यक्रम इतना अधिक सफल रहा कि इस लम्बे समय तक याद किया जाएगा।[14]

रेवाडी में कवि सम्मेलन

गजानन्द शर्मा

रेवाड़ी के जिमखाना क्लब में लोक कवि मास्टर नेकीराम साहित्य एवं लोकनाट्य कला संरक्षण परिषद द्वारा हरियाणा के प्रसिद्ध सांवी व कवि स्वर्गीय मास्टर राजेन्द्र सिंह जी की पुण्यतिथि की पूर्व संध्या पर देश जगाओ बेटी बचाओ विषय पर आधरित कवि गोष्ठी का आयोजन किया गया। कवि गोष्ठी में हास्य व्यंग्य के ख्यातनाम कवि हलचल हरियाणवी ने भ्रूण हत्या पर करारा व्यंग्य करते हुए श्रोताओं के हंसने कि लए मजबूर कर दिया। उन्होंने कहा–

सोले आना सची बात घेटा लिंग अनुपात
आगे–आगे दिन में तारे नजर आएंगे
पितरों का कोप तो बढ़ेगा और भीतो जब
आधे सारे आदमी कुँवारे मर जाएंगे

गीतकार श्रीचन्द 'भवर' ने भ्रूण हत्या पर व्यंग्य करते हुए कहा –

हम चल दिए हे राह में तुम साथ आइए
बेटी कली है बाग की इसको बचाइए

व्यंग्य डॉ. शिवताज सिंह ने बेटी की महिमा का उल्लेख करते हुए कहा–

तेरे खून की मूरत री माँ
इसी बेदर्दी ते मारै ना
तेरे आंगण का बणु उजाला
घाट मौत कै तारै ना

कवि भोलायत शास्त्री 'भयंकर' ने अपनी कविता से भ्रूण हत्या रोकने की नसीहत दी। उन्होने कहा –

कई महिने पेट में खूब करी अठखेलियाँ
गर्भपाती जलजलों में घंस रही है बेटियाँ

गीतकार राजेश प्रभाकर का अन्दाज ए बया कुछ इस प्रकार था–

ममता की बाहों में आने दे माँ
आने से पहले ना जाने दे माँ

हरियाणवी रचनाकार महाशय केदारमल ने बेटी विषय पर बीलते हुए कहा–

बेटी नै रहे मार गर्भ मै
यो जुल्म कमाया जा सै
बेल वेश की चल्या करै
जब बेटा ब्याहा जा सै

डॉ. उमाशंकर यादव ने कहा –

माँ के पाँव तले सारे तीर्थ धाम
पांव छुए और मिल गए
साई, अल्लाह, राम

ओजस्वी कवि संजय पाठक ने गम्भीर होते हुए कहा–

मेरा जिस्म प्यार पाने को
सड़खों पै चिल्लाएगा
मेरी माँ अब तू ही बतला
मुझको कौन बचाएगा

हास्य कवि आलोक भाण्डोरिया की गजल को भरपूर सराहना मिली। उन्होंने कहा–

कहता है कौन सर पे पड़ा भार बेटियाँ

माता पिता के गले का है हार बेटिया
निकल गई है बेटों से भी कहीं आगे
चला रही है आज तो सरकार बेटियाँ

कवि राजेश 'भलवकड़' ने अपनी रचना में कहा –

हालात ये ओरतों के बिगड़े नहीं हमेशा मिया
बहुओं को जलाने में आगे ही हे माँ–बेटियाँ

मंच संचालन करते हुए सत्यवीर नाहड़िया ने अपनी हरियाणवी रचना के माध्यम से कहा–

चोरी–चोरी गभझ में छोरी दुनिया सै भरवारी

कवयित्री लाजकोशल ने कहा–

आंधी का तो के कहणा
छोरी म्हारी तूफान ते टकरावै से

इस कवि गोष्ठी में राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित महिला सरपंच श्रीमती रोशनी देवी ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। गोष्ठी की अध्यक्षता परिषद के अध्यक्ष डॉ. शिवताज सिंह ने की।

इस विषय पर बोलते हुए मुख्य अतिथि श्रीमती रोशनी देवी ने कहा कि जब तक लोगो की मानसिकता में बदलाव नहीं आएगा तब तक लिंगानुपात की स्थिति में सुधार नहीं होगा।

भरपुर सिंह 'भरपुर', राम किशन आर्य, भूपसिंह 'भारती', प्रेमपाल, रविन्द्र, डॉ. गौतम इलाहाबादी, जितेन्द्र भारद्वाज, परमानन्द वसु, कवियित्री सुनील यादव ने भी कविता का पाठ किया । जिमखाना क्लब के मेनेजर नन्द किशोर ने सभी को धन्यवाद किया।

मालापुरा मे कवि समम्मेलन

मालापुरा में केन्द्रीय भेड़ ऊन संस्थान में काय गोष्ठी का आयोजन किया गया। कवि नाथूलाल शर्मा ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की। दुर्गा लाल 'भावुक' ने राष्ट्रभाषा हिन्दी पर सारगर्भित गीत प्रस्तुत किया। कविवर लक्ष्मण सांखला उपअधीक्षक ने भ्रूम–हत्या पर मार्मिक कविता प्रस्तुत की तथा साथ ही पुलिस व्यवस्था पर व्यंग्य रचना द्वारा श्रोताओं का भरपूर मनोरंजन किया। मालपुरा शहर के प्रख्यात कवि आर.एल. 'दिपक' ने वर्तमान हालात पर कहा–

पहले अंग्रेजों ने लूटा अब वोटों के मंगतो ने
पहले अंग्रेजी ने लूटा, अब अंग्रेजी भक्तों ने
भारत के टुकड़े करने की साजिश अभ भी जारी है
जिन्ना और जयचंदों को नेता चुनने की बारी है

कवि कौशल 'कोशलेन्द्र' ने मुम्बई के बम काण्ड के अमर शहीद करकरे की विधवा की चुड़ियों पर भाव्रपूर्ण कविता सुनाई।

कवि दिनेश दिवाकर ने कहा–

सफेद खादी में नाग काले
मजे से भारत के पल रहे हैं
मतो का जनता से दूध पीकर
उसी पे विष ये उगल रहे है

हास्य कवि राम किशन 'बेतुक' ने ''सारे जहाँ से अच्छा इंडिया हमारा'' तथा 'ई उमर म भी पुलिस हालों की निजरा म्हेन ढूंढ री है'

कविता सुनाकर उपस्थित श्रोताओं को लोटपोट कर दिया। कवि नाथू लाल शर्मा ने ''गोरा–गोरा' घुंघट म चांद को उजास, साजन म्हारे थाणादार म ऊंकी धाणांदारणी। गीत सुनाकर श्रृंगार रस की उपस्थिति दर्ज करवाई।

काव्य गोष्ठी की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक डॉ. शेख अब्दुल करीम ने की। संचालन कविवपर दुर्गा लाल 'भावुक' ने किया।[15]

भीलवाड़ा में कवि सम्मेलन

लोक कवि मोहन मण्डेला की स्मृति में साहित्य सृजन कला संगम द्वारा शाहपुरा में प्रतिवर्ष होनेवाला कवि सम्मेलन अपने आप में एक अनूठा कवि सम्मेलन है। चूंकि यह कार्यक्रम कवि पिता की स्मृति में कवि पुत्र द्वारा अपनी मित्र मण्डली के सहयोग से किया जाता है इसलिए यह कवि सम्मेलन अपने आप में एक आत्मीय आयोजन बन चुका है। सारे बड़े–बड़े कवि इसमें नाम मात्र सके मानदेय पर उपस्थित होकर इसे सफल बनाते रहे है। आयोजन समिति ने नगर के सुची श्रोताओं का श्रोता संघ बनाकर इसे व्यवस्थित रूप से आयोजित करने तथा सभी का सहयोग लेने का अभिनव प्रयोग किया है।

29 नवम्बर 1996 को लोक कवि मोहन मण्डेला जी का निधन हुआ था। उनकी प्रथम पुण्य तिथि पर 1997 से ही निरंतर यह कवि सम्मेलन साहित्य सृजन कला संगम

द्वारा आयोजित किया जा रहा है। उल्लेखनिय है कि इस संस्था की स्थापन स्वंय स्व. लोक कवि मोहन मण्डेला जी ने ही अपने नगर में नए रचनाकार्य को प्रोत्साहन देने तथा साहित्य का वातावरण बनो रखने के लिए पावन उदेश्य के लेकर की थी। वे जीवन भर इस ध्येय को समर्पित रहे। उनके निधन के पश्चात मण्डेला की याद को चिरस्थाई बनाने के उद्देश्य से यह कवि सम्मेलन अस्तित्व में आया।

प्रतिवर्ष इस कवि सम्मेलन के सफल आयोजन के लिए नगर पालिका शाहपुरा द्वारा टेन्ट, लाइट, पानी आदि की व्यवस्था की जाती है। आमंत्रित कवियों और अतिथियों के ठहरने की व्यवस्था वेलकम होटल के सचालक दीनदयाल मारु एवं रमेश मारु द्वारा की जाती है। राधेश्याम बहेडिया, ओमप्रकाश मणियार, रामनिवास बाछड़ा कृष्ण गोपाल मूंदड़ा माणक चन्द गोधा, घीसालाल मोदी, यशपाल पाटनी का ार्थिक सहयोग प्राप्त होता रहा है।

इस कवि सम्मेलन के आयोजन के संयोजक की मुख्य भूमिका में कैलाश मण्डेला तन मन धन से जुटे रहेत है। साहित्य सृजन कला संगम के अध्यक्ष जयदेव जोशी, सत्येन्द्र मण्डेला, दिनेश बन्टी, विष्णु दत्त शर्माष शिव प्रकाश जोशी, भँवर भड़ाका, मूलचंद, पेशपानी, राम प्रसाद पारीक, गोपाल पंचोली, राजेश 'निराला', तेजपाल उपाध्याय, सत्यव्रत वैष्णव, यशपाल पाटनी, रमेश मारु, दनिेश गोधा, पवन वैष्णँव आदि लोग आयोजन की व्यवस्था करने में अपना सारा काम-काज छोड़कर जुटे रहेत है। कवि सम्मेलन समाचार के सम्पादक सुरेन्द्र दुबे प्रतिवर्ष परोक्ष रुप से अपने समृद्ध सम्पर्को को इस आयोजन की सफलता में झौकने के लिए तत्पर रहेत है। इस प्रकार सबके सहयोग से यह कवि सम्मेलन एख यादगार कवि सम्मेलन बना हुआ है।

इस कवि सम्मेलन में पिछले 9 वर्ष से राजस्थानी भाषा के किसी एक वरिष्ठ गीतकार को ''लोक कवि मोहन मण्डेला स्मृति लोक साहित्य सम्मान'' से अलंकृत किया जाता है। कवि सम्मेलन को सुनने के लिए आस-पासके क्षेत्र से हजारों श्रोता आते है। हजारो श्रोताओ तथा, उर रास काव्य पाठ के निमित्त पधारे राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त रचनाकारों की उपस्थिति से इस सम्मान का महत्व नागरिक अभिनन्दन जैसा हो जात है। इश कवि सम्मेलन में सुरेन्द्र दुबे, बालकवि बैरागी, डॉ. किर्ती काले, नरेन्द्र मिश्र, जगदीश सोलंकी, दुर्गादान सिंह गोड़, ओम व्यास, स्व. श्याम ज्वालमुखी, किरण जोशी, सम्पत 'सरल', विनीत चौहान, रास बिहारी गौड़, बुद्धि प्रकाश, दाधीच, धर्मेन्द3 सोनी, नंद किशोर 'अकेला', छमचक मूल्यानवी, अनु 'सपन', कविता 'किरण', आरिका 'शबनम', रमेश शर्मा, राज गोपाल सिंह, वेदव्रत वाजपेयी देवल, 'आशीष', देवकरण

मेघवंशी सहित सैकड़ों ख्यातनाम कवि काव्य पाठ कर चुके है। यह का सम्मेलन समाज में यह सार्थक संदेश देने में सफल रहा है कि पुरखो की याद को चिरस्थाई बनाने का काम नई पीढ़ी को संस्कारित करने के लि बहुत जरुरी है। यह कवि सम्मेलन किसी कवि को स्मृति में जन सहयोग से निरंतर आयोजित होनेवाला महत्वपूर्ण कवि सम्मेलन बनता जा रहा है।[16]

शाहपुरा में कवि सम्मेलन

शाहपुरा में साहित्यिक संस्था साहित्य सृजन कला संगम के तत्वावधान में आयोजित कवि सम्मेलन भोर तक चला जिसमें सन 2008 का लोक कवि मोहन मण्डला स्मृति लोक साहित्य सम्मान से राजस्थानी व हिन्दी के मधुर गीतकार पं. विश्वेश्वर शर्मा को नवाजा गया।

कवि सम्मेलन की शुरुआत रमेश भुलक्कड़ ने अपनी ओजस्वी कविताओं से की। तत्पश्चात हास्य रस के युवा कवि महेन्द्र समर्थ ने अपनी हास्य रचनाओं से श्रोताओं को हंसाने का प्रयास किया. गोपीनाथ चर्चित ने हास्य-व्यंग्य की रचनाओं से न केवल खूब हंसाया बल्कि वातावरण को चिन्तन परक बना दिया। उन्होंने गरीबी हटाने का उपाय बताया-

भ्रष्ट नेताओं को मार भगाओ तो
गरीबी का नाम ओ निशान मिट जाएगा
जब मच्छर ही नही रहेगें तो
मलेरिया कहाँ से आएगा

अराई के हास्य व्यंग्य कवि कमल माहेश्वरी अपनी प्रसिद्ध रचना खुजली सुनाकर श्रोताओं को लोटपोट कर दिया-

उन्होंने कहा-

खुजली का ये रोग
समाज में इश कदर
बढ़ रहा है
खुजली किसी के चल रही है
गड्ढा किसी के पड़ रहा है

एक से बढ़कर एक व्यंग्य बाण छोड़े। श्रोताओं ने उन्हें खूब पसंद किया।

वीर रस के ख्याति प्राप्त कवि अब्दुल गफ्फार ने मुम्बई में हुए आंतकी हमले पर शोख व्यक्त करते हुए कहा–

राष्ट्र समूचा जले जाहँ
हम कैसे गाते–मुस्काते?
सभी घरों में मावस थी
हम कैसे ईद मना पाते

राज्सथानी भाषा के हास्य कवि हरिओम पारीक 'निर्दोष' ने अफनी एक रचना भैस–भैसा और वेलेन्टाईन डे में कह–

भैंस सरम सूँ लजाबा लागगी
नज़र नीची पूँछ ऊँची करी
अर गोबर करके भागगी

पूरी तरह रंगत में आ चुके इस आयोजन में डॉ. विष्णु सक्सेना ने गीतों की गंगा बहाई। उन्होंने जब चार–चार पंकित्यों से अफने रस का माधुर्य बिखेरा तो श्रोता वसमोर वंसमोर कहने लगे। अपमे एख गीत में उन्होंने कहा–

सपनों में अपनों के हाथ दे गया।
मेरी रातों की नींद ले गया
डाकिया डाक दे गया

गीतों के इस सिलसिले को दुर्गादान सिंह गौड़ ने आगे बढ़ाया। उन्होंने हाकौती के अपने गीतों से समाँ बाँध दिया। अपने एक गीत में कह–

चने देख–देख मूँ जी भ्यो
जाणे चांद चुकू में पी ल्यो
बिछड़ी तो आई दाद धणी
पलकां पर उग आई नागफळी
मिलता ही भूंजो सील्यो

डॉ. किर्ती काले ने अपने मखमली गीतों का जादू जब बिखेरा तो सारा वातावरण रसमय हो गया। उन्होंने कहा –

तुम्हारी आँख में शायद सभी सपने सुहाने है
हमारी याद मे भी तो अभी गुजरे जमाने है।

पता है मेरे गीतों की किताबें क्यों महकती है

हमारे दिलके तहखाने में खुशबु के खजाने है।

कवि डॉ. कैलाश मण्डेला ने अपनी ओजस्वी आवाज में वर्तमान राजनीति सामयिक रचना प्रस्तुत की उन्होंने कहा–

लोकतंत्र की लुटिया डूबी घायल देश तमाम जी

गुण्डे घुस गए राजनति में क्या होगा अंजाम जी?

कवि पं. विश्वेश्वर शर्मा ने मेवाड़ी भाषा में कुछ साहित्य गीतों का पाठ करने के पश्चात् पैरोड़ियों का पाठ करके खूब ठहाके लगवाए। ख्याति प्राप्त हास्य कवि सुरेन्द्र दुबे ने अफने चिरपरिचित अंदाज में हास्य की फुलझड़ियां बिखेरी। उन्होंने अपनी प्रसिद्ध रचना 'जब मेरा अपहरण हुआ' का पाठ किया। श्रोताओं को खूब हंसाने के बाद उन्होंने गंभीर होकर कहा–

मेरी समझ में इससे यह बात आती है

आतंकवाद से सिर्फ सरकारे नहीं

आम आदमी की हिम्मत टकराती है

कवि सम्मेलन का संचालन सुरेन्द्र दुबे ने किया।[17]

लाल किले में कवि सम्मेलन

सुरेन्द्र 'सार्थक'

दिल्ली में हिन्दी अकादमी दिल्ली द्वारा लाल किले के फुटबाल मैदान में गणतंत्र दिवस के उपलभ्य में आयोजित वार्षिक कवि सम्मेलन अपनी प्रतिष्ठा के अनुरुप सफल रहा।इस कार्यक्रम में जहां एक ओर कवियों ने स्तरीय रचनाओं का पाठ करके आयोजन की गरिमा बढ़ाई वहीं दूसरी ओर प्रसिद्ध कवि. डॉ. अशोक चक्रधर ने अपने समर्त संचालन से कार्यक्रम को सार्थकत प्रदान करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि दिल्ली सरकार की स्वास्थ्य मंत्री किरण वालिया प्रसिद्ध कवयित्रि डॉ. किर्ती काले के काव्य पाठ से सर्वाधिक प्रभावित हुई तथा उन्होंने उनकी मुक्त कण्ठ से सराहना भी की।

प्रथम कवि के रूप में प्रस्तुत किे गए पवन दीक्षित ने कार्यक्रम को सार्थक शुरुआत देते हुए कहा–

ये मंजर सियासी खतरनाक है

कि सारी फिजा ही खतरनाक है

मेरे एबको भी बताए हुनर

मेरे यार तू भी खतरनाक है

कवि एवं पत्रकार विजय किशोर 'मानव' का अन्दाज ए बयां कुछ इस प्रकार था–

नींद आई तो ख्वाब देखेंगे

इस दफा बेहिसाब देखेंगे

हम अपने आस–पास के चेहरे

उतार कर नकाब देखेंगे

पवन जैन ने वर्तमान व्यवस्था की विडम्बनाओं को व्यक्त करते हुए कहा–

संसद में नोटों के बंडल

सड़क पे फूटे बम

साठ साल की आजादी में

कहां आ गए हम?

हिन्दी गज़ल के चर्चित हस्ताक्षर डॉ. धनंजय सिंह ने व्यवस्था की विडम्बनाओं का पर्दाफाश करते हुए कहा –

मैं भला चुप क्यों रहता मुझको तो मालूम था

नेवलों के भाग्य का अब फैसला करते हैं सांप

डरके अपने बाजुओं को लोग कटवाने लगे

सुन लिया है आस्तीनों में पला करते हैं साँप

पद्मश्री डॉ. कनैया लाल 'नंदन' का अन्दाज ए बयां कुछ अलग था। उन्होंने कहा–

मुझे स्याहियों मे न पाओगे

मैं मिलूँगा लाखों की धूप में

मुझे रोशनी की तलाश है

मैं किरन–किरन में बिखर गया

लोकप्रिय कवयित्री डॉ. कीर्ति काला ने अपने सस्तरीय गीत का फूरे सामर्थ्य से पाठ किया। वह यह सबित कने में सफल रही की लेखन और पाठ ती क्षमताओं में

SMT. HANSA MEHTA LIBRARY
The M. S. University of Baroda

किस गजब के संतुलन की वजह से वह कवि सम्मेलन जगत की अत्यन्त लोकप्रिय कवयित्री है। उन्होंने कहा–

जो देखा है सूरदास ने
आँखो वाले क्या देखेंगे
जो महसूस किया मीरा ने
ज्ञानी धनी क्या सोचेंगे?
जिसने अपने को पहचाना
जिसको मन का मिला खजाना
दुनिया भर की दौलत
उसके आगे है मिट्टी की ढेरी

हास्य व्यंग्य के प्रसिद्ध कवि महेन्द्र अजनबी ने भूतों के आपसी वार्तालाप के जरिये आज की सभ्यता पर करारा व्यंग्य करते हुए कहा–

आदमी
आदमी से बहुत डरता है
रात में तो क्या दिन में भी
घर से बाहर नहीं निकलता है

कर्नल वी. पी. सिंह ने ओजस्वी काव्य का परचम फहराते हुए कहा–

आधे हृदय से मित्रता या
शत्रुता दोनों गलत हैं
प्रेम हों या युद्ध हो
भरपूर होना चाहिए
या तो शत्रु शान्ति का
सम्मान करना सीख ले
या तो उसका गर्व
चकनाचूर होना चाहिए

अपनी एक अन्य रचना में उन्होंने शत्रु को नायाब तरीके से ललकारते हुए इस प्रकार चेतावनी दी–

लाख पर्दो से करो तुम वार हम पर
हम तुम्हारे रूप की पहचानते हैं
आग है हम मत करो खिलवाड़ हमसे
हम जलाने का हुनर भी जानते हैं

डॉ. सरिता शर्मा कुछ अच्छे मुक्तको के साथ एक गीत का भी पाठ किया। अपने गीत में उन्होंने कहा–

नेह की देहरी पर दिया बालकर
कर रही हूं प्रतीक्षा चले आईए

हास्य–व्यंग्य के कवि प्रवीण शुक्ल ने कहा–

जीना है जिन्दगी तो जिओ प्यार की तरह
क्यों जी रहे हो तुम इसे तकरार की तरह
दीखज मे भी दो गज जमीं उसको न मिलेगी
माँ–बाप जिन्हें लगने लगे भार की तरह

हिन्दी गीत ग़ज़ल के हस्ताक्षर दिनेश रघुवंशी ने माँ की महिमा का बखान करते हुए कहा–

बड़ी छोटी रकम से घर
चलाना जानती थी मां
कमी थी पर बड़ी खुशियाँ
जुटाना जानती थी माँ
मैं खुशहाली में भी रिश्तों में
बस दूरी बना पाया
गरीबी में भी हर रिश्ता
निभाना जानती थी माँ

प्रसिद्ध गीतकार रमेश शर्मा ने अपनी प्रतिष्ठा के अनुरुप उत्कृष्ठ हिन्दी गीतों का पाठ करके खूब दाद बटोरी। उन्होंने दाद आती है मां गीत का पाठ किया जिसे श्रोताओं की भरपूर सराहना प्राप्त हुई। इस गीत में उन्होंने कहा–

गलती मेरी होती रुठता भी मैं ही

वो उल्टे समझाते थी
अपराधी भाव से उठाके आधी रात
मुझे हाथों से अपने खिलाती थी
जब दौड़-धूप से दिन भर थका
बिन खाए ही सो जाता हूँ
याद आती है माँ, याद आती है माँ

हिन्दी गजल के जाने माने हस्ताक्षर लक्ष्मी शंकर वाजपेयी ने सधे हुए लेखन को कर्णप्रिय तरन्नुम में प्रस्तुत किया तो श्रोता बार-बार दाद देने को मजबूर हो गए. उन्होंने कहा-

ऐसी शमा जलाने का क्या फायदा मिला
जो जल रही हो और कहीं रोशनी न हो
हर पल ये सोच-सोच के नेकी किए रहो
जो सांस ले रहे हो कहीं आखरी न हो
इस बार जब भी धरती पे आना ए कृष्ण जी
दो चक्र लेके आना भले बांसुरी न हो

ओजस्वी कवि मदन मोदन 'समर' ने आतंकवादियों से जूझते बहादुर पुलिस कर्मियों के बलिदान को प्रणाम करते हुए कहा-

बीस जवानो की कुर्बानी ने
भारत का मान रखा
अपनी लाशे बिछा, नींव में
उपर हिन्दुस्तान रखा

हिन्दी गीत ग़ज़ल के उज्जवल हस्ताक्षर डॉ. कुंवर बेचैन ने अपनी प्रतिष्ठा के अनुरुप चिर परिचित गुनगुनाहट का जादू बिखरते हुए कहा-

अब के कोई कसर
न रह जाए निगरानी में
देखो जहर मिला न दे
कोई मीठे पाने में

व्यंग्यकार सम्पत 'सरल' ने अपनी गद्य रचनाओं का पाठ करके श्रोताओं के मन पर गहरी छाप छोड़ी। अपनी एक रचना में उन्होंने कहा-

हमारी स्मरण शक्ति बड़ी तीव्र हुआ करती थी। हर बच्चे को सात-सात पीढ़ियाँ याद रहती थी। अपनी भी और गाली-गलौच होने पर दूसरों की भी। तब के बच्चे आज वालों की तरह कम्प्यूटर नहीं होते थे कि बाप का नाम भी पूछ लो तो गुगल पर सर्च करने लगते हैं।

जाने माने सम्पादक एवं चर्चित ग़ज़लकार डॉ. शेर जंग गर्ग ने अपने राष्ट्र की पहचान कुछ इस तरह बताई-

तुम बदल दो बहान का नक्शा
कुल जमीं आसमान का नक्शा
भूख नफरत नज़र न ओ कहीं
ये हे भारत महान का नक्शा

हिन्दी गीत-ग़ज़ल के जाने-माने हस्ताक्षर बाल स्वरूप 'राही' ने उत्कृष्ठ रचनाओं का पाठ करके कवि सम्मेलन को वह ऊँचाई प्रदान की जिसके लिए कि एसे कवि सम्मेलन जाने जाते हैं। उन्होंने कहा-

दोस्तो ने जिसे डुबोया हो
वह जरा देर से संभलते है
हमने बौनों की जेब में देखी
नाम जिस चीज का सफलता है
एक धागे का साथ देने को
मोम का रोम-रोम जलता है
याद आते हैं शेर राह के
दर्द जब शायरी में ढलता है

प्रसिद्ध कवि डॉ. अशोक 'चक्रधर' ने आम आदमी के आक्रोश के प्रति खबरदार करते हुए व्यवस्था के आलम्बरदारों से कहा-

भारत का आम आदमी हूँ
एक घटना की तरह घटूंगा
सब कुछ हिल जाएगा
जब मैं फटूंगा

कवि सम्मेलन की अध्यक्षता कर रहे वरिष्ठ गीतकार सोम ठाकुर ने अपने

अध्यक्षीय उद्बोधन के साथ अपना काव्य पाठ करते हुए कहा–

आ न जाए कहीं नींद इतिहास को
जागरण कीजिए जागरण कीजिए
शक्ति की सीढ़ियाँ शान्ति मन्दिर चढ़ी
शंख से बांसुरी का वरण कीजिए

कार्यक्रम का अद्वितीय संचालन डॉ. अशोक 'चक्रधर' ने किया।[18]

मुम्बई में खूब जमा कवि सम्मेलन

नथमल सिंघानिया

मुम्बई में भारत विकास परिषद द्वारा जेबी नगर अंधेरी में कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जीसमें कवियों ने अपने काव्य पाठ से खूब वाह–वाही लूटी।

कार्यक्रम की सार्थक शुरुआत करते हे अनिल मिश्र ने अपने गीत में कहा–

अच्छी हो या बुरा हो
सबका वतन ही है
है जन्मभूमि सबकी
कोई बे वतन नहीं है
कहने को सबने अपने
डेरे बना लिए हैं
खुदगर्जियों के जैसे
घेरे बना लिए हैं
घेरों के पार लेकिन
कितनी बड़ी है दुनिया
जरा तुम निकल के देखो
जरा हम निकल के देखें
कुछ तुम बदल के देखो
कुछ हम बदल के देखे

ओजस्वी कवि अब्दुल गफ्फार ने अपने चिर परिचित अंदाज में आतंकवाद को खिलाफ काव्य पाठ करते हे कहा–

तुम्हें विषैले सांपो का
विषयन्त तोड़ना ही होगा
या फिर तुमको दिल्ली का
दरबार छोड़ना ही होगा

हास्य कवि दिनेश 'बावरा' ने कहा–

खुदा भी चाहता है कि
आदमी झुककर रहे
अगर ये सच नहीं होता
तो घुटने भी नहीं होते

हास्य व्यंग्य के रचनाकार सम्पत 'सरल' ने व्यंग्य लेख का पाठ किया उन्होंने भारत पाकिस्तान की बातचीत पर व्यंग्य करते हुए कहा–

हम कश्मीर सुई की नोक के
बराबर भी नहीं देंगे
चाहों तो दुबारा बातचीत कर लो।

डॉ. कीर्ति काले ने अपने उत्कृष्ठ गीतों से न केवल कवि सम्मेलन का स्तर ऊँचा उठाया बल्कि श्रोताओं को भी झूने पर मजबूर कर दिया। उन्होंने कहा–

सीमा पर दुश्मन की गोली
ने ललकारा है
क्या सिंहो का देश कभी
चूहों से हारा है

एक अन्य मुक्तक में उन्होंने कहा–

समर्पित भावनाओं का
सदा उपहास करते हैं
यूज़ एण्ड थ्रो की थ्योरी में
अडिग विश्वास करते हैं
नए इस दौर के इन
मजनुओं से दूर ही रहना

मुहब्बत ये नहीं करते

ये टाइम पास करते हैं

हास्य व्यंग्य कवि सुभाष काबरा ने अपनी रचना में महंगाई की रेखांकित करते हुए कहा–

मिस्टर शाहजहाँ।

एक बार फिर से

हिन्दुस्तान में आओ

इस बार आगरा में नहीं

मुम्बई में अपनी महफिल जमाओ

बनया होगा किसी जमाने में

तुमने ताजमहल

आज की तारीख में

दो रुम किचन बनाकर दिखाओ

इस सफल कवि सम्मेलन का सफल संचालन सुभाष काबरा ने किया।[19]

झाँसी में कवि सम्मेलन

राजीव श्रीवास्तव

झाँसी मं भारत हेवी इलेट्रिक्लस लिमिटेड ने गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में कवि सम्मेलन का आयोजन किया। चुटकला रहति साफ सुथड़े तथा गरिमार्पूण इस आयोजन को श्रोताओं ने तहे दिल से सराहा।

कार्यक्रम में शुरुाती काव्य पाठ करते हुए कवि विवेक बरसैया ने कह –

प्यार के चर्चे

हमारे आभ हैं

हम हैं गालिब

हम उभर खैयाम है

कौन कहता सिर्फ

मोमिन का खुदा

कौन कहता

हिन्दुओं के राम है

श्रोताओं से मिली भरपूर सराहना के जवाब में उन्होंने कहा–

वो गैर थे जो आज
मेरे काम आ गए
ख्वाईश थी एक बूंद की
पर जाम आ गए

जावेद गोण्डवी ने साम्प्रदायिक सदभाव के तेवर को और मुखर करते हुए कहा–

विचार अपना हमेशा महान रखते हैं
परिन्दों में से भी ज्यादा उड़ान रखते हैं
हमें तो हिन्दु मुसलमान दोनों प्यारे हैं
हम तो पने दिल में हिन्दुस्तान रखते हैं

जानी बैरागी ने कहा–

कारगिल चंदन से ज्यादा
महकने वाली माटी है
देश का टुकड़ा बताने वालों
कारगिल राजा की दूसरी हल्दीघाटी है

हास्य–व्यंग्य के कवि सत्य प्रकाश 'ताम्रकार' ने बिगड़ैल पड़ौसी को ठीक करने का उपाय बताते हुए कहा –

आप इतनी सी बात नहीं जानते
लातों के भूत बातों से नहीं मानते

ओजस्वी कवि मनोज अवस्थी ने देशभक्ति से ओत–प्रोत रचना का पाठ करते हुए कवि सम्मेलन को सार्थकता प्रदान की जिसे श्रोताओं ने बार–बार तालियों की गड़गड़ाहट करके सराहा। उन्होंने कहा –

यहाँ असुर मारे जाते है
सुर सम्मानित होते है
मित्र सुदामा के पग को
प्रभु अश्रुधार से धोते हैं
यहाँ महर्षि दधीचि सरीखे हुए
महाबलिदानी है

प्यारा हिन्दुस्तान हमारा

हम सब हिन्दुस्तानी है

कवि अब्दुल अय्यूब गौरी ने अपनी ख्याति के अनुरूप कवि सम्मेलन में राष्ट्रीयता के तेवर को और अधिक मुखर करते हुए कई रचनाओं का पाठ किया। उनके काव्य पाठ के दौरान श्रोताओं ने बार-बार तालियों की गड़गड़ाहट करके उन्हें दाद दी। एक रचना में उन्होंने कहा-

हमने मरघट सी खामोशी
बदली है त्यौहारों में
गुरु गोविन्द सिंह बन बेटे
चिनवाए दीवारों में
हमने पन्ना दासी का भी
मान किया सम्मान किया
राज कुँवर की खातिर
जिसने बेटे का बलिदान किया

प्रसिद्ध कवयित्री डॉ. कीर्ति काले ने अनेक गीतों का सधे हुए तरीके से पाठ किया जिन्हें श्रोताओं ने खूब सराहा।

गुदगुदी करने लगीं
जब से गुलाबी सर्दियों
नाचती है अनमनी होकर
तभी से अंगुलियाँ
गुनगुने दो नर्म गोले
ऊन के लेकर
याद फिर बुनने लगी है
मखमली स्वेटर

हास्य व्यंग्य के प्रख्यात कवि सुरेन्द्र दुबे ने अपने लम्बे काव्य पाठ में श्रोताओं को खूब हसाया। उनकी दो कविताएँ ''मेरा भारत महान'' तथा जब मेरा अपहरण हुआ खास तौर पर पसंद की गई। इन पर श्रोताओं ने जमकर ठहाके लगाए। एक अन्य रचना में उन्होंने भ्रष्टाचार पर प्रहार करते हुए कहा-

काम बड़े है आपके जनता समझ न पाय।

सड़क बडी मजबूत थी, लेगरु पवन उड़ाय।

समापन काव्य पाठ करते हुए हिन्दी के मशहूर गीत–गजलकार डॉ. कुँअर बैचेन ने कार्यक्रम को ऊँचाई प्रदान की। उनके प्रत्येक शेर को श्रोताओं की खूब दाद मिली। उन्होंने कहा–

उंगलियाँ तो एक सीमा तक बढ़ी

फिर रुक गई

और उसके बाद तो

नाखून ही बढ़ते रहे

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि आर. के. पाण्डेय तथा एम. पी. सिंह व विश्वनाथ अइयर विशिष्ठ अतिथि के रुम में मौजूद थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता पी. एस. अरोडा ने की। अन्त में राजीव श्रीवास्तव ने सभी के प्रति आभार ज्ञापित किया। कवि सम्मेलन का संचालन सुरेन्द्र दुबे ने किया।[20]

गंज बासौदा में कवि सम्मेलन

संजय जैन

गंज बासौदा में नगर पालिका द्वारा कवि सम्मेलन का आयोजन हुआ जिसमें कवियों ने अपने काव्य पाठ से श्रोताओं को भाव विभोर कर दिया।

कार्यक्रम की शुरुआत में काव्य पाठ करते हुए अशोक चारण ने कहा–

तुमने नोंच लिया है उनके

बच्चों की मुस्कान को

बिन मंदिर का कर डाला है

भारत के भगवान को

डॉ. कीर्ति काले ने श्रृंगार के उत्कृष्ठ गीतों से कार्यक्रम को साहित्यिक ऊँचाई प्रदान की। अपने एक छंद में बसंत ऋतु का वर्णन करते हुए उन्होंने कहा–

फूल बाण ले धरा पे उतरा अनंग

अंग–अंग में उमंग का हुलास भरने लगा

पहली बहार पर ररुप का निखार

पीली ओढ़वी की ओट से इशारे करने लगा

हास्य कवि आशाकरण 'अटल' ने संस्कारों के पतन को रेखांकित करते हुए कहा–

रोजगार के लिए गाँव छूटा तो
आँखो की शरम रही जाती
वहाँ पगडी उतारने में आती थी शर्म
यहाँ कपड़े उतारने में नहीं आती

कवयित्री सुमन दुबे ने कहा–

थोड़ी तकरार थोड़ा
प्यार लेके आई हूँ
अंखियों में सपने
हजार लेके आई हूँ

विनीत चौहान ने घायल सैनिक के अहसासों को कुछ इस प्रकार व्यक्त किया–

सुन अनुज रणवीर गोली
बांह में जब आ समाई
ओ मेरी बायीं भुजा
उस वक्त तेरी याद आई
मैं तुम्हें बाहों से अब
आकाश दे सकता नहीं हूँ
लौट कर भी जाऊँगा
विश्वास दे सकता नहीं हूँ

कार्य्रक्रम में डॉ. विष्णु सक्सेना ने प्रेम गीतों का पाठ करके तथा अरुण जैमिनी ने हरयाणवी लहजे में हास्य रचनाएँ सुनाकर रंग जमाया तो सुनील जोगी ने कृष्ण कन्हैया को कलयुग में अवतार ने लेने की सलाह दी। कार्यक्रम का संचालन सुनील जोगी ने किया।[21]

दैनिक नवभारत का वार्षिक कवि सम्मेलन

प्रेम आर्य

रायपुर के पुलिस ग्राउन्ड में हुआ दैनिक नवभारत वार्षिक कवि सम्मेलन अपनी भव्यता सुप्रबन्धन एवं ऐतिहासिक सफलता के लिए लम्बे समय तक याद किया जाएगा।

कवि सम्मेलन में सबसे बड़ी खाशियत ह थी कि सुरेन्द्र दुबे, डॉ. किर्ती काले, हरी ओम पवार, अशोक चक्रधर, सुरेन्श शर्मा, पवन दीवान जैसे अत्यन्त लोकप्रिय कवि एक मुश्त मंच पर मौजूद थे तथा दैनिक नवभारत द्वारा किए गए जबरदस्त प्रचार प्रबन्धन का परिणाम था कि लगभग पचार हजार श्रोता एक साथ बैठकर कवि सम्मेलन का आनन्दन ले सके। डॉ. किर्ती काले द्वारा प्रस्तुत की गई सरस्वती वंदना की उपरान्त प्रथम कवि के रुप में प्रस्तुत किए गए हास्य कवि अशोक सुन्दरानी ने कहा–

भ्रष्ट और ढोंगी नेता
अगर ऊपर चले जाए
तब नीचे तो
अपने आप स्वर्ग हो जाएगा

कवि मूल चंद शर्मा ने रुमाल की महिमा का बखान करते हुए कहा–

सिर पर बांधा बन्दगी के लिए
हाथ पर बांधा इश्क मिजाजी के लि
मेहनती लोग पौछते है पसीना
पानी गन्दा हो तो इससे छान कर पीना
गले में बांधा तो समझो टपोरी लाल है
भाई साहब ये रुमाल है।

प्रसिद्ध हास्य कवि सुरेन्द्र शर्मा ने अपनी ख्याति के अनुरूप इधर–उधर की बातों से श्रोताओं को हंसाने के बाद अन्त में 'कमरा' शीर्षक से एक गम्भीर रचना का पाठ करते हुए कहा–

अब मैं चीखता भी हूँ तो
बगल वाले कमरे से
ठुहाके की आवाज आती है
मैं सोचने लगता हूँ कि
मेरे चीखने पर ये ठहाके लगा रहे है
या इनके ठहाकों की पजरु से
मैं चीख रहा हूँ।

हास्य व्यंग्य कवि दिनेश बावरा ने श्रोताओं को देर तक चुटकुलों तथा इधर उधर

की बातों से हंसाया। कवि दुर्गादत्त पाण्डेय में बलात्कार के खिलाफ एक विचारोत्तेजक रचना का पाठ करते हे कहा–

सामूहिक बलात्कार
अगर मर्दानगी है तो
मुझे अपने
शिखण्डी होने पर गर्व है

हास्य व्यंग्य के ख्यातनाम कवि सुरेन्द्र दुबे ने अपनी प्रतिष्ठा के अनुरूप अनेक मौलिक हास्य कविताओं से श्रोताओं के हँसा–हंसा कर लोट पोट कर दिया। उन्होंने न केवल हंसाया बल्कि बीच–बीच में तीखे व्यंग्य सुनाकर श्रोताओं को सोचने के लिए भी मजबूर कर दिया। मिलीजुली सरकारों पर व्यंग्य करते हुए उन्होंने कहा–

गठबंधन की आड़ में
गठबंधन का शब
सबने मिलकर लूट ली
लोकतंत्र की लाज
रखा खाज पर ताज
अशुद्ध रही मंत्र में
घुसा वायरस घोर
हमारे लोकतंत्र में

प्रसिद्ध कवयित्री डॉ. किर्ती काले ने माहौल के श्रृंगारिक बनाते हुए अनेक गीतों का पाठ किया। श्रोता उनके काव्य पाठ से इस तरह जुड़ गए कि गीत की लय के साथ लगातार तालियां बजाते रहे। एक छन्द में बसन्त ऋतु का वर्णन करते हुए उन्होंने कहा–

अल्हड़–अबोध आयु का सिंगार देख–देख
आइना भी आज बनने संवरने लगा
पोर–पोर में बजे मृदंग जल तरंग
बोर–बारे से बसंत का पराग झरने लगा

पूर्व सांसद लोकप्रिय गीतकार पवन दिवान ने गरिमापूर्ण काव्य पाठ में कहा–

कोई भी हाथ न होता हो
इसलिए स्वयं को बांट दिया

हम कांटे थे किसको चुभते

इसलिए स्वयं को काट दिया

कवि सम्मेलन का संचालन कर रहे शशिकान्त यादव ने अपे संक्षिप्त काव्य पाठ के बाद तेजस्वी गीतकार हरि ओम पवार का नाम पुकारा। उन्होंने संविधान की पीड़ा को एक प्रभावी रचना के माध्यम से व्यक्त करते हुए कहा–

मैं जब से आबाद हुआ हूँ

और अधिक बर्बाद हुआ हूँ

मैं ऊपर से हरा–भरा हूँ

संसद में सौ बार मरा हूँ

समापन काव्य पाठ में प्रसिद्ध कवि अशोक चक्रधर ने मानवीय संवेदनाओं को कचोटते हुए कहा–

रेस को जीवन मत बनाओ

जीवन को रेस करो

फेस पर चेंज मत लाओ

चैंज को फेस करो

कवि सम्मेलन का संचालन शशिकान्त यादव ने किया[22]

काशीपुर में हुआ कवि सम्मेलन

उमेश पोद्दार

काशीपुर चेतना का नया युग संस्था के तत्वावधान में एक शाम शहीदों के नाम शीर्षक से कवि सम्मेलन का आयोजन हुआ। डॉ. प्रदीप त्यागी 'सरावा' द्वारा प्रस्तुत सरस्वती वंदना के उपरान्त कार्यक्रम की शुरुआत में पं. ईश्वरचंद गंभीर ने कहा–

किसी ने गोलियां खाई, किसी ने सर चढाए थे

वतन के वासते बच्चे दिवारों में चिनाए थे

सही थी यातनाए इसलिए आजाद है भारत

उन्हें मेरा नमन जो भारती के काम आए थे

नवोदित कवि प्रभल पोदद्वार के काव्य पाठ के बाद कवयित्री बलजीत कौर 'बिल्लोरानी' ने गीत की पंकितयाँ प्रस्तुत की–

हम किसी को खुच दे नहीं सकते

बस दे दो मुस्कुराहट यही उपहार है

कवि इन्द्र प्रसाद 'अकेला' की प्रस्तुत रचनाएँ सराही गई।

ओजस्वी कवि सत्यपाल 'सत्यम' ने श्रोताओं के जोश दिलाते हुए पढ़ा।

आपकी विलासिताएँ पूरी हो गई हो गर
ठीक इन पगों के भी छाले कर दीजिए
यदि न संभल रहा देश इन कायदों से
देश मेरा सेना के हवाले कर दीजिए

ख्याति नाम कवि श्रीकान्त 'श्री' ने कवि सम्मेलन को परवान पर चढ़ाने हुए पढ़ा–

जिनकी एक हूंकार मात्र से
अरिदल में मचता क्रंदन
शीश कटा कर भी जो बोले
भारत माता का अभिनंदन
उन वीरों को आज नमन है
जिनके कारण जिनदा हम
जिन लोगों ने बहा के शोणित
कर दिया वसुधा को चंदन

कवि सम्मेलन में कुमार पंकज, सौरभ 'सुमन', डॉ. प्रदीप त्यागी ने भी काव्य पाठ किया। संचालन प्रबल पोद्दार ने किया। कार्यक्रम में राम मल्होत्रा, बी.डी.तिवारी, अनूप अग्रवाल, देवेन्द्र जिन्दल, जे .पी. अग्रवाल, मधुप अग्रवाल, अरुण अग्रवाल, अरविन्द कुमार आदि विशिष्ट जनों सहित भारी संख्या में श्रोता उपस्थित थे।[23]

गणतंत्र दिवस अखिल भारतीय कवि सम्मेलन

श्रीमती शशि धवन

दिल्ली के चितरंजन पार्क स्थित श्री श्यामा प्रसाद मुखर्जी गर्वनमेंट सीनियर सेकेण्डरी स्कूल के प्रांगण में स्कूल मैंनेजमेंट द्वारा गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ कवयित्री रजनी तेवर ने मधुर गीतों से किया। उन्होंने कहा–

भारत की धरोहर रही
सदा ही लाज का श्रृंगार

नारी ने ही खोल दिये
अब उन्नति के द्वार

लालवती मैनपुरी नी कहा–

लेखनी ही
देश का श्रृंगार है
कभी आँसू कभी
ये अंगार है।
लेखनी से जो
रीते को हंसाये
वही कवि कहलाने का
हकदार है।

अम्बर सिंह तनवर ने पढ़ा –

अमन के वास्ते मिटेत
शहीदों को नमन मेरा
टिका है इनके बल पर ही
देश रूपी चमन मेरा

सरदार रतन सिंह 'रतन' ने कुछ यूं पढ़ा–

शहीदों ने देश को
आजाद कर दिया
इन द्रौंगियों ने
देश की बर्बाद कर दिया

मंच संचालन कर रहे चरण जीत 'चरण' ने पढ़ा–

मंजिल का दर्द कल्ब में
सहकार उदास है
बरसों से एक मील का
पत्थर उदास है
परछाइयों को देख सिसुकती है

चांदनी की ऊँचाइयों को देख

समन्दर उदास है

हास्य कवि इन्द्र प्रसाद 'अकेला' की हास्य रचनाओं ने खूब वाह वाह लूटी।

कवि शायर मासूम गाजियाबादी ने कहा-

हम रोते रोते

हिन्दू और मुसलमान हो गये

लेकिन कहीं रास्ते में छोड़ आए है

हम इंसान की खुशबु

धमक बारुद की उठने लगी है

उन कटोरों से

वो जिनसे आया करती थी

कभी लोबान की खुशबु

कवि सर्वेश चन्दौसवी ने पढ़ा

जलते हे चराग

बुझाने से क्या मिला

तुमको हवा जुनून में

आने से क्या मिला

जिस पर थे बेशुमार

परिन्दों के घोसलें

आंधी को वो दरख्त

गिराने से क्या मिला?

स्कूल प्रधानाचार्य आर. के. रेड्डी ने सभी का आभार व्यक्त किया।[24]

विद्यालय में कवि सम्मेलन

राजेन्द्र कुमार सिंह

गुरुकुल डोरली महर्षि दयानन्द सरस्वती विद्यालय के प्रांगण में विद्यालय प्रबन्ध समिति की ओर से कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए कविवपर सुल्तान सिंह 'सुल्तान' ने कहा-

तिरंगे में

लिपट कर

जब किसी का

लाल आता है.

करोड़ो आँख रोती और

दिल में भूचाल आता है।

कवयित्री चेतना शर्मा ने पढ़ा–

अब छोड़ने ही होंगे

ये रोज के दिखावे

अंसों का जन्म लेकर

इंसान बन न पाये

गीतकार मनोज कुमार 'मनोज' ने कुछ यूं कहा–

मंहगा बिकने की चाहत में

सस्तापन ओढ़ लिया हमने

सुन्दर दिखने की चाहत में

दुनिया का कोढ़ लिया हमने

ओजस्वी कवि सुमनेश 'सुमन' ने कार्यक्रम को परवान चढ़ाते हुए प्रस्तुत किया –

जिसने गुलामी के

अंधेरों को दिया प्रकाश

दीप वह सुभाष सा

पवित्र ढूंढ लाइए

हास्य–व्यंग्य के ख्यातिलब्ध कवि इन्द्र प्रकाश 'अकेला' की प्रथम रचना वसंत को समर्पित रही–

चम्पा जूहो, गैया, गुलाब

सरसों पर पीला है शबाबा

कलियों के मुखड़ो पर नकाब

लग रहे कमल–दल ज्यों नवाब

बाद में उन्हेंने हास्य व्यंग्य की रचनाओं से कवि सम्मेलन को बुलन्दी प्रदान की। मधुर गीतकार चेतन आनन्द के गीत भी सराहे गए। उन्होंने कहा–

देखिए कैसे
रिश्ते अनूठे मिले
जो मिले सब
हमें झूठे मिले
उंगलियाँ थामने की
नई चाह में
हाथ जब भी बढ़े तो
अंगूठे मिले

ओजस्वी कवि सत्यपाल 'सत्यम' की रचनाओं ने श्रोताओं में जोश भर दिया उन्होंने कहा–

बंध गया राखी का धागा
आरती सजने लगी है
युद्ध स्थल पर उधर
रणभेरियां बजन लगी है
रोकता है कौन चढ़ने से
हमारा पाँव रथ में
हम प्रथम उसको हो देखें
जो खड़ा अवरोध पथ में

कवि सम्मेलन में गीतकार कुमार 'पंकज' सरदार रतन सिंह रतन नातीराम'देहाता' डॉ. ध्रुवेन्द्र भदौरिया, राम प्रकाश 'राकेश' आदि ने भी काव्य पाठ किया। मंच संचालन कवि सुमनेश 'सुमन' ने किया।[25]

सुभाष जयंती पर कवि सम्मेलन

अनुभव 'अनुभवी'

मेरठ बाईपास पर स्थित वैकटेश्वर इंस्टीट्युट ऑफ टैक्नौलोजी कालेज प्रागंण में शहीदो की याद में आयोजित अखिल भारतीय कवि सम्मेलन में कवियों ने रचनाओं से श्रोताओं आनंदित किया।

कवयित्री चेतना शर्मा की सरस्वती वन्दना से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। प्रसिद्ध ओज कवि सत्यपाल सत्यम ने पढ़ा–

धूआँ धुँआ हो गया है मुल्क ये तामाम जी।
या खुदा बचा ले या बचा ले मेरे राम जी।।

कवि इन्द्र प्रसाद 'अकेला' की रचनाओं ने श्रोताओं को खूब हंसाया। उन्होंने कहा–

दुकान पर
विशेष प्रकार की चुड़ियाँ टँगी देखकर
एक युवती दुकानदार से पूछा–
इन चूड़ियों के क्या दाम है?
दुकानदार बोला बहन जी
ये छूरी आपके लिए नहीं
वर्तमान नेताओं के नाम हे
इन्हें पहनना
आज उन्हीं का काम है

मनोज कुमार 'मनोज' ने शृंगार रस की रचनाओं के माध्यम से श्रोताओं को नई ऊर्जा प्रदान की। उन्होंने कहा –

बिना बरसै कोई बादल
कभी बादल नहीं होता
न जिसमें प्यार का कोई निशा
आंचल नहीं होता
सजन की आंख में सजकर
कभी देखा नहीं जिसने
नो केवल रंग काला है
कभी काजल नहीं होता

राष्ट्रीय कवि सुमनेश 'सुमन' की रचनाओं ने खूब समा बांधा।

डॉ. कुँवर 'बैचेन' के गीतों ने कार्यक्रम को सफलता के शिखड़ पर पहुंचाया। उन्होंने कहा–

आदमी भी हो गया है बम कहां जाकर रहे।
हर तरफ पारुद का मौसम कहां जाकर रहे।।

पापुलर ने पढ़ा–

तकदीर का खोटा है
मुकद्दर से बड़ा है
दुनिया उसे कहती है
चालाक बड़ा है
खुद तीस का है
और दुल्हन साठ बरस की
गिरती हुई दिवार के सायं में खड़ा है।

कवि चेतन 'आनन्द', बलवीर सिंह खिचड़ी, आचार्य दीपक शर्मा,जगदीश सोलंकी आदि ने भी काव्य पाठ किया।कवि सम्मेलन में संस्था के चेयममैन सुधीर गिरे, सिडीकेट बैंक के डी. जी. एम. एस के शर्मा आशीष बालीयान, विनय नांक, महेन्द्र सिंह, दीपक गर्ग आदि उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का· संचालन ओज कविडॉ. अर्जुन सिसोदिया ने किया।[26]

दिल्ली में पीतमपुरा स्थित दिल्ली हाट में महाराष्ट्र उत्सव समिति का कवि सम्मेलन प्रकाश गोखले

दिल्ली में पीतमपुरा स्थित दिल्ली हाट में 'महाराष्ट्र महोत्सव समिति' ने कवि सम्मेलन का आयोजन किया जिसमें कवियों ने अपने काव्यपाठ से खूब रस वर्षा की।

प्रथम कवि के रूप में काव्यपाठ करते हुए हास्य–व्यंग्य के लोकप्रिय कवि सुरेन्द्र सार्थक ने आरम्भ में ही वातावरण को हास्यमय कर दिया। उनकी रचना 'प्राइवेट नर्सिंग होम' खूब पसंद की गई। इस रचना में उन्होंने कहा –

प्राइवेट नर्सिंग होम में
मरीज ने डॉ. से पूछा–
आप मुझ देखकर क्यों मुस्कुरा रहे हैं?
डॉ. बोला –
यहाँ मरीज को देखकर डॉक्टर
अगर नहीं मुस्कुराएगा

तो फिर कैसे कमाकर खाएगा?

आगे इसी तर्ज पर हास्य कवि नंद किशोर 'अकेला' ने अपनी दुबली पतली काया पर व्यंग्य करते हुए श्रोताओं से खूब ठहाके लगवाए। उन्होंने कहा –

ढांचा कैसा भी हो
इंजन सही सांट है
एकदम भन्नाट है
हालांकि कम सीसी का है
वही ठीक रहता है
क्योंकि कम सीसी का इंजन
ज्यादा एवरेज देता है

कवि सम्मेलनों की सर्वाधिक लोकप्रिय कवयित्री डॉ. किर्ती काले ने अपने काव्य पाठ में प्रेम गीतों की लड़ी लगा दी। श्रोता झूमते रहे और वे गीतों का पाठ करती रहीं। उन्होंने अपने एक गीत में कहा–

तन से दूर भले ही जाओ,
मनसे दूर नहीं होना
यादों की खुश्बु से महके
जीवन का कोना–कोना

हास्य –व्यंग्य के सर्वश्रेष्ठ कवि सुरेन्द्र दुबे ने अपनी मौलिक हास्य–व्यंग्य कविताओं से श्रोताओं को हँसा–हँस कर लोट–पोट कर दिया। समापन में सार्थक काव्य पाठ करते हुए उन्होंने कहा –

वह होती है
सरकार
जिसमें एक आदमी
दुसरे की कुर्सी के पास
जाकर कहता है–
सरक यार !
अर्थात् जो काम करती नहीं
केवल सरकाती है
वह सरकार कहलाती है

इस यादगार कवि सम्मेलन का सफल सार्थक एवं गरिमापूर्ण संचालन डॉ. कीर्ति काले ने किया। उन्होंने सरस्वती वन्दना भी प्रस्तुत की। कार्यक्रम की अध्यक्षता हेजिब ने की।[27]

भीलवाड़ा में हरणी महादेव मेले में शिवरात्री के अवसर पर आयोजित कवि सम्मेलन

भीलवाडा में हरणी महादेव मेले में शिवरात्री के अवसर पर नगर परिषद् द्वारा आयोजित कवि सम्मेलन बहुत सफल रहा जिसमें देर रात्रि तक कवियों ने श्रोता को अपने काव्य पाठ से आनन्दित किया। डॉ. किर्ती काले द्वारा प्रस्तुत सरस्वती वन्दना से आरम्भ हुए कवि सम्मेलन को हास्य कवि दिनेश 'वन्टी' ने सार्थक शुरुआत प्रदान की। उन्होंने सामुदायिक भवन के पड़ौस में रहने वाले लोगों की समस्याओ का कारुणिक चित्र खींचते हुए खूब हँसाया। उन्होंने कहा–

खई करां जी जीरयों हाँ
पर जीवो भूखा के समान है
या बात वे लोग जाणै–जोकै
पंचायती नोहरा क नड़ै मकान है

राजस्थानी भाषा के गीतकार राजकुमार 'बादल' ने हास्य की अनेक टिप्पणियों से ठहाके भगवाने के उपरांत एक शृंगारिक गीत का पाठ करते हुे कहा –

सखी आज रात म्हासूं घणी रै बणी
माचा की दावण रैगी तणी–की–तणी

हिन्दी और राजस्थानी भाषा के प्रसिद्ध गीतकार डॉ. कैलाश मण्डेला ने एक मार्मिक रचना से बेटी को दुलारते हुए कहा –

म्हरा घर की थुं दीवाली थनै कुण कहवै रे काली
माथे री है रोली, चोली री थूं बंदनवार है
कोयल है बाग री, थूं सावण व्ही फुवार है
चानणी है आंगणे री, तुलसी री डार है
मन की है माछली थूं, फूँली कचनार है
हिरणी–सी मोहनी थूं, चाले दूधां–धार है
तु ही है भवानी, दुखा री अवतार है,
पूजा की पावन थाली, थनै कुण कहवे रे काली

हास्य कवि जानी बैरागी ने काव्य फुहार के साथ-साथ इधर-उधर की बातों से श्रोताओं को हँसाते-हँसाते कवि सम्मेलन को जमाए रखा। और वहीं श्रोतागणों को गंभीर करने का प्रयास करते हुए ओजस्वी गीतकार आशीष 'अनल' ने गम्भीर तेवर में कहा-

प्रश्न था कि वीरता के तीन पर्याय लिखो
यूं लगा कि बच्चे ने अपना ज्ञान लिख दिया
तीसरा पर्याय जब बच्चे को न दाद आया
उसने वहाँ पे सिर्फ राजस्थान लिख दिया

अपनी दुबली-पतली काया पर व्यंग्य करते हुए हास्य कवि नन्द किशोर (अकेला), ने अपने व्यायाम के कार्यक्रम का वर्णन करते हुए श्रोताओं को खूब हँसाया। रचना के समापन पर उन्होंने कहा -

देश को मजबूत बनाने की
कोशिशें जो अनवरत कर रहे हैं
वो सबके सब
ऐसी ही कसरत कर रहे हैं

प्रसिद्ध शायरा अंजुम 'रहबर' का अन्दाज ए बयाँ कुछ इस प्रकार था-

ये किसी नाम का नहीं होता
ये किसी धाम का नहीं होता
प्यार में जब तलक नहीं टूटे
दिल किसी काम का नहीं होता

उन्होंने अपने काव्य पाठ को आगे बढ़ाते हुए कहा -

इक बार के मिलने को जो प्यार समझते है
पागल हैं मगर खुद को होशियार समझते हैं
ये ऊँचे घरानों के बिगड़े हुए लड़के हैं
जो प्यार के मन्दिर को बाजार समझते हैं।

ओजस्वी कवि वेदव्रत वाजपेयी ने अपने खास अंदाज में काव्य पाठ करते हुए श्रोताओं के मन पर गहरी छाप छोड़ी। उनका काव्यपाठ व श्रोताओं की तालियों की गड़गड़ाहट का सफर चलता ही रहा। उन्होंने कहा -

देश नहीं बनता है
मिट्टी गिट्टी ईंट मकानों से
माँ का मस्तक ऊँचा होता
बेटों के बदिलानों से
जहाँ शहीदों के शोणित की
एक बूंद भी गिरती है
मन्दिर–मस्जिद से भी पावन
हो जाती वह धरती है

हास्य–व्यंग्यकार धमचक मुल्यानवी ने कुछ हास्य कविताओं के पश्चात् गम्भीर तेवर में कहा –

मन्दिर मस्जिद को लेकर
देश में दंगा हो गया
धर्म की नाम पर आज
आदमी नंगा हो गया

लोकप्रिय कवियत्री डॉ. किर्ती काले ने अपनी ख्याति के अनुरूप श्रृंगारिक गीतों से समां बाँध दिया। होली की अगवानी में उन्होंने कुछ हास्य गीतों का भी पाठ किया जिन्हें श्रोताओं की भरपूर सराहना मिली। फागुन गीत सुनाकर उन्होंने माहौल में भावकता घोल दी–

फागुन में दाद करारी आई, फागुन में
नशा किए है हवा निगोड़ी
सब ने पी ली थोड़ी–थोड़ी
मैंने भी पी ली ठंडाई–फागु में

उन्होंने एक अन्य गीत का पाठ किया जिसमें बढ़ती महंगाई में आम आदमी की दिक्कतों का वर्णन इस प्रकार था–

रेट सुना जब शक्कर का तो
पर्स को आया चक्कर
दाल के दाने निकल पड़े
शक्कर से लेने टक्कर

चावल ने खींची तलवार

सबका भला करे करतार

कार्यक्रम का सफल संचालन कर रहे हास्य-व्यंग्य के प्रसिद्ध कवि सुरेन्द्र दुबे ने काव्य पाठ से श्रोताओं को खुब हँसाया। लगभग एक घण्टे के अपने काव्य पाठ के दौरान उन्होंने कई बार श्रोताओं को सोचने पर मजबूर किया। एक रचना में उन्होंने कहा –

दिन दहाड़े कत्ल सड़क पर हुआ

ये सबको पता है पुलिस के सिवा

कौन कातिल है, वह क्यों न पकड़ा गया

ये किसी के पता ना पुलिस के सिवा

भारतीय स्टेट बैंक शाखा द्वारा हिन्दी दिवस के उपलब्ध में कवि सम्मेलन

भारतीय स्टेट बैंक शाखा के तत्वावधान में हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में बरेली के किसान भवन में एक विराट कवि सम्मेलन का आयोजन हुआ।

श्रीमती लता 'स्वरांजलि' की सरस्वती वन्दना के बाद रफीक नागौरी ने राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत गीतों से समां बाँध दिया।

ब्रजकिशोर पटेल ने अपने हास्य-व्यंग्य की रचनाओं के माध्यम से श्रोताओं को काफी देर तक गुदगुदाया। श्रोताओं को नमस्कार करते हुए कहा –

कमर की करधनी को नमस्कार

नमस्कार माथे की बिन्दी को

अपनी बोली बुन्देली को नमस्कार

नमस्कार राष्ट्रभाषा हिन्दी को

कवि जगदीश श्रीवास्वत ने कहा –

हम जिये तो चमन के लिए

हम मरे तो चमन के लिए

जिंदगी फिर मिले न मिले

हो तिरंगा कफन के लिए।

स्थानीय कवि गौरीशंकर धाकड़ ने कहा –

बना तमाशा कानूनों का

कुर्सी वाले खेल रहे

दुश्मन की गोली छाती पर
वर्दी वाले झेल रहे

विजय सराठे ने बम्बई बम काण्ड के बारे में अपने विचार इस तरह प्रकट किये।

नर संहार हुआ मुम्बई में
इसका बदला लेंगे हम
जंग छिड़ी तो छिड़ जाने दो
अब न और सहेंगे हम

देवी जैन ने नारियों के बारे में कहा –

नारी बिना नर का
ये जीवन अधूरा है
कमजोरी पति की
पकड़ में होनी चाहिये

हिन्दी दिवस के बारे में प्रेमनारायण साहू ने कहा –

अपने ही देश में पराई हो रही हिन्दी
मान नहीं देश में सम्मान है विदेश में

प्रभुदयाल खरे ने कहा –

भारत माता के माथे की
बिंदिया है अनुपम
हिन्दी देश की राष्ट्रभाषा है
नहीं किसी से कम

कवि सम्मेलन का सफल संचालन प्रभुदयाल खरे 'गब्बे भैया' ने किया। अन्त में भारतीय स्टेट बैंक, शाखा बरेली के प्रबन्धक एल. पी. खत्री ने सभी आगन्तुक साहित्यकारों का शाल–श्रीफल से सम्मान किया।[29]

घमतरी (छत्तीसगढ़) में प्रखर समाचार के स्थापना दिवस पर हुआ कवि सम्मेलन रंजीत भट्टाचार्य

धमतीर में 'प्रखर समाचार' ने अपने 22वें स्थापना दिवस पर कवि सम्मेलन का आयोजन किया जिसमें ख्यातनाम कवियों ने काव्य पाठ से रस बरसाया। सभी कवियों

ने श्रोताओं से खूब दाद पाई लेकिन रामेन्द्र त्रिपाठी के गीतों का जादू खूब चला। आरंब में कवयित्री संज्ञा तिवारी, ने सरस्वती वंदना की। बाद में उन्होंने अफने क्रम में काव्य पाट करते हुए कहा –

कोई खतरा नहीं है काँटो से
अब तो फूलों से बम निकलता है

आलोक शर्मा ने श्रोताओं का भरपूर–मनोरजंन किया। उन्होंने कहा –

भगवान का दिया कभी अल्प नहीं होता
जो बीच में टूटे वह संकल्प नहीं होता
पराजय के लक्ष्य से दूर रखना यारो
क्योंकि विजय का कोई विकल्प नहीं होता

मुकुंद कौशल की कविताओं को श्रोताओं ने तालियों की गड़गड़ाहट के साथ सुना। उन्होंने कहा –

बहुत सहा हमने अब तक
जम्मू कश्मीर की पीर को
मत ललकार शिवाजी और
राजा शमशीर को
तिरछी नजरों से देखा जो
तूने अब कश्मीर को
लिख दैगें इस बार
खून से हम तेरी तकदीर को

हास्य–व्यंग्य के कवि अनिल चौबे ने अपनी रचनाओं से श्रोताओं को खूब हंसाया। उन्होंने कहा –

पत्नी की आखों से
अनवरत बर रहे आंसुओं को देखकर
हमने कहा – प्रिय चुप हो जा
जीवन के सुख–दुख
मिलजुलकर बाँटेगे

पत्नी बोली–

कल से प्याज आप काटेंगे

ओजस्वी कवि शंशिकान्त यादव ने कहा –

युद्ध हेतु उत्तम आयुध हो
है इससे इन्कार नहीं
पर योद्धा भी श्रेष्ठ चाहिए
भड़ सकता केवल हथियार नहीं

हास्य कवि बृजेन्द्र चकोर ने अफने काव्य पाठ में आधुनिक नारियों की फैशन परस्ती पर व्यंग्य करते हुए –

चीर खींचने को यदि दुशासन आ गया तो
अधुनिक नारी देख मन में पछाताएगा
नारी निज वस्त्र खुद फैशन में दिए फैंक
मारे शर्म के दुशासन ही मर जाएगा
कन्हा आज आकर किस–किस का बढ़ाए चीर
तन पर जो नहीं वस्त्र बिकनी भी पाएगा
चीर खींचने को जब चीर ही न होगा तब
बोलिए दुशासन क्या झुनझुना बजाएगा

हास्य कवि एवं संचालक सुरजीत 'नवदीप ने श्रोताओं को खूब हंसाया। उन्होंने कहा –

दूध के मैल को
लोग मलाई कहें
जिसने कभी हल चलाया नहीं
लोग उसे हलवाई कहे

वरिष्ठ कवि रामेन्द्र मोहन त्रिपाठी ने पढ़ा–

एक अरब की भीड़ न दे तू
इस झांसी की रानी दे दे

उनकी धीर गंभीर गूंज भरी आवाज ने मानो श्रोताओं के दिल के दरवाजे पर थपकी

देना शुरू किया और वे खुलते चले गये। रामेन्द्र मोहन जी ने धीरे-धीरे शुद्ध कविता की ओर कदम बढ़ाये। बानगी दीखिए-

सर पे रखते है धूप पाँव पर छाया करते
पेड़ ऐसे ही नहीं खुद को तपाया करते

देश और समाज की व्यवस्था नामक अव्यवस्था पर उन्होंने कहा -

आदमी बना धनुष, न फूल खुश न खार खुश
चमन के सामने अमन का फिर खड़ा सवाल है
तनाव ही तनाव है लूट बेमिसाल है
कमाल है, कमाल है, कमाल दर कमल है

राजनीति के हमाम में सबको नंगा ठहराते हुए उन्होंने पढ़ा-

राजनीति की मंडी
बड़ी नशीली है
इस मंडी में सबने
मदिरा पी की है

इस गीत पर वाह-वाह की बारिश होने लगी। उन्होंने पढ़ा-

दरिया उसी को रास्ता देता है बार-बार जो
हार के भी अपनी जिद संभाल कर रखे
गुल से खुशबु उड़ा ले गई सब मजा तो हवा ले गई
नहीं रुकता किनारों से मचलती धार का पानी
उम्र भर रूप से झरता है पहले प्यार का पानी

कवि सम्मेलन के अंत में 'प्रखर समाचार' के प्रधान संपादक दीपक लखोटिया ने प्रखर परिवार की ओर से उपस्थिति जनों का आभार माना। पूर्व विद्यायक इंदर चौपड़ा, रंजीत छाबड़ा, अमरचंद जैन, विनोद जैन, महेन्द्र पंडित, केदारनाथ अग्रवाल, विशेष लखोटिया एवं प्रखर परिवार के सदस्यों ने कवियों का सम्मान किया।[30]

अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन

आनन्द कुमार जैन 'अकिंचन'

मेरठ भगवान महावीर दिगम्बर जैन पंचायती मन्दिर समिति के तत्वावधान में कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें ख्यातिलब्ध कवियों ने काव्य पाठ किया।

कवयित्री श्रीमती अंजु जैन ने माँ सरस्वती वन्दना प्रस्तुत करने के बाद अपने क्रम में काव्य पाठ करते हुए कहा –

गैरों की धूप में भी कुछ ठण्डके थी 'अंजु'
अपनों की छाँव में भी अब पाँव जल रहे है

गीतकार मनोज कुमार 'मनोज' के गीतों ने कवि सम्मेलन को कुछ यूं आगे बढ़ाया–

बिना बरसे कोई बादल कभी बादल नहीं होता
न जिसमें प्यार का कोई निशा आँचल नहीं होता
सजन की आँख में सजकर कभी देखा नहीं जिसने
वो केवल रंग काला है कभी काजल नहीं होता

युवा गीतकार कुमार 'पंकज' के गीतों ने यादगार समां बाँधा। उन्होंने कहा –

सैंकड़ों नदियों को पीकर, कश्तियाँ तक खा गये
गाँव–गलियाँ सब प्रचाकर बस्तियाँ तक खा गये
वो वतन की भूख को कैसे मिटाएगें भला,
जो शहीदों की चिताएँ–अस्थियाँ तक खा गये

कवि चन्द्र शेखर 'मदूर' की रचनाएँ सराही गई। उन्होंने कहा –

सदियाँ भी छोटी लगती है
प्यार भरे दो पल के आगे
धरती भी लगती है छोटी
उस माँ के आँचल के आगे

हास्य कवि इन्द्र प्रसाद 'अकेला' ने अपनी व्यंग्य रचनाओं के माध्यम से वर्तमान व्यवस्ता पर कुछ यूं प्रहार किया–

जनता की आशाओं को जब नेता छ्ल जाता है
बदले की ज्वाला में सारा उपवन जल जाता है
मन में कड़वी यादों का जब सैलाब उमड़ता है
नेताजी पर तब जनता का जूता चल जाता है

मुख्य अतिथि डॉ. कुँवर 'बेचैन' की रचनाओं ने कवि सम्मेलन को सफलता के शिखर पर पहुँचाया–

हर तरफ बारूद का मौसम कहाँ जाकर रहें
आदमी भी हो गया है बम कहाँ जाकर रहें

इनके अलावा कवि सुभनेश 'सुमन', श्रीमती तुषा शर्मा, औंकार गुलशन, सुल्तान सिंह, 'सुल्तान', ए. के. जैन तथा कवि सम्मेलन के संयोजक लक्ष्मी नारायण वशिष्ठ ने अपनी सारगर्भित रचनाएँ सुनाई मंच संचालन कवि सुमनेश सुमन और लक्ष्मी नारायण वशिष्ठ ने किया। अंत में दिनेश जैन ने सभी का आभार व्यक्त किया।[31]

श्री गंगानगर में राजस्थान दिवस और रामनवमी के पावन अवसर पर कवि सम्मेलन

अशोक कुमार

श्री गंगानगर में राजस्थान दिवस और रामनवमी के पावन अवसर पर बिहाणी शिलान्यास द्वारा जगदम्बा अंध विद्यालय के सभागर में काव्य कलश नाम से कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें कवियों ने अपने काव्य पाठ से उपस्थित काव्य प्रेमियों रस से सराबोर किया। कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए अशोक प्रभाकर ने कहा कि–

पानी जो पी लूं वो शराब हो जाये
हर शब्द मोहब्बत की किताब हो जाये

एक अन्य रचना में उन्होंने कहा –

हम मचलते हैं तो तुफान मचल जाते हैं
हम जो चलते है तो पर्वत भी दहल जाते हैं

डॉ. सरिता शर्मा ने अपनी कविताओं से श्रोताओं की खुब दाद पाई। उन्होंने कहा–

अब तो हद से गुजर के देखेंगे
कुछ नया काम करके देखेंगे
जिसकी बांहों में जी नहीं पाये,
उसकी बांहों में मर कर देखेंगे

मंच संचालन करने वाले युवा कवि सन्देश त्यागी ने अपने काव्य पाठ से सभी श्रोताओं को लोट–पोट किया तो कभी चिन्तन पर मजबूर किया। उन्होंने युवा पीढ़ी को सम्बोधित करते हुए कहा –

रुख हवाओं का मोड़ सकती है
पर्वतों को भी तोड़ सकती है

जिन्दगी जब जवान होती है
सारी दुनियां को झिझोड सकती है।

पद्मभूषण गोपाल दास 'नीरज' का नाम जब काव्य पाठ के लिए पुकारा गया तो हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज गया। उन्होंने दार्शनिक अंदाज में कहा –

तन में भारी सांस है
इसे समझ लो खूब
मुर्दा जल में तैरता
जिन्दा जाता डूब

संत की भांति लोगों को सदाचरण की प्रेरणा देते हुए उन्होंने अनेक दोहों का पाठ किया। उनके एक दोहे की बानगी देखिए–

ज्ञानी हो पर मत करो, दुर्जन संग निवास
सर्प तो आखिर सर्प है, भले मणि हो पास

उन्होंने तीसरे विश्वयुद्ध की विभीषिका पर चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा –

मैं सोच रहा हूँ
अगर तीसरा युद्ध छिड़
इस नई उमर की
नई फसल का क्या होगा?

हास्य कवि, हरस्वरूप शर्मा 'धुरंधर' ने हास्य रचना 'करोड़पति' और 'गधा' से श्रोताओं को खुब गुदगुदाया। अनमोल चौहान के काव्य पाठ की भी सराहना हुई।[32]

मातृ–पितृ वन्दन में बुलन्दशहर का सफल कवि सम्मेलन

रमेश प्रसून

बुलन्दशहर में भारद्वाज बन्धुओं ने 'मातृ–पितृ वन्दन में एक शाम–काव्यधारा के नाम' कवि सम्मेलन का आयोजन किया। जिसमें स्थानीय कवियों ने अपने काव्य पाठ से माता पिता के प्रति कृतज्ञता स्थापित की।

कवि सम्मेलन का प्रारंभ युवा गीतकार किशोर अग्रवाल के मातृभूमि–प्रेम के गीत से हुआ। उन्होंने कहा –

सोने जैसी माटी इसकी अमृत जैसा पानी है

अरुण कुमार के काव्य पाठ के उपरान्त ओजस्वी कवि ख्याली राम 'खुशहाल' ने

कहा –

जीना मुहाल कर दिया आतंकवाद ने
बर्बाद हमको कर दिया आतंकवाद ने

संयोजक डॉ. कमल किशोर भारद्वाज 'कमल' ने बम्बई में हुए आंतकी हमले को यों रेखांकित किया–

हथियार बन्द कुछ आंतकी,
बम्बई में अन्दर घुस आये
हँसते–हँसते जीवन में बस
मौत के बादल ही छाये
पल में महौल बदल डाला
उन नरभक्षी हैवानों ने

विवशता के दर्द से उद्वेलित अनुराग भिक्षु 'गैर' ने कहा –

हैं परिन्दों को तरह इन्सान की मजबूरियाँ
भूख और रोटी के बीच जाने कितनी दूरियाँ
खाली मुट्ठी शाम को बच्चे लौट आये गैर
अंधों की बस्ती में बंट रही हैं रेवड़ियाँ

रमेश प्रसून ने कहा –

आँसू बरस रहे हैं, बरसात कैसे कह दूँ,
तेरी वजह से दिन को मैं रात कैसे कह दूँ
जो कुछ भी हो रहा है शामिल है उसमें तू भी
मैं सिर्फ इस सभी को हालात कैसे कह दूँ

राजेश गोयल ने गंगा की पावनता को निमंत्रण कुछ इस प्रकार दिया–

गंगा की पावन धारा तुम
आओ अब मेरे द्वारे
हर गीत निखर जाये मेरा
तुम आओ अब मेरे द्वारे

कंछी सिंह ने वर्तमान व्यवस्था की वास्तविकता पर यो तेज क्या कसा कि श्रोता

वाह–वाह कर उठे–

ऐसी जगह कहां है भाई
जहाँ पर रिश्वतखोर नहीं
चोर–चोर हर जगह बताओ
कौन यहाँ पर चोर नहीं

ओज के प्रख्यात कवि रामपाल शर्मा 'विश्वास' ने ओजस्वी काव्य पाठ मैं कहा –

सहने को तो जीवन भर तू
जाने क्या क्या सहता है
सच को अगर नहीं सह सकता तो
जीने का अर्थ बता

उन्होंने मातृ–पितृ वन्दन विषयक रचना में कहा–

मन्दिर मस्जिद–गुरुद्वारे
तुम जाना या मत जाना
गंगा सागर या संगम में
नहाना या मत नहाना
सभी तीर्थों–शक्ति पीठों
को ध्याना, मत ध्याना
सब कुछ जाना भूल
पिता माता को भूल न जाना

गीतकार शम्भू दत्त त्रिपाठी ने मथुर कण्ठ से अपने काव्य पाठ में कहा –

कभी–कभी आंखों में
आ जाते हैं दो आँसू
और उनकी इसके सिवा
मुझ पे क्या निशानी है

गजेन्द्र दत्त शर्मा ने अपने काव्य पाठ में कहा –

जिन्दगी बस रहन हो गई
उनकी पूरी कहन हो गई

तन का सीताहरण क्या हुआ
मन की लंका दहन हो गई

नीरजा 'चक्रपाणि' का अन्दाज-ए-बयां कुछ इस प्रकार था –

पंछी का कोई, एक ठिकाना नहीं होता,
घर आसमां पे आसान बसाना नहीं होता
वह छोड़ कर जमीं को उड़ता है उस जगह
खाने को जिस जगह पर दाना नहीं होता

चक्र का कहना था–

जागो मेरे देशवासियों
वक्त नहीं है सोने का
नहीं समय है बीते कल की
बर्बादी पर रोने का

आलोक 'बेजान' के चेतावनी पूर्व उद्गार कुछ इस प्रकार थे–

जो ताप रहे मित्रो !
उनको यह बात बता देना
होता नहीं है अच्छा
शोलों को हवा देना

हास्य कवियों में वीरेन्द्र 'हस' का व्यंग्य भरा हास्य हँसाने को पर्याप्त था। उन्होंने कहा –

मैं ठिठुर गयो रात जाड़े में
अब गुजर नहीं है गाड़े में

हास्य कवि रमेश भारद्वाज 'लोमड़ी' का स्थूल हास्य देर तक श्रोताओं को हंसाता रहा। उनके द्वारा किया गया सौन्दर्य वर्णन था–

कारी-कारी कामिनी की चमड़ी हो भैंसा जैसी
टेड़ी मेडी चाल बाके पैरों में बिवाई हो
हँसे तो डरे सभी और गावै तो भागें सभी
बोले ऐसे बोल जैसे भैंस रम्भाई हो

मुख्य अतिथि आर के विश्वकर्मा ने ओजपूर्ण काव्य पाठ करते हुए कहा-

गली-गली द्वार-द्वार गांधी घूमते अनेक
वक्त की पुकार है हमें सुभाष चाहिये।

आनन्दित एवं उत्फुल्लित श्रोताओं के मध्य सम्मानित वयोवृद्ध कवियों ने अपनी रचनाओं से कार्यक्रम को समापन प्रदान किया। कवि होशियार सिंह 'शम्बर' का कहना था-

माता-पिता गुरु-देवता, चारों तीरथ धाम।
सब तीरथ हो जायेंगे, इनको करो प्रणाम।।

चन्द्रभूषण 'मुखर' का कहना था -

जीवन को आधार चाहिये
अखिल प्यार-दुलार चाहिये

इस प्रकार देर रात तक श्रोताओं की उपस्थिति एवं तालियों की गड़गड़ाहट के बीच आयोजक-संयोजक-संचालक-कविगण व श्रोताओं के सद्भावपूर्ण सहयोग से सौहार्दपूर्ण वातावरण में सफल कवि संम्मेलन सम्पन्न हुआ।[33]

रूपनगढ़ में दशहरा मेला कमेटी में विराट कवि सम्मेलन

महेन्द्र दाधीच

रूपनगढ़ में दशहरा मेला कमेटी व रूपनगर विकास समिति के तत्वावधान में विराट कवि सम्मेलन का आयोजन किया जिसमें कवियों ने सारी रात रस वर्षा की।

कवि रशीद निर्मोही की सरस्वती वन्दना से आरम्भ हुए इस कवि सम्मेलन का आगाज हास्य कवि शंकर शिखर ने कुछ इस प्रकार किया-

एक विदेशी पत्रकार ने जूता क्या फैंका
सरेआम लोकतंत्र का नाक छिल गया
मानो राजनीति अवमूल्यन से दुःखी
आम आदमी को हथियार मिल गया

कवि कोशलेन्द्र 'कौशल' ने राष्ट्रीय चिंतन की एक रचना का पाठ करते हुए कहा-

आज अगर भगत सिंह होते
वर्दी में व्यभिचार न होता
न्यायालय की प्राचीरों पर
झूठों का अधिकार न होता

नेताओं की शय्याओं पर
देहों का व्यापार न होता
लोकतंत्र का पावन मन्दिर
गुण्डों का बाजार न होता

कवयित्री आशा पाण्डे ने गम्भीर रचनाओं का पाठ करते माहौल को संजीदा करते हुए। उन्होंने कहा –

अश्को में बड़ी तहजीब है ये
हर कहीं पर नहीं बहते
हंसी तो बड़ी ही फुहड़ है
किसी की बेबसी पर भी आ जाती है

कवि रशीद निर्मोही ने अपने मीठे गीतों की झडी लगा दी। उन्होंने पढ़ा–

युग की अंधी दौड़ में ये
माँऐं भी अंधी हो गई
पाषाण हृदय से पिता के संग
ये क्यों पत्थर हो गई

हास्यकवि कमल माहेश्वरी ने अपनी हास्य कविता से श्रोतओं को लोट–पोट कर दिया। 'एक बार जब मेरी शादी हुई' रचना का पाठ करते हुए उन्होंने कहा –

निकासी के लिए सज धज कर
जैसे ही मैं बाहर आया
आते ही सिर चकराया
खुशियों ने बदल दिया रुट
कमबख्त बैंड वालों ने भी
पहन रखा था 'सेम' मेरे जैसा ही सूट
कलर भी वैसा
डिजायन भी वैसी की वैसी
अब शुरू हुई अपनी
ऐसी की तैसी

ओम प्रकाश वर्मा ने जब अपनी रचना पढ़ी तो श्रोताओं में जोश भर दिया। उन्होंने कहा–

आँख में भर लो कश्मीर को
शोले धरो जुबान पर
एक हाथ रामायण पर और
एक धरो कुरान पर
लेंगे बदला दावानल का
जो भड़का था मुंबई में
तोड़ गिराओं खुनी पंजा जो
फड़का था मुंबई में

कवयित्री रश्मि किरण ने व्यंग्य पाठ मैं कहा –

चूड़ियाँ रात में खनखनाने लगी हैं
किसी की मुझे याद आने लगी है

श्याम पाराशर ने अपने अनूठे अन्दाज में अलग छाप छोड़ी और अपनी हास्य कविताओं से वे कार्यक्रम को ऊँचाई पर ले गए। उन्होंने कहा–

किसकी माँ ने सौह सवा सेर खाई है
जो हमसे आकर जंग करे
हम दाँत बत्तीसों तोड़ेंगे
जो सीमा से आगे पाँव धरे

सोहन चारण ने जब 'एकर पाछो आ जा रे गाँधी महात्मा रचना पढ़ी तो श्रोता अपनी हँसी नहीं रोक सके।

दिनेश 'सिन्दभ' ने अपनी रचना –

मिलकर गाएँ वन्देमातरम्
भारत माँ की शान में।

गोपीनाथ 'चर्चित' ने अपनी हास्य कविताओं से खूब ठहाके लगवाए। स्वाइन फ्लू के विरुद्ध चल रहे सरकारी अभियान पर चुटकी लेते हुए उन्होंने कहा –

रोगी बोला–
मेरी क्या खता?

डॉक्टर बोला–

कीटाणू कहाँ छिपा रखे हैं बता?

प्रशासन को समझ रहा है अन्धा

कितने दिनों से कर रहा है

कीटाणू सप्लाई का धन्धा ?

संचालन कर रहे दामोदर दाधीच ने श्रोताओं को बहुत हंसाया। अपने काव्य पाठ में उन्होंने कहा –

घरबीती को ध्यान नहीं

परबीती देखे भोग धजा

मुख मूण्डा मैं दांत नहीं

वे सरपट चाबै भोग चणा,

गलती पर गलती घणी करे

आ आदत बुरी इन्सान की है,

सुधरयां को सीरो मिनञ्ज बणै

बाकी गलती सब भगवान की है

कार्यक्रम के संयोजक सरपंच डी. सी. वी. 'किरण' ने सब कवियों का स्वागत कर परिचय करवाया व रूपनगढ़ से जुड़ी हाडी रानी व चूंडावत की गाथा पढ़कर रूपनगढ़ का इतिहास बनाया।[34]

बनारस में स्थान–उदयप्रताप कालेज की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर कवि सम्मेलन

डॉ. अरविन्द कुमार सिंह

बनारस में स्थान–उदयप्रताप कालेज की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर कवि सम्मेलन का आयोजन हुआ जिसमें ख्यातनाम कवियों ने काव्य पाठ कर रस बरसाया।

डॉ. कीर्ति काले द्वारा प्रस्तुत की गई सरस्वती वन्दना से आरम्भ हुए इस कवि सम्मेलन में रियाज़ बनारसी ने आंतकवाद पर एक विचारोत्तेजक रचना का पाठ करते हुए कहा –

हम एक है, हम एक सदा साथ में हैं

आंतकियों से कह दो कि औकात में रहें

प्रसिद्ध गीतकार डॉ. अशोक कुमार सिंह ने अपने गीत में आज के दौर की

विसंगतियों को रेखांकित करते हुए एक श्रेष्ठ गीत का पाठ किया, जिसे श्रोताओं ने खूब सराहा। उन्होंने कहा –

खुश्बू आए तो
किस वन से आए
चंदन के गाठ यहाँ
कौन लगाए ?
बाबा ने बोया था
हमने मिल बांट लिया
जो आया हिस्से में
सब का सब काट लिया

हिन्दी गीत काव्य के चर्चित हस्ताक्षर डॉ. सुरेश ने अपने काव्य पाठ से कवि सम्मेलन को ऊँचाई प्रदान की। कवियों की व्यस्त जिन्दगी के सच को उजागर करते हुए अपने प्रसिद्ध गीत में कहा –

इस नगर हैं, उस नगर हैं
पांव में बांधे सफर है
हैं थके हारे, नींद के मारे
हम तो ठहरे यार बनजारे

हास्यकवि मिरजापुरी का अन्दाज़–ए–बयाँ कुछ इस प्रकार था –

आधुनिकताएँ और संस्कृत के विद्वान
अर्धनग्न ही होते हैं शोभायमान

कवि सम्मेलन में उर्दू शायरी की खुश्बू बिखरते हुए नवाब अहमद नवाब ने कहा–

अपनी मंजिल पे न रस्तों पे नजर रखा कर
साथ चलते हुए लोगों पे नजर रक्खा कर
क्या पता कब तेरी खुद्दारी पे हमला हो जाये
शहर के सारे शरीफों पे नजर रक्खा कर

स्थानीय कवयित्री रंजना राय ने अपने भीतर के उद्‌गार कुछ इस तरह व्यक्त किए–

बोल पूजा के तुमको सुनाती रहूँ
वंदना की तरह तुमको गाती रहूँ

वो मेरी साधना मेरी आराधना
गीत-सा मैं तुम्हें गुनगुनाती रहूँ

कवि सम्मेलन की अध्यक्षता कर रहे वरिष्ठ गीतकार हरिराम द्विवेदी ने अपने अध्यक्षीय काव्य पाठ में कहा -

एक पैगाम लेके आया हूँ
आपके नाम लेके आया हूँ
आरजू है कुबूल कर लीजे
प्यार के जाम लेके आया हूँ

समूचे राजनैतिक परिवेश की विद्रुपताओं को रेखांकित करते हुए प्रसिद्ध गीतकार राजेन्द्र त्रिपाठी ने अपने गीतों पर श्रोताओं से खूब दाद पाई। उन्होंने एक गीत में कहा-

सबने हाथ चिता पर सेके
पासे फेंके हार के
आजादी की दुल्हन बिठा दी
कोठे पर बाजार के

हास्य-व्यंग्य के कवि बुद्धिसेन शर्मा ने चुटीली बातों से हंसाने के पश्चात् कुछ सार्थक दोहों का पाठ किया। उन्होंने कहा-

उससे आसा मत करो,
जो हैं खुद गमगीन।
फसल कभी देती नहीं,
बंजर पड़ी जमीन।।
मरने वाले के लिये,
मृत्युंजय का जाप!
अटल घड़ी है मौत की
नहीं जानते आप?

लोकप्रिय कवयित्री डॉ. कीर्ति काले ने अपनी प्रतिष्ठा के अनुरूप साहित्यिक गीतों की ताकतवर प्रस्तुति से श्रोताओं का मन मोह लिया। श्रोता और-और की आवाजें लगाते रहे और वे लगातार गीतों और नवगीतों का पाठ करती रहीं। उन्होंने लगातार दस गीतों का पाठ किया तथा श्रोताओं की भरपूर सराहना प्राप्त की। अपने एक गीत में उन्होंने

कहा –

बैठे कुछ देर
उसी झील के किनारे
लहरों पर लिख डालें
प्रेम, गीत सारे
जलते संदर्भों पे
चांदनी मलें
चलो हम वहीं चले

प्रसिद्ध हास्यकवि एवं व्यंग्यकार डॉ. कमलेश द्विवेदी ने राजनीति में व्याप्त सत्ता लोलुपता के षडयंत्रों का पर्दाफाश करते हुए कहा–

किसको हिन्दू से मतलब है
किसको मुस्लिम से मतलब
कुर्सी की खातिर ही
इसने अल्ला उसने राम लिखा

जाने–माने ओजस्वी गीतकार भूषण त्यागी ने अपने तेजस्वी तेवर से कवि सम्मेलन को उर्जा प्रदान की। अपनी एक रचना में उन्होंने कहा–

अंधेरा है रोशनी चाहिए
दर्द जो पी सके रागिनी चाहिए
जान दे दे जो हँसके वतन के लिए
हौसले से भरा आदमी चाहिए

कार्यक्रम का सरस संचालन कर रहे प्रसिद्ध गीतकार श्रीकृष्ण तिवारी ने साहित्यिक गीतों से श्रोताओं के हृदय में अपनी अळग अमिट छाप अंकित की। उन्होंने कहा–

साँसे जब तक चलती हैं
आँखे सपने बुनती हैं
तब तक तू हर आँसू को
मुस्कान बनाता चल
जीवन के अभिशापों को
वरदान बनाता चल

एक अन्य गीत में उन्होंने आम आदमी के अहसासों को कुछ इस प्रकार अभिव्यक्त किया–

जब तक ये शीशे का घर है
तब तक ही पत्थर का डर है

कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ गीतकार हरिराम द्विवेदी ने तथा संचालन श्रीकृष्ण तिवारी ने किया। डॉ. राम सुथार सिंह के संयोजन में आयोजित यह कवि सम्मेलन अपनी सफलता और सार्थकता के लिए लम्बे समय तक याद किया जाएगा।[35]

नागोद में कबीर साहित्य परिषद् द्वारा अखिल भारतीय कवि सम्मेलन

संजू श्रीवास्तव

नागोद में कबीर साहित्य परिषद् द्वारा अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें कवियों ने अपने–अपने काव्य पाठ से रस बरसाया।

कार्यक्रम का शुभारंभ कवयित्री इंदू श्रीवास्तव द्वारा प्रस्तुत सरस्वती वंदना से हुआ। हास्य–व्यंग्य के वरष्ठि रचनाकार बृजकिशोर पटेल ने खूब तालियाँ बटोरीं। उन्होंने कहा–

आम को नमस्कार और नमस्कार बेर को
ईश्वरों के देश में नमस्कार अंधेर को

डॉ. रचना तिवारी ने सुधी श्रोताओं को रस सिक्त कर दिया। उन्होंने कहा–

तेरी यादों में आँख नम किये बैठी हूँ
झूठे वादों का मलाल लिए बैठी हूँ
अब की होली में आके देख पिछली होली से
मैं तेरे नाम का गुलाल लिये बैठी हूँ

हास्य–व्यंग्य के रचनाकार विनोद सोनी ने हास्य–व्यंग्य की रचनाओं से श्रोताओं को हँसने के लिये विवश कर दिया। एक व्यंग्य रचना में उनका तेवर कुछ इस प्रकार था –

कोई बेरोजगार नौजवान किसी जहर से नहीं मरता
उसकी बेरोजगारी खुद एक जहर है
एक जहर पर कोई दूजा जहर असर नहीं करता

इंदू श्रीवास्तव ने मेहनतकश मजदूरों की वकालत करते हुए उनको सम्मान देने की बात कुछ इस तरह कही –

जो खेत और खदानों में काम करते हैं
जो सारी उम्र ही मेहनत के नाम करते हैं
जो जीते जागते भगवान हैं इस धरती के
हम सुबह–शाम उन्हीं को सलाम करते हैं

ओजस्वी कवि व संयोजक आजाद वतन वर्मा ने श्रोताओं के मन को जोश व उमंग से भर दिया–

माँ का आंचल सूख रहा है
धीरज उसका टूट रहा है
कैसै है वह धरतीनंदन
धरती को ही भूल रहा है

संचालन कर रहे हास्य–व्यंग्य के रचनाकार कमलाकर 'स्नेही' ने अपने खास अंदाज में कहा–

डांडी यात्रा में डंडा, आजादी है
मुर्गी खुद खा गई अंडा, आजादी है
हाथ के नीचे हथकंडा, आजादी है
देश चला रहे मुस्टण्डा, आजादी है

कमलेश 'राजहंस' की रचनाओं ने श्रोताओं को सोचने के लिये विवश किया। उन्होंने कहा–

दुश्मन की गोली खाने को
जो सरहद पर खड़ा हुआ है
वो किसान का बेटा है जो
आंसू पीकर बड़ा हुआ है

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि नगर पंचायत अध्यक्ष मो. हामिद एवं अतिथि पंचायत सतना के सदस्य गेंदलाल सिंह थे। अध्यक्षा समाजसेवी सुरेन्द्र सिंह गहरवार ने की। कार्यक्रम प्रांगण में नागोद के अलावा दूर–दूर से आये हुए श्रोताओं ने कवि सम्मेलन का आनंद लिया।[36]

दिल्ली में दिगम्बर जैन मंदिर, गौतमपुरी शाहदरा में स्थानीय जैन समाज द्वारा कवि सम्मेलन

दिल्ली में दिगम्बर जैन मंदिर गौतमपुरी, शाहदरा में स्थानीय जैन समाज द्वारा कवि

सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें अनेक ख्यातनाम कवियों ने काव्य पाठ किया।

हास्य कवि शरीफ 'भारती' ने अपने तीखे व्यंग्य से श्रोताओं की सराहना प्राप्त की। उन्होंने कहा –

एक गुण्डे ने गुण्डाई से
लिया सन्यास
नेता और पुलिस वाले
दौड़ आए पास
कहने लगे–
ऐसा क्यों करते हो भाई?
अगर आप लेंगे सन्यास
तो क्या हम खाएंगे घास?

ओजस्वी कवि कुलदीप 'ललकार' ने दमदार अंदाज में –

अमिट छाप ना छोड़ सके जो
क्या वो कोई कहानी है?
फौलाद रगों में बहता हो
उसका ही नाम जवानी है

कवयित्रि शालिनी 'सरगम' ने कहा –

गा रही धड़कन सुरीली धुन
कर रही है गीत कोई बुन

डॉ. कीर्ति काले ने जैन दर्शन पर एक सार्थक गीत का पाठ करते हुए कहा–

टूटी नैया तेज है धार
मुश्किल में है ये संसार
हरने सारे जग की पीर
फिर आ जाओ महावीर

बाद में उन्होंने श्रोताओं के आग्रह पर मौसम मतवाला शीर्षक से गीत का पाठ किया जिसे श्रोताओं ने तालिया बजाते हुए सुना। ओजस्वी कवि प्रदीप 'अंगारा' ने कुछ इस तरह हुंकार भरा–

अँगारे हमारे दिल में हैं
हमारे हौंसले का
इम्तिहान न लेना
हम खुद जलकर वतन को
रोशन करने की हिम्मत रखते हैं

हास्य कवि अरुण जैमिनी ने राजनीति में सफल होने के लिए रीढ़विहीन आसन का जिक्र करते हुए कहा –

अपने दोनों हाथ जोड़िए
सामने वाले के आचरण को
इग्नोर करते हुए
उसके चरणों तक मोड़िए
आपके घुटने टिकते हो तो
टिक जाने दीजिए
स्वाभिमान बिकल है तो
बिक जाने दीजिए

कवि सम्मेलन में इनके अतिरिक्त विनीत चौहान, नाथूराम 'देहाती', गोपीनाथ, चर्चित, कृष्णकान्त माथुर ने भी काव्य पाठ किया। सरस्वती वन्दना डॉ. कीर्ति काले ने की तथा महावीर वन्दना शालिनी 'सरगम' ने की। कार्यक्रम का संचालन कुलदीप ललकार ने किया।[37]

इंडियन ऑयल की स्वर्ण जयंती के उपलक्ष्य में गुजरात रिफाइरी द्वारा आयोजित अखिल भारतीय कवि सम्मेलन

इंडियन ऑयल की स्वर्ण जयंती के उपलक्ष्य में गुजरात रिफाइनरी द्वारा आयोजित अखिल भारतीय कवि सम्मेलन बहुत सफल साबित हुआ। कवि सम्मेलन का उद्घाटन गुजरात रिफाइनरी के कार्यकारी निदेशक ए. एस. बासु ने किया। बासु ने उद्घाटन भाषण में कहा, कि जहाँ एक ओर कवियों ने अपनी रचनाधर्मिता के माध्यम से राष्ट्रीय एकता को मजबूती दी है वहीं हिंदी का भी काफी प्रचार–प्रसार किया है। साहित्य समज का दर्पण होता है। कवि जैसा देखता है, वैसा लिखता है और जहाँ विसंगति देखता है उसे सुधारने की बात भी करता है।

प्रसिद्ध कवयित्री उर्मिला 'उर्मि' द्वारा प्रस्तुत की गई सरस्वती वन्दना के बाद कवि सम्मेलन का प्रारंभ करते हुए संचालक डॉ. माणिक मृगेश ने इंडियन ऑयल की महत्ता को उजागर करते हुए कहा –

नवरत्नों में श्रेष्ठतम
लिया आपने देख
इंडियन ऑयल के बिना
पहिया हिले न एक

हास्य–व्यंग्य के प्रसिद्ध कवि गुरु सक्सेना ने पढ़ा –

एक अधेड़ महिला ने
बस में सफर करते हुए
अपने सामने एक
खूबसूरत नौजवान को देखकर
पर्स से निकालकर
फटाफट ओठों पर
लिपिस्टिक लगाई
हम समझ गए बसंत ऋतु आई

घनश्याम अग्रवाल ने सरकारी कामकाज में विलम्ब पर कटाक्ष करते हुए कहा –

विधवा पंशन के लिए
अर्जी देते हुए
एक सुहागिन ने कहा–
सही वक्त पर योजना का लाभ उठाउंगी
क्योंकि जब तक पैंशन पास होगी
मुझे विश्वास है कि
मैं विधवा हो जाऊँगी

कवि सम्मेलन को उत्कर्ष पर पहुँचाते हुए हास्य–व्यंग्य के चितेरे कवि सुरेन्द्र दुबे ने श्रोताओं की मुस्कान को अट्टहास तक पहुँचाया उनकी रचनाओं को श्रोताओं ने खूब ठहाकों और तालियों की गड़गड़ाहट से नवाजा। अपने पचास मिनट के काव्य पाठ में

वे सुनाते रहे और श्रोता ठहाके लगाते रहे। 'कन्फ्यूजन' शीर्षक से प्रस्तुत एक व्यंग्य रचना में उन्होंने कहा –

माँ, पत्नी और पुत्र
जिन तीन पक्षों के लिए
मैं तिल–तिल कर
अपनी जिन्दगी जला रहा हूँ
दरअसल वे तीनों
मुझे बेवकूफ समझते हैं
ये अलग बात है कि
मैं भी इन्हें बेवकूफ ही समझता हूँ

प्रख्यात शायर राहत इंदोरी ने शहरों में बढ़ते प्रदूषण पर कटाक्ष करते हुए गजल पढ़ी–

शहरों में तो बारूदों का मौसम है
गाँव चलो ये अमरूदों का मौसम है

अध्यक्षता कर रहे माणिक वर्मा ने पढ़ा–

चोरियाँ करने को निकली
जब पुलिस की होलियाँ
चोर ने सीटी बजाई
रात के बारह बजे।
बज गए जनता के बारह
धन्य हो बापू तुम्हें
खूब आजादी दिलाई
रात के बारह बजे।

कवि सम्मेलन में प्रदीप चौबे, लक्ष्मीपत्त 'तरुण', सरदार रतन सिंह 'रतन', उर्मिला 'उर्मि' तथा डॉ. सीता सागर ने भी काव्य पाठ किया। कम्युनिटी होल खचाखच श्रोताओं से भरा हुआ था।

वर्षा होने के बावजूद काफी तादात में शहर से भी श्रोतागण आए। प्रारंभ में कवियों का स्वागत शाल ओढ़ाकर महाप्रबंधक एन सेतुरतीनम, महा प्रबंधक एस . के. झा द्वारा

किया गया। कवयित्रियों का स्वागत श्रीमती सेतुरतीनम ने किया।[38]

जयपुर के प्रताप नगर में 'राष्ट्रभाषा हिन्दी' को समर्पित काव्य सम्मेलन

डॉ. जर्नादन शर्मा

जयपुर के प्रताप नगर में 'भेखानी साहित्यिक संस्था' की ओर से काव्य संध्या का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता बिहारी शरण पारीक ने की तथा विशिष्ट अतिथि अजीज अय्युबी थे। सरस्वती वन्दना बनज कुमार 'बनज' ने की। काव्य संध्या का प्रथम दौर राष्ट्रभाषा हिन्दी को समर्पित रहा। हिन्दी भाषा को नमन करते हुए कवियों ने अपनी कविताओं का सस्वर पाठ किया–

हिन्दी गजलकार प्रेम पहाड़पुरी ने कहा –

भारत की आन–बान और शान है हिन्दी
लाखों करोड़ों हृदयों का अरमान है हिन्दी
भारत है अगर जिस्म उसकी जान है हिन्दी
सच पूछो तो इस देश की पहचान है हिन्दी।

श्रीमती विमला शर्मा 'वीनू' का अदाज–ए–बयां इस प्रकार था–

हिन्दी भाषा मौन है,
भर नयन में नीर।
अंग्रेजी अब छा गयी,
किसे सुनाये पीर?

कवि बनवारी सोनी ने कहा –

जीवन दर्शन की परिभाषा
सबसे कोलम हिन्दी भाषा
इसका प्रयोग है बहुत सरल
आओ इसका श्रृंगार करें
सब भाषाएँ माणक मोती
लेकिन ये असली हीरा है
इसके अन्तर में राम–कृष्ण
इकतरा बजाती मीरा है,

जाने–माने कवि नंदलाल सचदेव ने हिन्दी साहित्य की समृद्ध परम्परा को कुछ इस

प्रकार रेखांकित किया–

SMT. HANSA MEHTA LIBRARY • The M. S. University of Baroda

जय हिन्दी जय – जय हिन्दी
खुसरो, कबीर, तुलसी, सूरा
रसखान, बिहारी अरु मीरा
मतिरांम, जायसी ओ भूषण
है काव्यलोक की कालिन्दी
जय हिन्दी जय जय हिन्दी

किशोर पारीक ने राष्ट्रभाषा के साथ हो रही नाइंसाफी को व्यक्त करते हुए कहा–

अपनी हिन्दी कुछ लोगों को
क्यों लगती बेगानी–सी
हिन्द देश में हिन्दी दासी
अंग्रेजी पटरानी–सी

गोय कुमार मिश्र ने कहा –

माथे की बिन्दी जो हिन्दी
आज बनी है वो दासी
आज आंग्ल बनी बैठी है
भारत भाग्यविधाता–सी

गीतकार बनज कुमार 'बनज' ने कहा –

तेरे पास रखा क्या ऐसा
बार–बार जिसको तोले
खाली गठरी की गाँठों को
बार–बार तू क्यूँ खोले ?

कवि महावीर सोनी ने देशभक्ति से ओत–प्रोत कविता का पाठ करते हुए कहा–

वन्दे मातरम्
वन्दे मातरम्
वन्दे मातरम् गाये जा
मातृभूमि के चरणों में
अपना शीश झुकाये जा

कवि रामानन्द शर्मा ने कहा –

मन मेरा भटक गया है
जाने किस झमेले में
भटकन ने जब गति पकड़ी तो
आया जग के मेले में

प्रसिद्ध शायर अजीज 'अय्यूबी' ने राष्ट्रभाषा की महिमा का बखान करते हुए कहा–

हम सबकी जुबान है हिन्दी
सारे भारत की शान है हिन्दी
गम नहीं धूप हो बारिश हो
हर जगह सायेबान है हिन्दी
अब तो हिन्दी पढ़ा रहे सब
हिन्दू–मुस्लिम की जान है हिन्दी
तेरी अजमत वो ही समझता है
जिसको भी तेरा ज्ञान है हिन्दी
हर किसी को अजीज होती है
कितनी अच्छी जुबान है हिन्दी

उन्होंने अन्य रचना का पाठ करते हुए कहा –

कहाँ मिलता है अब कोई किसी से
मोहब्बत से, वफा से, दोस्ती से
बनाना हो बना दीजिए खुदारा
मिटाना हो तो मिटा दीजिए खुशी से

गोष्ठी में इनके अतिरिक्त वैद्य भगवान सहाय, शक्ति चतुर्वेदी, बिहारी शरण पारीक, रमेश पांचाल आदि कवियों ने भी काव्य रस की गंगा बहाई। अंत में श्रीमती विमला शर्मा 'विनू' ने आभार प्रकट किया।

संदर्भ सूचि

1 आनन्द दायक पारिवारिक पत्रिका – कवि सम्मेलन समाचार, महामूर्ख सम्मेलन विशेषांक, 15 मार्च, 2009, संपादक एवं प्रकाशक – सुरेन्द्र दुबे, जयपुर पृ 4, 5

2. आनन्द दायक पारिवारिक पत्रिका – कवि सम्मेलन समाचार, महामुर्ख सम्मेलन विशेषाक, 15 मार्च, 2009, पृ. 6,7

3. आनन्द दायक पारिवारिक पत्रिका – कवि सम्मेलन समाचार, महामुर्ख सम्मेलन विशेषांक, 15 मार्च, 2009, पृ 8

4. आनन्द दायक पारिवारिक पत्रिका – कवि सम्मेलन समाचार, महामुर्ख सम्मेलन विशेषाक, 15 मार्च, 2010, पृ. 9

5 आनन्द दायक पारिवारिक पत्रिका, कवि सम्मेलन समाचार 15 फरवरी 2010 पृ 6-7

6. कविं सम्मेलन साचार 15 अक्टूबर 2008, पृ. स. 11

7. कवि सम्मेलन समाचार, 15 अक्टूबर 2008, पृ. सं. 27

8. कवि सम्मेलन समाचार, 15 अक्टूबर 2008, पृ. सं. 6

9. कवि सम्मेलन समाचार, 15 अक्टूबर 2008, पृ. सं 12

10. कवि सम्मेलन समाचार, 15 अक्टूबर 2008, पृ. सं. 27

11. कवि सम्मेलन समाचार, 15 अक्टूबर 2008, पृ. सं. 27

12 कवि सम्मेलन समाचार, 15 अक्टूबर 2008, पृ. स 27

13. कवि सम्मेलन समाचार, 15 फरवरी 2010, पृ. सं 8

14. कवि सम्मेलन समाचार, 15 अक्टूबर 2008, पृ. स 9

15. कवि सम्मेलन समाचार, 15 अक्टूबर 2008, पृ. सं 9

16. कवि सम्मेलन समाचार, 15 अक्टूबर 2008, पृ. सं. 18

17 कवि सम्मेलन समाचार, 15 फरवरी 2009, पृ. सं. 6-7

18. कवि सम्मेलन समाचार, 15 फरवरी 2008, पृ. सं. 11

19. कवि सम्मेलन समाचार, 15 फरवरी 2008, पृ. सं. 12

20. कवि सम्मेलन समाचार, 15 फरवरी 2008, पृ. सं 13

21. कवि सम्मेलन समाचार, 15 फरवरी 2008, पृ. सं. 22

22. कवि सम्मेलन समाचार, 15 फरवरी 2008, पृ. सं. 23

23. कवि सम्मेलन समाचार, 15 फरवरी 2008, पृ. सं. 26

24. कवि सम्मेलन समाचार 15 फरवरी 2008 पृ. 26

25. कवि सम्मेलन समाचार 15 फरवरी 2008 पृ. 27

26. कवि सम्मेलन समाचार 15 फरवरी 2008 पृ. 29

27. कवि सम्मेलन समाचार, 15 नवम्बर 2009, पृ. सं. 15

28. कवि सम्मेलन समाचार 15 अप्रेल 2010 पृ. सं. 11

29. कवि सम्मेलन समाचार 15 जनवरी 2010 पृ. सं. 7

30. कवि सम्मेलन समाचार 15 मई 2009, पृ.सं. 9

31. कवि सम्मेलन समाचार 15 मई 2009, पृ. सं. 10
32 कवि सम्मेलन समाचार 15 मई 2009 पृ स 12
33 कवि सम्मेलन समाचार 15 मई 2009 पृ स 27
34 कवि सम्मेलन समाचार 15 दिसम्बर 2009, पृ. सं 6
35 कवि सम्मेलन समाचार 15 दिसम्बर 2009, पृ. स. 7
36. कवि सम्मेलन समाचार 15 दिसम्बर 2009, पृ. सं 8
37 कवि सम्मेलन समाचार 15 दिसम्बर 2009, पृ. सं. 8
38 कवि सम्मेलन समाचार 15 दिसम्बर 2009, पृ सं 9
39 कवि सम्मेलन समाचार 15 दिसम्बर 2009, पृ. स 21